Balan Rajasthan
Vol - 3

860.2
·15

459.33

1R
4

राजस्थानी वार्ता भाग ३

UNMARKED

23124

Accession No. 3928
Catalogue No.......
Date 20-11-34
Price १४-६-०

डिंगळ वीर-गीत संग्रह

Dingal Veer Geet Sangrah

2
4

A. ३२॥७

प्रतापी चक्रवत विद्या निधान राजा भोज
राज करै छै अर प्रजा नै पालै छै
तीयै समै उज्जैणी रै कनारै घन ध्यान
करि मनोहर एक ग्राम छै तेथ ब्राह्म
ण एक बहुत लोभी छै अरु अत्य
न्त लोभी कृपण छै तीयै खेती रो आ
रंभ कीयौ तेथ अंतही धांन निपत
हुई ताहरां खेत मधे ऊंचो होड देखि
मालो कीयौ आटरो ब्राह्मण माले चढै
ताहरां अति ही उदार चित होइ फेर
माला थी उतरै ताहरां कृपण रो
कृपण ताहरां ब्राह्मण आश्चर्य मांण
राजा भोज तेथ उतरीयौ ताहरां मो
भण राजा भोज नुं जाय आशीर्वाद
दीयौ। म्हाराजा म्हारै खेत्र में मालो
छै तीयै ऊपर चढीयां चित उदार
होइ जिको जिकूं मांगे सु देऊं
पछै माले सुं उतरीयां जिसडै रो
तिसडौ साम्हो दीयै रौ पाछौ तावौ
होय। इसी आश्चर्य री बात सांभल
राजा ओथ जाय मालो दीठो देख
डो चारण माले चाढीयौ तीयै चो
नुं दैण नुं दीनौं हथीयार बीजां
गौ ताहरां कपडा उतारण ला
गौ मालै सुं उतरीयौ ताहरां
कह्यौ मैं कासूं कीयौ म्हारौ घोडो
केथ इसी बात देख राजा माले

चांदीयौ ज्युं आतिही उदार हुयौ कहीयौ संसार रौ दुख दारिद्र दूर करूं। एतौ कहि दसलाख दान देई उतरीयौ अर विचारीयौ भूम रौ कारण छै किना वस्त रौ गुण छै तम पछै राजा ब्राह्मणां नुं बहुत द्रव्य दे सतो खेत्र मोलो लीयौ अर बेलदार बुलाया अर मालो दे खाची खुदायौ ताहरां उ उठायी चंद्र कांत मणी सिंघासण बत्तीस पूतलीयां करि सहत नीसरीयौ सु बत्तीस हाथ लांबो अर आठ हाथ पहलो अर ऊंचौ। पण कोई भी खिसै नहीं। ताहरां प्रधान कहीयौ महाराज म भारणीयौं जाय छै जु इयौ सिंघासण कुणौं रौ छै देव निर्मित दीसै छै अर महा प्रभाव छै इयै नु बाली दीजै इयै रौ अधिष्ठाता देवता छै सु सांतीक कीयां बल दीयां प्रसन होसी ताहरां सिंहासण हलस्यो ताहरां राजा कु ख्याल हुई नै होम पाठ करायौ हाथीयां जोतीयां सिंहासण चालतौ न हुतौ सो बलदे जोतीयै हाकीयौ सिंघासण धारा नगरी ओवणी यौ सिंघासण पर साल कराय नै तेथ सिंघासण बनाय राखीयौ तठा पछै ब्राह्मण बो लाय महूरत जोवायौ बारहे तीरथां रौ पांणी मंगायौ अठोतर सै ओखदी मंगाई

प्रतापी चवदह विद्या निधान राजा भोज
राज करै छै अर प्रजा नै पालै छै
तीयै समै उजैणी रै कनारै चन च्याम
करि मनोहर एक ग्राम छै तेथ ब्राह्म
ण एक बहुत लोभी छै अरु अत्य
न्त लोभी कृपणछै तीयै खेती रौ आ
रंभ कीयौ तेथ अंतपही च्यांन निपत
हुई ताहरां खेत मदां ऊंची मौड दोखि
मालो कीयौ आहरां ब्राह्मण माळे चढै
ताहरां अति ही उदार चित होइ फेर
माला थी उतरै ताहरां कृपण रौ
कृपण ताहरां ब्राह्मण आश्चर्य आंण
राजा भोज तेथ उतरीयौ ताहरां भो
भण राजा भोज नुं जाय आसीरवाद
दीयो। महाराजा म्हारै खेत्र मैं मालो
छै तीयै ऊपर चढीयां चित उदार
होइ जिको जिकूं मांगे मुं देकं
पछै माले सुं उतरीयां जिसडै रौ
तिसडौं साम्हो दीयै रौ पाछौ तावो
होय। इसी आश्चर्य री बात सांभल
राजा ओथ जाय मालो दीठो देख
एक पालखांन मालै चाढीयौ तीयै घो
डो चारण नुं दीनौं हथीयार बीजां
नुं दैण लागौ कपडा उतारण ला
गौ ताहरां मालेसुं उतरीयौ ताहरां
कह्यौ मैं कांयं कीयौ म्हारौ घोडो
केथ इसी बात देख राजा मालें

चढीयौ न्हुं आतिदी उदार हूयौ कहीयौ
सेलार रौ दुख दारिद्र दूर करूं। एतो
कहि पसलारव दान देहि उतरीयौ अरु
विचारीयौ भूम रौ कारण छै किना वस्त
रौ गुण छै तद पछै राजा ब्राह्मण
नुं बहुत द्रव्य दे सतो खेत्र मोलो
लीयौ अरु बेलदार बुलाया अर मालो हे
ठाची खुदायौ ताहरां उ उठाची चंद
कांत मणी सिंघासण बतीस पूतलीयां
करि सहत नीसरीयौ सु बतीस हाथ लां
बो अरु आठ हाथ पहलो अरु ऊंचौ।
पण हौड भी खिसै नहीं। ताहरां
प्रधान कहीयौ म्हाराज म जाणीयौं जाय
छै जु इयै सिंघासण कुनौं रौ
छै देव निर्मित दीसै छै अरु महा
प्रभाव छै इयै नुं बालि दीजै इयै
रौ आधिष्ठाता देवता छै सु संतोष
कीयां बल दीयां प्रसन होसी ताहरां
सिंहासण चलस्यै ताहरां राजा जु
ख्याल हुइ नै टोम याठ करायौ हाथीयां
जोतीयां सिंहासण चालतौ न हुतौ
सो बलदे जोतीये हालीयौ सिंघासण
धारा नगरी ओवणीयौ सिंघासण पर
साल कराय नै तेप सिंघासण बना
य राखीयौ तद पछै ब्राह्मण बो
लाय महूरत जोवायौ बारहे तीरथां रौ
पांणी मंगायौ अठोतर सौ ओखदी मंगाई

दई दोब हलद चंदन गोरो चंदन सर्
स्युं इत्यादिक मंगलीक वात्त मंगाई
नालेर सदाफल बिजोरा अमृत फल
इत्यादिक अनेक फल मगांया। छत्र
चामर ६ खड्‌ग इत्यादिक राज चिह्न
मंगवाय। सोभागवती मंगल कारणी
स्त्रीयां रा वृंद आय प्राप्त हूवै ६ इमै
प्रकार राजा नुं अभिषेक कराय व्याघ्र
चर्म ऊपर सप्तदी पावती पृथवी लिख
आगै धरी प्रधांन मुहतां आपरै पर
वार सहित राजा सुं मूहरते शुभ
लगने राजा आय सिंहासण ऊपर
बैसणा बुं हूवौ इतरै देवतां रा
प्रभाव सेती प्रथम पूतली मनुष्य
बोली कर बोली राजा इमै सिंघा
सण ६ धंणी सिरखो उदार चित होइ
तौ सो इणा सिंघासण पग धरै
और सामान्य राजा इमै सिंघासण
योग्य न छै। एते सुनत मात्र राजा
मुहतां हुं उचीत मात्र लक्ष देवुं छु
तो काहि पुतली बीजो फिरा मो
सारखो उदार कोई और छै किना
कोई और हूवौ। बहुडी पुतली बोली
इसडी उदारी वात आपरौ मुख कहै
मो सारखो बीजो उदार चित कुण
हूवौ तौ उबै सारखो निदीनीकरी बी
पुरुष कुण हुबौ। जो आपरी बडाई आपरौ मुख

॥दूहा॥ अपराँ गुण आप मुख कहत। जहां
तहां हलको होय। ज्युं आप गहै त कुच
आपराँ जुवती मुख न कोय॥१॥ और जो
गुण पर निकैरै तो हि वडाई थाय ज्युं औरै
कुच गहत ही। हियडे हरख न माय।
इसडा वचन पूतली रा सांभल लाजकर
व्याप्त थको राजा बोलीयौ। है कल्याण
किणुं तौ औ सिंघासण तीयै रो किसुं
उदार तहरां पूतली बोली राजा सांभल
प्रथम तौ इयै सिंघासण री उत्पत्ति भा
गवत महापुराण पंचम स्कंध प्रमाण प्रभा
वे छै। जीयै रौ इसडो। अंब आदिदेव
रौ पुत्र अवंती कुमार तीयै अवंती
नाम नगरी रची छै ए आदि नगरी
छै जीयै नगरी रै विषै धर्म अर्थ
मोक्ष काम मिलै छै अर पुरुषार्थ
त्रयमई प्रजा बसै छै। लोक गंभीर
छै विद्वान्स चलै छै उत्तम जाति
छै दान गुण सहज छै हाथी [illegible]
ख संपुष्ट छै अर दास दासी रै [illegible]
अक्रोध छै कलावान छै पंडित अवि
रोधी छै.. पर स्त्री विरक्त छै। उच्च
पद रा वांछक छै बहु मोला वस्त्र
धान छै जीयां रै मुक्ताफल रत्न सु
वर्ण कर सोभायमान छै पुरुष स्त्री
भलै राज करि निसंक थका विलसै छै
चोर चुगल रौ भय न छै। कूड कपट

BITS PILANI

कठै कोई नहीं जेय कोई गुनहगार न होय
जे नर नगरी मैं दंड नहीं छै जेय
बंध वेराणीयौ रौ पूरा केसां सुं छै।
बीजो बंध हाथीयां रै बग बेडे छै।
जेय वाद तर्क रौ छै। बीजो वाद केय
नहीं जेय दृष्ट मुष्ट चबुक रै छै।
बीजी हौड नहीं। तीयौ नगर भर्तहिर राजा
राज करै छै पहले पवा केई राजा
हुवौ छै तीयै कारण राजवी रत्न नगर
भा क्रहीजै छै। इलन्द्र दुरय कारि दीन
री दया छै अर धन रौ मद जीयां नुं
आवै छै परउपगारी तांई चित छै अर
जिके मांगीया हरख नुं पावै छै अरु
योवन रै उदै रै समय जिका थिर चित
छै। अंक महा व्याघ्र री चिंता विषै
जिका धीरजवंत छै। जिके धरती रा
तंभ छै तीयां रै माथै धरती रौ
भार छै। इसडा पुरुष रुपीया रतन
छै राजावी सभा माहे बौ छै। तीयै
राजावो लहुडो भाई विक्रमादित्य सु
राज करौ छै एक दिन रै समै दुरंहीर
अपमान पाय नीसर्र गयौ वांसै तीयै
राजा रै अनंग नाम पाटराणी ~~हुवी~~
हुई सु भारण हेती बलभ हुती तीयै री
नगरी महा माहेश एक ब्राह्मण आतेही
दरिद्री विपुल पकौ भुवनेश्वरी री शुश्रुष
करतां २ तीयै ऊपर देवी संतुष्ट हुई

अक कलौ भोग मांगौ सु पुं ताहरां
बांभरा बिचार अमर पणो मांगीयौ ताहरां
देवी एक फल दीयौ अर कही इयै
फल खाइ अजर अमर हुसी / ताहरां बां
भरा फल सिर चोट लीयौ अर घरे आ
य स्नान कर दोपहर रै समै एका
नता बैस फल खावरा नुं हुवौ इतरै
विचारीयौ जु / जाचक अर दारिद्री तीयै
रौ अजर अमर कासुं तीच इसौ फल
राजा नुं दीजै तौ भलोअर राजा सुं दत्र
गुमाडै इतडौ विचार फल राजा नुं
दीयौ / राजा मनमैं विचारीयौ जु हुं
अजर अमर हुईस अर रांणी बुढी
हुईस तौ विषाद हुसी तीयै कारण
फल अनेग सेना नुं दीयौ अर अ
नेग सेना रै वल्लभांरा सुं प्रीती
हुती सु फल उवै नुं दीयौ अर उवै
रा गुरा ढक्या अर वाहिलवांरा वे
स्या सुं रत हुतौ सु फल वेस्या नुं
दीयौ / वेस्या विचारीयौ जु हुं वेस्या
नीच करम री करवा हारी घणां दिन
जीवसुं तौ घणां पाप करीस तीयै
कारण फल राजा नुं दीयौ राजा फल
ओलखीयौ अर विचारीयौ जु रांणी नै
म्हारै सुं वल्लभ कुंरा छै जीयै नुं
फल दीयौ तौ रांणी भली नहीं छै
पणा इयै वात रौ ताग लेणौ भलो

नहीं तालवां पिंगल रांणी करी अर अनंग सेना मनत्तों उतार दीवी अलै दूहौ कह्यौ ॥ यार्चित या निशा तत। इण ऊपर ही मैं मैं आंरा सुलखणी जीमै रत्तों म नसो फिर रती औरं सुं ओ रत्ते वि स्या नह। वेश्या रतिराज मुद्र ध्यदिगं तो देख धिग वेश्या रांणी वगरा धिग धिग काम विशेष ॥२॥ २ अठा आगै राजा भरथरी रांणी पिंगला राज करतौ थकौ एक समीयै सिकार गयौ हैतो अरु जंगल माहें एक स्त्री पुरु ष नुं दाग देवती दीठी अर आपरो मांस वाढ वाढ चिता मांहे पुरुष री होमती देख नै राजा पुछीयौ तूं कुरा छै औ कासूं करै छै। उवै कह्यौ म्हे ब्राह्मण जात छां मोनुं म्हारौ भरतार पीहर लेजावतो हुंतो पण मार ग पड़ीयौ उ डसीयौ भरतार मूवो देख मोनुं सत चढीयौ बीजो मावास को ई नहीं जु मोनुं सती करै अर हुं इणै नुं दाग न देऊं तो अर अग्न प्रवेस करूं तो जीव नीसर जावै। अर अधबलीया ही रहां तीयै कार आधो अंग होम अर इणै नुं बाल पछै ओंत सांभल आप रांणी पिंगला नुं कही इहुं सत नहीं हवै छे

राजा कह्यौ सत किसौ कहजै। ताहरां कह्यौ सु भरतार री मौत सांभल अथवा देखि तुरत प्राण छोड़ै सु सत कहावै। भरतार मूवै पछै घोड़ी घड़ी जीवै तौ भरतार सुं घेली घराणीं पड़ै। ताहरां सत कांहरौ कहजै। राजा रांणी री बात उण मन में राखी। मनमैं विचारीयौ रांणी री हुं परीक्षा लेईस रांणी विचारीयौ भरतार री मृत्यु बीजी ठौड हुवै तौ खबर मोडी पहुंचै ताहरां भरतार सुं घेली घराणी पड़ैं ताहरां गुरु कन्हां जाय बीनती की की सु म्हारै इसडी वस्तु होइ सु भरतार री मृत्यु री तत्काल खबर पड़ै तौ म्हारौ पतिव्रत रहै ताहरां गुरु प्रसन्न होय एक फूल दीयौ अर कह्यौ सु औ फूल सूकै तौ जाणों भरतार मूवौ। अठै एक दिवस राजा नाहर री सिकार गयौ अर कोस दस री छेटी जाय नै [illegible] मांणस मेल्ह नैं पाघडी दे नैं कह्यौ सु सती हुवै तौ मतां हुवण द्यौ। उवै आंणा पाघडी रांणी नु कह्यौ सु राजा अर नाहर मामलौ हुवौ राजा नाहर मारीयौ अर नाहर राजा मारीयौ निन्है मूवा। रांणी सुणि नै भीतर गई जाइ नै देखै तौ फूल आलो छै विचारीयौ रांजा जीवै छै परा बिना मूवां स्नेह न रहवै॥ गाथा॥ आसी न दई मरणं

नैरा। मूवां न लभए प्रेमो अवसर जो न मरजै तौ लजै स्याम सुंदरो॥१॥
ताहरां पिंगला कह्यौ मोनुं मरसौ। इसौ आंता पिंगला सत मुई। इण मायाम मेल्ह राजा पाछिला वाली जु भली स्त्री सु तूटी जु रांडी न मरै तौ स्नेह जाय अर मरै तौ घर जाय मै विरा विचार मायाम मेल्हीयौ इसौ विचार राजा पहिली ही विरक्त हुवौ। पाछो आ म राजा देखै तौ काहूं पिंगला न हीं ताहरां राजा पाट छोड उर पिंगला रै मसाण पर जोगी हुइ बैठौ पिंगला पिंगला करै इसडै समीपै गोरखना थ राजारै नैडै आवतां पासवाला चक्रा दीया गोरखनाथ री डबी पड भागी। जो रखनाथ डिबी डिबी करतौ उपलीज बैठौ इक दिवस राजा जोगी नुं कही जु तोनुं बीजी डीबी देराईस उठ म जाइ जोगी र ह्यौ तोनुं सौ पदमणि ही जोवाणुं मांगौ सु जै। अर तूं जांणौ पिंगला सु मूवा ही मिलै नहीं जिको जीव ना मिलै सु मूवां ही मिलै तीयै सुं इसौ मन लगाय इसी भांत राजानुं उपदेस दे गोरखनाथ लेगयौ। मादित्य आवै तौ उवै ...

तालां पार सूनौ देख पाटरौ अच्छा ता हुवौ। परधानां दीठौ हुक बिना राजा हुकम काम चालै नहीं। सु परदेसी आ लारा राज बैसाणीयौ सु पेच पोहर राज कीयौ। आधीरात जरै वेताल आ इ वांभरा तुं मारीयौ तारां बीजौ बै साणीयौ सु ही मारीयौ। पछै तीजौ बै साणीयौ सुई मारीयौ इयुं जीकु पार बै सारौ सुई प्रभाते मूवौ लाधौ। आ वात सारै मुल्क माहें सांभली तारां विक्र मादित्य आ वात सांभली जु राजा भर थरी जोग लीयौ अर रहती रांणी पीहर गई अर बीजा राजा उनेरानी लेरा करै छै। तारां विक्रमादित्य छानो आयौ अक प्रधानां नुं पुछीयौ जु राज सूनौ रहै छै तारां कह्यौ जीयै नुं बैसाणां सु ही ~~ग~~ देवता मारै। तीयै कर बैसै नहीं बीजा राजा भाई बेटै नुं बैसावौ नहीं। अर म्हे विक्रमादित्य री वाट जोवां छां जु विक्र मादित्य आवै अर पाट बैठै उवै रौ राज छै अर उवै रै भाई री आज्ञा छै सु विक्रमादित्य नुं राज दीजौ। ता हरां प्रधानें कह्यौ आज मोनुं राज बैसाणौ तांहरा प्रधाने कह्यौ बैसो। ता हरां थिर लगन पाट बैसि अर तजीवन बल बाकरा कराय राखीया तांहरां आप

जागतां अघी देव आधीरात आयौ देखै तौ राजा भली महमानी करी राजा नैडो आवै जु किये पण देरा नुं छोड नहीं तालां ऊपरसुं आवंरा रो मन कीयौ ताहरां पलंग सुं उठ हाथ जोड राजा कुं बोलीयौ तोनुं मैं जीवंरा रौ दान दीयौ पण मोनुं इतरी बली रोज दीजै ताहरां राजा रोज बल दे ताहरां एक दीन आगीयै वैताल नुं पुछीयौ हो शक्ति देव थारी सक्त कितरी छै ताहरां क हौ सरब जगत जाऊं अर सरब जाणुं ताहरां राजा विक्रमादित्य पुछीयौ जु म्हारी आरबल कितरी छै। कह्यौ एक सौ बरस री छै तौ कह्यौ म्युं टी नहीं सून्य पडीयौ और इकोतर सै भला। कामिनांरामै कै भला। का एक घरा का छता ताहरां कह्यौ हमैं ना तो घटै अर ना बढै ताहरां राजा विचारीयौ जु इसै तौ काहे डर। ताहरां प्रभात हुवौ ताहरां तेडाय प्रधान नुं अर कह्यौ हुं विक्रमादित्य छुं अर थे बी जो कोई मत जांणौ। इतरी काहे स हनांरा बतायौ अर कहीयौ देवता रै डर सौं नांव छानो राखीयौ हुतौ। हिवै डर मोनुं भागौ आज बल मत करौ अर च्यार पुरुष खडगधार मुंह आगै रहौ ताहरां फेर राजा। तौ अभिषेक कीन

च्यार पुरुष खडग ले चौकी बैठे अर आधीरात हुई अर आगीयौ आयौ देखै तौ बल नहीं तारां दे वीसाई कह्यौ रे बल क्युं नहीं रे। राजा बोलीयौ कि मैं नित्य बल करे थारै बीवी तौ आपुबलि आधके ... पटै नहीं तौ मोहुं ईसुं खडग सम्बांट। युद्ध कर। इतरौ कहि राजा पांच पुमला सुं खडग संबाहै ऊभौ रह्यौ। ताहरां अग्नी देवता तुष्ट होय बोलीयौ मांग मांग सात्वाधिक हुं तूठौ। ताहरां राजा कह्यौ तूठौ तौ मोसुं मित्राई करै अर तकडं तेथ आय म्हारौ कहीयौ कर बेताल कहीयौ यथास्तु। इतरौ कहि बेताल आपरी ठौड गयौ अर राजा सुखसुं राज करतौ हुवौ। कितरा एक स मीयौ राज करतां हुवा एक समीयै एक जोगी आय आंबो भेट दे मिलीयौ। बीजै लोके कहीयौ एथ ही मुंह आवौ राजा रै आंबो बनावो। जोगीयै रै कहीयो आम्बो बनाबीयौ तीयै मांहे रत नीसरीयौ। ताहरां राजा कहीयौ थारै कारज छै सु कहि। ताहरां कहीयौ म्हारै कारज छै सु एकांत कहिस राजा कहीयौ एकांत आव कहि। तद जोगी कहीयौ हुं गोदावरी तीर मंत्र लाख जु तेथ दुहुं कोसां एक मृतक छै सु आना देज्यौ

राजा कहीयौ आंवण देईस। ताहरां जोगी कह्यौ बीजै तौ कारण न छै वे छत्तीस लखणां छौ तीयै कहूं छुं। जोगी ओरां मौ कदाचित कोई वरजै तातां कहीयौ राजन विलंब रौ काम न छै। इदो ग्या नव मह ऊपर च्यरां स्वारथ आंग अनेक पर उपकार सआदरौ लारवै पाइयै छकै॥१॥

॥गाहा॥ लच्छी आते ही चपला तिराइ ता होय जीवितः चपले। भावोपाणी आते चपलो। तौ उपकार विलंब कुंणाये॥१॥ दिस टलती चाला क्रमह। शेव चरी प्रीयी वाह। चलै पै न चलै सा पुरस। वचन सरवथा दीह॥२॥ वार्ता॥ राजा कहीयौ बहुड संपतिसौं अर सरीरसौं जु कारज हुई हुली स तैयार छुं। जोगी कहीयौ क्रिया सिद्ध पाक्रम तै माहें छै बीजां रौ भरोसो न छै तेण कहीयौ छै।

॥दूहा॥ लंका जोगी कलेवरगो। तिरणौ उदध अपार। वैरी रावण मंजली कुंभकरण जैराह॥१॥ रखौ सहाइ वानरां। तै करि कोवंड साह सकल नीशाचर मारीया। तौ सिध प्राक्रम मांह॥२॥ वार्ता॥ तौ कह्यौ . महाराज हुं मित्र साधूं छुं म्हारै ऊपर साधक हुवौ। ऐसो कहि राजा नुं तेण ले गयौ अर आप करवा नुं लागौ। कोस दोय ऊपर मृतक हुतौ सीसुं की डाल पर

तिकुं जैरा नोंकल्यौ। तेथ राजा मडै लीयां
पच्चीस कथा बेताल री मुंहजी सांभली
प्रभात प्रतक्ष जोगी मुं ~~डूबीयौ~~ डूबौ / वाहरां
वेताल प्रगटीयौ अर कह्यौ राजा औ
जोगी धूर्त छै / तोनुं पुरषोत्तम गांरा
अगन कुंड मतां नाख सोनै रौ पोरसो
करना मतै छै इयै रौ वेताल मतां
करे / राजा कहीयौ समै जोग हुसी सु
करसौ बहुड कहीयौ जोगी पिरा उत्तम
छै। इयै रौ घरा सोनै रौ पोरसो
हुसी इतरौ कहि बेताल आपरी ठौड
गयौ / राजा मडो लेजाइ जोगी नुं दीयौ
जोकी कह्यौ राजा अग्न कुंड नुं नैडो
आंरा चौंक चौ। तारां राजा कह्यौ
स्वामी थे पहली चौंक देखालौ / तीयै
भांत हुं चौंक धुं तारां जोगी चौक
देतां उठाय अग्न मैं नाखीयौ सोनेरौ
पोरस हुवौ पछै बेगारी रै सिर दे
राजा आपरी धरती पोरसो ले आयौ
सु धरती मतां गाडि खरतां आदा मुं
रसा री परखचौ छौ पोरसो। अर राज
करतां करतां एक दिन राजा चौगाना
खेलरा बाहर आयौ हुतौ तेथ बतीस
कुल विद्या धनां रौ पुत्र गुरु सर्वज्ञ
पुत्र आचार्य आयौ देख तीयैं री
परीक्षा जैरा नुं राजा मन मांहि नम
स्कार कीयौ / ताह्वां अचारज आशीर्वाद दीयौ।

राजा कहीयौ स्वामी नमस्कार पहिली कीयां
विनां कीयां तैं आसीरवाद क्युं कीयौ।
ब्राह्मण कह्यौ तुं हां मनमैं नमस्कार कीयौ
ब्राह्मण नुं दीयौ ब्राह्मण पिण बीजी
तीयैं नगरी मैं बीजा ब्राह्मणां नुं वांट
दीवी। राजा खुसी हुवौ अर वही मांह
लिखायौ ॥ दूहा ॥ नमस्कार आसीस की
जाणौ जुगत विसेष। कोडदाम वाजी कीयौ
सो वही लिखायौ लेख॥१॥ बहुडे राजा
चौगांन खेलतां एक दिन एक संन्यासी
सिध्याश्रम नांम महा पंडित आय प्राप्त
हुवौ राजा बोलीयौ नहीं अप्रूठो हुवौ
तारकां राजा नुं उपराठो ऊभौ देखि
दूहौ कहीयौ ॥ दूहौ ॥ कुवौ सिखाई धनुष
री विद्या अद्भुत राज। बांणा चलै सु पा
मडा गुणा जावै दिस पाज ॥२॥ आगै
आय फिर दूहौ कहीयौ॥ राजा ऊपराठौ
हुवौ। चोर पडै नीसांणा। हिय च्यार
फुटै वैरीयां। आंचीरज एहो जांणा॥३॥
तीयां नारी आंख जल वहै। फिर
राजा उपराठो हुवौ। तीसरी तरफ आ
य दूहौ कहै॥ सोरठा ॥ सुख सर
खली आय। लिखमी दुहुं हाथां चपल
कीरत किम रीसाय। महाराज गई दिस
विदस ॥४॥ राजा उपराठौ हुवौ आधौ
आय दूहौ पढीयौ। ताहरां चौथौ दहौ
[illegible] ॥ [illegible] पर [illegible] की मार [illegible]

सिर देट। बुगी प्रकुल राजा नरसिं। महंगो
पिरा जस नेट॥ ५॥ ए-चार दूहा सुणी
नमस्कार कारि राजा कहीयौ स्वामी आधो
राज ल्यौ अथवा। गुंट नुं ज्या च्यार परगना
ल्यौ अथवा मनो वांछीत चाहौ सु
ल्यौ। तारां सिधाश्रम बोलीयौ हे म्हारा
ज म्हारै चाह छै सु महंकाल रै
पासै माता हरसिद्धि रै देहरौ करूं।
राजा कहीयौ देहरौ करौ राजा सिधाश्रम
सन्यासी नुं प्धेर ~~बैसांरम~~ लेजाय सिंघा
सण बैसारीयौ। सिधाश्रम गाथा कही।
॥गाहा॥ होय सिहाय भवानी हर सिधी।सि
ध श्रम आराधा। विजय दीयंतु समाने
संग्रामे विक्रमे धीर॥ दूहौ॥ महंकाली
प्रेयास करौ। सदा तुम्हारौ राज। जिह
वदै त्रिभुवन मैं होय सिद्ध सारे काज।
॥२॥ इतरै एक पाखंडी पिंडत राजा नुं
मिलीयौ राजा नुं काव्य सुणाया। बीजै
दिन राजा सिद्धाश्रम नुं तेड बीजै पिंड
ता नुं तेडि महंकाल रै रे देहरै लेजा
यौ तेण कल्यौ महंकाल री स्तुति करौ।
तारां सिद्धाश्रम कहै॥ सवइयौ॥ पावै सुत
संपदाग देखै नैन आपदा सदा निरोगी
तनमन संतोष अघाने हैं। सुजस विकाशी
अवनासी काल छूटै किनीकी करतूत तीन
लोक मैं वखानै है। अति पारखद आनंदै न
सुरलोक पावै सामान मनुष्य जत पूजा ही

तै जानै है। महंकाल देवहर सिधी अल

खांड तै प्रसन होत महिमा अपार मन

माने है॥ १॥ राजा सांभल खुसी हुवौ।

पाछै पंडत स्तुति करण लागा काव्य क

हीया राजा सिद्धाश्रम हुं पुछीयौ सिद्धा

श्रम कहीयौ महंकाल री स्तुति करै

छै। कहीयौ माता री स्तुति करो छै सिद्धा

श्रम साम्हों दीठौ/ फेर सिद्धाश्रम स्तुति करै

छै॥ सवईयौ॥ कंटपल ती पुल्पावली कंठ

कीयै हर सिद्धि विराजत है। पहरै तै म्

र मुण्ड कपाल की माल महंकाल गा

जत है दिव्य अंबर सोहै इस्वरी ईश्वर

आप दिगंबर बाजत है। शीवा सिव भक्त

सहाय प्रसिद्ध विरद वडे वडे छाजत है।

॥१॥ भगत सहाय करै दुसह दारद

हरै पारै रखवारै रखवारै करै काज

मन भाए हैं। दुसमन दूर करै दुग्गम

सुगम करै दुरत न हरै हैसे आगम

नि गाये हैं हैं। उमया अंबका आई ई

श्वरी आनंदी माई जई जात जीये तै

कृतारथ आए हैं॥२॥ इति स्तुत सुणा

राजा सिद्धाश्रम री प्रसंसा करतौ घरे

गयौ। एक दिन सभा मांहे पंडित गुणी

सर कवीसर सहत राजा बैठौ छै तेष

गुणी जन पंडत कहै छै जेष रूप

जौ सा हौ इमता आय उपाई कहीयै दुहत

आवाद तो लिखमी विरतांत मानि त्यागी

होइ। बुधिवंत सुण कर राजा बोलै अहो लक्ष्मी नाग योग्या तौ म्हारै सुरबास न घोडा हाथी रजपूत च्यारे वरण नर विट गणक वैद्य इत्यादिक ओर अनेक थे सु खाय छै अर म्हे तांबूल आदि भो ग भोगवां छां अर विभौ छै तीयै कर पृथ्वीनी अक्रिण करौ लोकां रौ रिण तोडौ अर ~~लोकां~~ सर्व देस रै लोकां रा दालद तोडौ। अर ओसर करौ ज्युं पर उपकार होइ। पृथ्वी रिण रहि त करी औसर लोक निचिंत वांछत पूरी या चकां राजा विभय बंधन।। दोहा।। यरो पकार करंतडां। जो होय सो होय। चित पडै ग्रह काज की। पिता सत्त न खेडै तोय।। १।। वार्त्ता।। इयां अनेक प्रकार धर्म कर्म करतां वरसों वरस पृथ्वी अखेरा करै छै। इयै समीयै स्वर्ग रै विषै राजा इंद्र सभा जोड बैठौ छै। ब जीरा देवता पुरख वा जबी कवतो देवसिंघासण वैठीयौ राजा इंद्र नुं बोलीयौ थे घणौ वि भव रै छाया मांहे छौ पावणी चारै दान रौ सुख नहीं। बावडी कूवा तलाव प्रसाद ऊधारण रौ सुख नहीं विवाह पुत्रोत्सव रा हरख नहीं औ घोडां री नाना प्रकार री असवारी रौ सुख नहीं तौ थे किसौ गरब करौ। मृत्यु लोक रवीबैं राजा वीर विक्रमादित्य छै

प्रस्थान पुर नुं राजा शालि वाहन आय
लागौ छै प्रस्थान लीजसी। क्षा वेगा ऊपर
करौ ताहरां राजा चौतुरंगणी सेना कर
प्रस्थान पुर हालीयौ तेथ राजा सालीवाह
ण वार २८ विक्रमराम आगौ भागौ थौ
अक वरस वरस रसाल देतौ / सो साम्हो
हुवौ मता संग्राम हुवौ तीयै संग्राम मां
हे राजा विक्रमादित्य जड नै साम्हो पगे
लड नै काम आयौ। बैताल पिशाच स
मरीया प्रतक्ष न हूवो। तेथ कहीयौ
छै / दीहाडै कारज सरै / निफल न जाइ
उपाय / दिन उपराठो होय तब किये न
लागै दाव॥१॥ सोना रौ पोरसो हुतो
सु उडगयौ राजा रै पुत्र कोनहीं पाट
रांणी नुं गर्भ हेतो ताहरां सर्व प्रजा
नैं कहीयौ राणीजी सती न हुवौ और
सर्व रांणी मता सती हुवौ / ताहरां
पाटराणी मतना लीयौ पुत्र पेट फाड
काढ महतै नुं दीयौ अर पटरांणी
मता सती हुई। तीयै पुत्र रौ नाम
विक्रम सेन थापीयौ अर राजाभि
षेक करायौ / ताहरां उवै संघासण
कोई न बैसै ताहरां एक दिन आका
स वाणी हुई / जु इयै सिंघासण
जोग बीजौ कोई नहीं / सिंघासण
धरती मांहे खणा गाडौ / ताहरां आमे
तीये सिंघासण धरती दिवराय नै ...

तीजै नुं चरणं काल विवीत हुवा चणा
राजा हुइ गया अक वांरा बडा भाग
जुं वांहरै घर सिंघासण आयौ। अक
राजा विक्रमादित्य रै बेटौ विक्रम सैंण
सुती इयै सिंघासण न बैठौ। बीजौ री
किया चलाई। इयै संघासण राजा विक्र
मादित्य सारखो महा उदार होय सो बैसै
सामान्य पुरुष बैसण न पावै इतरी
वात राजा सुण राजा बोलीयौ किसौ
उदार हुतौ राजा विक्रमादित्य तेथ प्रथम
पूतली बोली कथा कहै छै राजा भोज
सांभलै छै। प्रथम तो राजा रै स्वभाव
री उदार पणौ सांभल ज्यौ एक समां
उजैंण नगरी मांहे राजा विक्रमादित्य रा
ज करंता इयै संघासण माथै बैठा
सभा मांहैं एक मुनि दयावरणो आइ
खडो हूवौ मुखसेती मांगै स्युंदी न
ही ताहरां राजा विचारीयौ कु औ
पिंडत छै॥ दूहा॥ देह कहै तौ देह छै
आंट पदारथ पोच। लजा साहस मेरिया
मानि ज्यान पांचमैं सोच॥१॥ इसौ वि
चार कर न मांगै छै ताहरां
मोन छांड मुनि बोलीयौ। दारलजी
वौरे मोह। नांग मोग कहै है। मारगक
जडा परदोघ्र मोणसा मुंहा निकलै॥१॥इति
सुवा राजा दसहजार दीनार दिवाया
अक कहीयौ बोल आचरिज की बात

BITS PILANI

फटत बे मानी बात कहै छै॥दूहा॥ चार
वै कितै नीसरै लोक कहै अस रीत।
निशदिन भ्रमाते दशादिशा॥ कीरत कहै
सनीट॥१॥ इसी सुरा राजा दीनार लाख
एक दीन्हा। ताहरां बुटड मोनी बोली
यौं। दूहा॥ राजा राज सुरवी करै करि
भेला सुलीन। आद मध्य अरु अंत
पुन तीयै विकारण कीन॥१॥ अरु कल्यौ
इयै अर्थ सांभल ज्यौं मोनी कहै छै।
विसाला नाम नगरी तीयै नगरी राजा वेद
राज करै। तीयै वै विजैपाल पुत्र सु
बोहतर कलारो जांणा। अरु बहुसुत नाम
मंत्री तीयै राजा रै भानु दृष्ट ही आ
जै राखै राज्य चिंता न करै जांहरा
सभा मांहे बैसै तितनी वेल भानुमती
नुं पासे ले बैसै। अरु गुरप साम्हो
देखै करै एक दिन प्रधानें कहीयौ
राजानुं एक वीनती करांच्यां जु रांणी
जी नुं सभा मांहे आंणौ छौ सु
जोग्य न छै। ताहरां राजा कहीयौ
कांई कीजै इयै रांणी नुं न देखूं
तौ उन्माद हुइ जाय ताहरां परधानें
यौं रांणीरी सूरत कराय दुरस कर
चित्राइ आपरै पास राखौ आप देख
करौ और कोई देखण न पावै म्हा
अै वचन वेस्वारी छै फिरण कह्यौ जोईजै
राजा चितारौ बोलाइ रांणी री सूरत दे

सबी कराय पासै राखी। एक दिन सारदा
नंद आयौ ताहरां सारदानंद नुं राजा दि
खाई पुछीयौ आनुमती री ख्वत दुख्त आ
ई छै। पिण डावी आंख पर तिल मोटो
हुंतो सु केम चीतेरो बोलीयो अठे
विद्या वेच बोंभरण नागी तौ न छै कथा
पहलीमा छै। ताहरां राजा बिचारीयौ जु
भलौ न कीयौ जु इयेसें भीतर प्रसंग
कीयौ जाणीजै होणहार हुवै नहीं तौ आंख
रौ तिल जाणण री आसो। इतरो
बिचार प्रधान नुं कह्यौ जु तुं सार
दानंद नुं जाइन मार अर म्हारौ हुक
म मानै छै तौ बिलंब मत करे।
बहुत खुब मंत्री जुहार करि सिर चाढि हुक
म अर सारदानंद नुं ले नै मंत्री
घर आयौ। उनक बिचारीयौ जु इसडै
पंडित नै क्यों मारीये अब हूं राजा
नुं कहीस जु मारीयौ अर सारदा
नंद नुं भुंहरा मांहे छिपाइ राखसुं
तौ बीजौ गुण कहसी जु मारीयौ। इत
रो आंण सारदानंद नुं जीवतो राखीयौ
अर कह्यौ देखो गुण तौ गुणा
ही वैरी होय। जाहरां दीन खोटो
आवै।। दुहा।। सबो गुण आप
रौ बंधन पाय दुखाय। नर जिता
गुना ऊंचो खिचै। ते गुणा ही दुख
पाय।।१।। इसौ बिचार सारदानंद नुं घर

म्हां रावळीयौ अर मन गळां कहीयौ किरा
टी लागीयै सारदानंद मारीयौ सो पछतानो
राजा नुं हुतो ताहरां प्रकास करीसता
टवां किवराएक दिने राजारो कुंवर सिकार
नुं वन मांहे गयौ हुतौ तेष सूवर
देख उनै रै वांसै घोड़ो दीयौ अर वन
खंड लांघी ब्रिषे गयौ आपरौ रजपूत
कोई पहुंतौ नहीं तिस लागी। तेष देखै
तौ सघन वृक्षां री छाह छै एक बडो
तलाब छै एक बड छै तीयै नीचै
जाय ऊभौ रह्यौ घोडी थी उतर
पांरारी पीयौ घोडा नु पांणी पावै
इतरै एक बाघ आवतौ देख्यौ ताहरां
घोड़ो छोड दीयौ आप बड ऊपर
चढीयौ तेष एक वानर रहै। तीयै
कहीयौ डरमती ऊपर आव ताहरां रात
पड़ी विजयपाळ ऊपर गयौ वानर कुंमार
नुं नींदाळवो देख कहीयौ तूं म्हारे
खोळा महा सूइ। वानर रै कहीयै
राजकुमार सूवौ ताहरां बाघ बोलीयौ
रे वानर तूं मनुष्य रो वेसास
मती करे। मनुष्य नुं नाखदे ज्युं
आपां बांट खासां। वानर बोलीयौ
हुं तौ वेसास घाती न होऊं औ म्हारै
वेसास सूतौ छै इयौ नुं कींयां
नाखूं ताहरां बाघ अराबोलीयो रह्यौ।
इतरै कुंमार जागीयौ वानर नुं कहीयौ

ऐ वानर तूं म्हारै खोलै मैं बठ तालरां वानर कूदौ / तालरां बाप कह्यौ अरे राजकुमार रे वानर री बैराल मती कर शास्त्र मैं कह्यौ छै ॥ २८ ॥ सींगालो नख वालणौ भी नदी लाखी जीयैं पांणा इतरा न ट वैसास जै / त्रिय मध्य मध्य दीवांणा ॥ १ ॥ तीमैं कारण तूं वानर नुं नाख ज्युं म्हानो ऊलाद होइ। तूं नवभय लोम तालरां बाप वैं कहीयै कुंवर वानर नुं नाख दीयौ / वानर पड तौ हक्ष साखा मांहे अलूझ रह्यौ। तालरां राजकुमार सरमायौ अर डरण लागौ तालरां वानर कह्यौ राजकुमार तूं डरे मतां / तैं कीयौस रे भाखौ हूं तौ तोनुं क्युंहीज न कहूं / इतरै प्रात हुवौ / एक दिस नगारौ बाजीयौ बाप तौ आपरी हौइ गयौ / वानर कहीयौ विश्रेमेरा सबद कर कहतौ उ ब्र हुं ला जरीयौ कह्यौ कुंवर नी पे प्यरे पधारौ / इतौ सबद सुणी पौ ते कर उन्माद हुवौ। विश्रे मेरा मैरा कहतौ फिरै छै / ओप चोडो कुंवर विना आयौ तालरां राजा बेटा रै वास्तै दमामो दे अर आप चढीयौ अर वनखंड आयौ / देखै तौ बेटौ गह लो विश्वा मेरो कहतौ फिरै छै / ताहरां राजा कुंवर नुं वहल बैसारणी पधरे

आयौ कुंवर नुं वात पूछै कुंवर विखे
मेरा कहै बीजौ मुंटी कहीयौ नहीं ताहरां
राजा चिंतातुर होय नै बोलीयौ आज
म्हारौ सारदानंद होय तौ किसी चिंता। ता
हरां मंत्री बोलीयौ महाराज नगरी मांहे
पडहौ फेरो महाराज चिंता कीये कारज
न होय। उद्यम करौ॥ दोहा॥ मीन न
उद्यम नाखलो। जिन कीयौ पूरन होय।
लोकां आलस नाखलो। वैरी हलौ न
होय॥ १॥ मंत्री रै कह्या सुं नगरी मां
हे पडहो फेरीयौ जिकौ बाजारै कुंवर नुं
साजौ करै तीयै नुं टका लाख एक
देवै। इतरी वात सुंहतै सारदानंद नुं
कही ताहरां सारदानंद कह्यौ रे राजा
नुं कहि म्हारी बेटी छै सु राजकुमार
नुं साजो करसी। उवै सुं जोवाडौ। सुहतै
राजा नुं कह्यौ ताहरां सुहतौ राजपाल
नुं ले दासखवास ले बहुश्रुत रै घरे
आइ बैठा। तेथ सारदानंद नुं कन्या
री वेष बणाय चिग आडी नाख औ
तांत हुवौ। तीयै पुछीयौ किसुं रे
बरां सारदानंद श्लोक कहै। निश्वास प्रतपना
सर लीजय तैनुं घातै पास सो नही
पहुंचै नरगीयौ॥ २॥ इतरौ बोलै सारदान
बोलीयौ कुंवरजी सांभलौ छौ कुंवर बोलीयौ

मिश्रे मेरा। ताहरां सारदानंद दूहौ कहै ॥दूहा॥
श्वेत वेष श्री रामजी परसण्गे मम तीन्हो न
कीयैं तैं पातक करुँमित्र द्रोह न मिटांन ॥१॥
सारदांन बोलीयौं। सारदांन बोलीयौ कुंवरजी
सांभलौ च्यौ। कुंवर बोलीयौ विश्ले मेरा।
सारदानंद फेर दूहौ कहै॥ दूहौ॥ मित्र
द्रोही चौरको ओर कृतघनी जान ए तीने जावै
नराकै ओलों सात हर भोंरा ॥२॥ सारदानंद
कहीयौ कुंवरजी सांभलौ च्यौ कुंवर दूहौ
कहीयौ ॥दूहा॥ राजा राज कुमार कु जो
चाहत कल्याण। ध्यान दीयैं चूकै धनी देहु
सुपात्र ही दांन ॥४॥ इयैं प्रकार च्यार दूहा
सांभल राजा रौ कुंवर भलो हुवो। ताहरां
उन्माद रोग गयौ। राजकुमार वाघ वानर
री सर्व वृतांत कहीयौ॥ ज्युं राजा बोलीयौ।
॥दूहौ॥ नगर वसैं देखैं न वन। सुणौं
न वात विचित्र। तुं का जाणैं साह कुंवर
वानर वाघ चरित्र॥१॥ ताहरां सीण
पदी कर सारदानंद बोलीयौ॥ दूहा॥ रसना
रसती नित रहै। भगति कीयैं गुरु ता
त। ज्युं भानुमती तिल जाणीयौ ज्युं
नर वानर वात ॥१॥ दूहा बात सांभले राजा
सारदानंद रै पगे लागौ अर कहीयौ
मैं बडौ अपराध कीयौ हुवौ पिता
धन्य बहुश्रुत मेत्री जीयैं मोनुं ब्रह्म
हित्या सुं टालीयौ। अर ब्रह्म जीवायौ
अर म्हारै पुत्र नुं जीवदांन दीयौ। इयैं

आइ बैठौ। अन छाडीयौ दिन ४५ हुवा सेवक आतुर हुवा ताहवां राजा मन मलां विचारीयौ। ब्राह्मण तौ अवस्य आव वाला र है तौ इयैरौ इतनौ दुख जीयां कौरा रहै। इसौ विचार खडग ले मुंड काटण लागौ ताहरां देवता हाथ गहीयौ अर कहीयौ वर मांग इसौ वचण कहीयौ ताहरां राजा कहै मोनुं बोल द्यौ पछै हुं मांगीस ताहरां देवता बोलीयौ ताहरां देवता नुं पुछीयौ कही यौ इयै ब्राह्मण नुं अण होम कर तां कतरा वरस हुवा प्रसन न हुवा सु किसै कारण ताहरां देवता बोलीयौ पहली तौ नाय नहाय निकलंक हुवौ पछै नदी रौ पांणी मंगाय नहावै ताहरां निकलंक न होय महातम च्यार रौ छै। ताहरां राजा कहीयौ देवता नु मोनुं प्रसन हौ तौ इयै नुं वर द्यौ इयै च वौ कष्ट कीयौ। इयै री मनो कामना पुरौ ज्युं छाडौ दुख मिटै। ताहवां देवता वर दीयौ कह्यौ तथास्तु। इसी भांत राजा वीर विक्रमादित्य पर दुख रौ मा प्राण हार इसै प्रकार देवता सुं वर पाय ब्राह्मण नुं दराय संतोष पाय उजे णी आयौ ताहवां पुतली कहै छै राजा भोज इसड़ौ परदुख रौ भांजणहार हुवै सु इयै सिंघासण पर बैसै। बीजै रौ काम

कोई नहीं / इति सिंघासण बतीसी री बीजी कथा संपूर्ण ॥२॥

बहुड राजा भोज ओर महुरते राज भिषेक करि मेगला चरचा करि सिंघासण बैसण आयौ इतरै तीजी पूतली बोली राजा जे वीर विक्रमादित्य जारखो उदार चित होय तौ इण सिंघासण ऊपर बैसज्यौ राजा भोज कह्यौ वीर विक्रमादित्य किसड़ो एक हुतो / ताहरां ती जी पुतली कथा कहै छै उजैण नगरी राजा वीर विक्रमादित्य राज करै ताहरां विवाह उत्सव करणौ आरंभ कीयौ वाह रां रत्नाकर समुद्र राजा रौ धर्म भाई हुतौ तीयै नु चिठी चावल ब्राह्मण नु देनै मेल्हीयौ कहीयौ राजा रै विवाह छै तीयै ऊपर थानुं तेड़ायां छै विलंब मती करौ री ब्राह्मण स मुद्र तीर जाइ चिठी चावल दे ब्राह्मण नमस्कार करि कहीयौ महाराज नुं म्हारो प्रणाम कहिज्यौ अक म्हारो आवणौ न हुवै अर तुम्हे भली भांत विवाह करज्यौ थांरो नाम बड़ो छै किणही भांत लोपावौ मतौ / अक रत्न ४ मेल्हीया छै रत्न १ भोजन रौ देणहार छै रत्न २ गहणां रौ देणाहार छै रत्न ३ घोड़ां रौ देणहार छै रत्न ४ कपड़ां रौ देणहार छै / सो दात दायजै भांत मोरै ऊपरली चिंता कांई मत

... जात हुवा मे ... बाचै। बड
वानल लै अंगीकारो। कीयो कहै सकल
संसारो। मतमा एकरा मुख तै कैसीसुं
करि कहीजाय बहुतेरी। स्तुति सुणा समुद्र
खुसी हुवो अर कह्यौ राजा वीर विक्रमादित्य
स्वरूप कोई पत्ता बलभ म्हारै छौ॥ दोहा॥
स्नेह न दूर भये मिटै। जो मन साची
प्रीत। चूर हुवौ मध्य अज परण। खीश
कमोदनी रीत।१॥ अबा आयौ बालका ची
की समाचार राजा विक्रमादित्य हुं भांरा री
या अर मुख समाचार हुता ज कह्या राजा
नुं कहीयौ रत्न १ मोनुं दिरायौ छै अक
चिठी मतो पिता लिखी यौ छै तातरां

करौ अर नल एक दखणा रौ ब्राह्मण
नुं दीयौ इतरा समाचार लिखी चिठी दे
ब्राह्मण नुं विदा कीयौ अर कहीयौ औसाक
चूकौ मत। देव दिगपाल विश्विश्वर: कवी
श्वर : ज्ञानवंत: कलावंत : अलखे देवता :
भूमीया क्षेत्रपाल अर छतीस कुली रा
जानवर प्रजा लोक आपणौ तेड ज्यौ
बल विधान पूजा विधान करज्यौ। इतरा
मुख वचन समाचार ब्राह्मण नुं दे
कहिनै विदा कीयौ। ब्राह्मण हालतौ
समुद्र री स्तुति करै छै। जन्म भूमि मर्जा
द न लोपै। कबहुं गलज भूलन छोपै। तै
सौ मनि गंभीर सबम है तैते जास
कीरति द्विज करै। मेघमाला जीयै नुं
आवै। सगाजै

तारां राजा कह्यौ रत्न एक थारै मन मांगै सु लै तारां ब्राह्मण कहीयौ सु घर जाइ बैर बेटा नुं पूछ अर कहीस। तारां राजा कह्यौ च्यारे रत्न लेय लेजाय अर थारै घर माहें विचार अर एक रत्न राखज्यो अर बीजा म्हानुं देज्यो। ब्राह्मण रत्न च्यारे लेजाय स्त्री पुरुष बहू अर आप बेटि रत्न राखणा रौ विचार कीयौ रत्नां रा गुण सांभलीया। तारां बेटै कहीयौ घोडा देणहार रत्न लीयौ नहीं तौ मुंह लेनै नीसर जाईस अर ब्राह्मणी कह्यौ जु ग्रहणा ले देणौ रौ रत्न न लेसै तौ विष खाय मरीस। बेटैरी बहू बोली कपडा पटोला मन वंछित देणौ रौ रत्न न राखसौ तौ कूवै पडि मरीस अरु आप ब्राह्मण मन वंछित भोजन देणहार राखसै। तारां घर रा कलह कलेस रै वास्तै चोर रत्न राजा नुं पूठा ओरा दीया। तद राजा ब्राह्मण नुं पुछीयौ ब्राह्मण घर रा कलेस री वात कही सु सांभली

॥दूहा॥ उद्यम साहस धीर पण। बुध पराक्रम जेथ। एताघौ दीसै नगरै॥ है वसात मो तेथ॥१॥ कहु आवौ राची रहै। अक फिर भावै जोइ। बिजली अरु बादल गति न जाणौं कोय॥२॥ राजा मन मैं कहीयौ म्हारै चोरलो सोनार अरु वच्छतौ

किंसुं ऊगौं। इसौ आरा राजा च्यारे रतन
ब्राह्मण नुं समरपीया ब्राह्मण हरखत होय
घरे ले जायौ उवां च्यारां रा मनोरथ
पूरण हुवा। तीयै कारण राजा वीर
विक्रमा दित्य सारखो उदार चीत होइ सो
इयै सिंघासण ऊपर बैसै। इति सिंघास
ण बत्तीसी री तीजी कथा सम्पूर्ण।।३।।

बहुड और मूहर्त्त राजा भोज बैसण
नुं तैयारी हुवौ तारां चौथी पुतली
मनुष्य वाणी हुइ बोली। अहो राजा
इयै सिंघासण सो बैसै जीयै है
राजा वीर विक्रमादित्य सारखी कृतज्ञता
होइ। तारां भोज बोलीयौ किसी कृतज्ञ
ता हुती तारां चौथी पुतली कथा
कहै छै। उजेणी नगरी राजा राज करै
छै एक ब्राह्मण तीयै नगरी महां रहै।
तीयै रै पुत्र नहीं तारां स्त्री कही
यौ इसडी वय मांहे म्हारी आराधना
करौ तीयै सुं म्हारै पुत्र होइ। पछै
थांहरै तांई बीजी परवाणी तीयै पुत्र
होसी पण म्हारी वय गमायां पछै मोनुं
कासुं। ब्राह्मण बोलीयौ मोनुं तौ भरो
सो नहीं कोई मोनुं द्रव्य खवावै तौ
हुं सरुं। गुरु री सुश्रुषा करुं ही
छुं अरु विद्या मौं मांहे घणी ही
सेष होय।। दुहा।। जौ जीयै नुं लिखीयौ होय
तौ भस पुन्यौ।

तीमै तै क्रितौ कलाव। ना किया ना गुरा गयौ जगदीश्वरी प्रभाव ॥१॥ तौ जगदीश्वरी री आराध करौ तौ थानुं ही जस आवै ब्राह्मण कहीयौ थारै कहीयै पूजा करीस तौ तोनुं जस। स्त्री बोली पूजा तौ करौ ज्युं पुत्र होइ। अर विद्या नै जस आवै। तारां दुवे स्त्री पुरुष प्रधान पूजा करतां करतां तीयै कारण पुराम योग पुत्र हुऔ तीयै रौ नाम देवदत्त थापी यौ तीयै रौ जात कर्म नाम कर्म अन प्राशन चूडा कर्म व्रत बंध नाता विवाह करि द्रव्य खरचीयौ पढाय विद्यावंत कीयौ। एक ही पुत्र हुतौ लाड कोड घणां करि जब मोटो हुवौ श्राद्ध कारज सेबारीयौ तारां ब्राह्मण ब्राह्मणी पुत्र नुं घर द्रव्य लै तीरथ हालीया वांसे देवदत्त मनश्वी थकौ स्वच्छंद रहै। एक दिन होम नुं समध लैण आपही जंगल गयौ हुतौ। तेथ मता वन मांहे का हु थी तिसायौ दिसा भूलौ भूलौ थकी यौ पासवाने रहत राजा वीर विक्रमा दित्य आयौ अक हाथ री सैंण कर पांणी मंगायौ पु पांणी कीथे नहीं देवदत्त राजा नुं ओलखीयौ अक आवलो आलो तोड राजा नुं दीयौ आंवल ४ आप गोड राखीया। कहीयौ महाराज पांणी नैडोहीज छै म्हारै वांसै घोड़ो चलावौ

कोस एक गया इतरै राजा रौ मुख सूकै
लागौ राजा कह्यौ पाणी केथ छै ताहरां
~~बीजौ~~ आंवलो ~~ले~~ दीयौ अरु आगै
हुइ दौडीयौ । ताहां कोस १ गया ताहरां रा
जा ~~कह्यौ~~ रे ब्राह्मण। म्हारा प्राण मुख
हुवै छै तूं मनें केथ लेजाइ छै। ताहरां
ब्राह्मण बोलीयौ म्हाराज ~~पैलै~~ कं खै
बड़ो तलाव छै पांणी सुं भरीयौ छै।
आंवलो १ मुखमें ~~राखौ~~ एक ब्राह्मण
मुखमें राखीयौ । तितरै तलाब आयौ तह
बो राजानुं आंणा ~~पांणी~~ पायौ वृक्ष री
छाह राजा ब्राह्मण चादर ऊपर बैठा
घोडै नुं पाणी पायौ । राजा नुं पवन
करवा लागौ तेथ र हुय तेथ राजा
असीस कर असवार हुवौ । देवदत्त घोडी आ
गै हुवौ एते खवास पासवान आय
मिलीया । ताहरां देवदत्त उजैणा रौ मारग
जोवाड लेमतांई सेमथ नुं पाछो वलीयौ
ताहरां राजा कहीयौ देवदत्त तूं म्हांसु
~~मिलीये~~ इतरौ कहि आपरौ महले गयौ
ब्राह्मण समथ लै घरि आयौ । बीजै
दिन राजा सभा मांहे बैठे देवदत्त बी
राजा स्तुति करवा लागौ अरु मारा
स मेल्ह बुलायौ अरु कहीयौ आन पाछै
मोनुं राज्य देवदत्त रो दीन्हों छै।
हुं देवदत्त सुं उरिण कद हुईस।
इतरौ कह सरब कमेतीयां ऊपर दीयौ

अक देवदत आवै तारां उठ ऊभौ हुवै
अर आपरी गादी बैसणा नुं थौ। बीजो
किणटी सुं वात न करै इसड़ौ काय
दो राखीयौ अक सुखासण ~~सुखासण~~ बैसदर बार
आवै। एक दिन राजा रौ कुंवर माहली
दोढी एकलो दीठो। तारां उठाय सुखासण
मांहे बैसारण पांमडी उठाय घातें घरे
ले आयौ ओरा मालीयै हींडोला हर
बैसो वाणीयौ। राजा रै महलां माहे सोर
पडीयौ जु राजकुमार लाभै नहीं। ठौड
ठौड मांणस मेल्ह खबर कराई किणेई
सोध न पावै। रात पडी राजा रांणी
बहुत दुख पायौ सरब लोग दील
गीर हुवा। तारां सरब बैसि रह्या
तठा पछै देवदत राजकुमार रै कानांरा
मोती उतार नै आपरा आदमी सेती
बेचवा मेल्हीया कहीयौ तोनुं पूछै तौ
कहीयै देवदत रै घर रा छै तारां
उवै जाय जुहरीयां नुं मोती दुवालीया
तारां जुहरीयां कहीयौ तूं कौण छै
उवै कहीयौ हुं देवदत रौ चाकर छुं
तारां कहीयौ मोती कठारा तारां क
हीयौ मोती देवदत रै घर रा
छै। तारां जुहरीयां कह्यौ हिवारां तो
तूं घरे जाह थारा मोती बेच राखां
छां स्वारे नांणो आइ लेई। मोती दस
हजार रुपीयां रा छै तुरत विकै नहीं।

ताहरां मोती मेल्ट नै गयौ ताहरां जु
हरी राजा पासै गयौ जाइ नै मोती
दिखलाया कहीयौ देवदत्त खून कीयौ आ
आ सांभल बोलीयौ नहीं लोक बोलीया
मुदौ पायौ / कोई कहै इयै रौ मन
बचो प्यारागीं मैं पीलौ कोई कहै घर
लूंटौ गरदन मारौ कोई कहै देसवट
काढ़ौ राजा बोलीयौ नहीं / मुं करतां
दिन ४ हुवा प्रोहित देवदत्त दरबार आ
यौ / ताहरां कोई क्युंही कहै कोई क्युं
ही कहै ताहरां देवदत्त क्यांहीरा वन
कानें सुणीयौ अक राजा तौ देवदत्त
नुं आवतौ देख २ पांवडा ताम्हौ आ
यौ आधी गादी बैसांणा भली जिनस
वातां कीयां पिरा राजा उसडैहीज मन
रह्यौ प्रोहित उवैहीज आदर उठे घरे
आयौ / बीजै दिन प्रोहित कुंवर नुं
सुखासरा बैसांणा आप प्यादो हुइ आगौ
चालीयौ घुडी हाथ पकडि इनमोम कर
तौ हजूर आयौ / कुंवर नुं पाय लगा
यौ अर लारव एक रौ मुहर नजर
कीयौ राजा पुछीयौ देवदत्त औ कांइं
कही म्हाराज मैं रावली परीक्षा करणा
रै वास्तै इतरौ कीयौ / ताहरां राजा
बोलीयौ देवदत्त लोके मोनुं कहीयौ
ताहरां मैं जाणीयौ हुं एक आवला थी
उरवा हुवौ / लोके इतौ कहीयौ ॥ दूहौ

दोइ पुरुष जुग भार सहै बीजा भार क
रांखवी / कथा इक उपगार कीयौ करै / इक
कीयौ ल्यै आंसा ।।१।। राजा बहुत हरखित
हुवौ बाजा बाजीया वधाया नहिं
चीयां देवदत्त नुं राजा सिरपाव घोड़ो
दे बै घर नुं विदा कीयौ पुतली
बोली राजा भोज इतड़ौ कृतज्ञ हुवै तौ
इयै सिंघासण बैसे ।। इति सिंघासन का
बतीसी री चौथी कथा संपूर्ण ।।४।।
वले राजा भोज महूरत देख तरब
अभिषेक कर विधि संयुक्त होय सिंहा
सण बैसण नुं हुयौ / तिसडै पांचवी
पुतली बोली अहो राजा भोज इयै
सिंहासणां तिकौ बैसै जिकै मांहे गं
भीर गुणा होय वीर विक्रमादित्य सार
खौ हुवै सु बैसै / राजा वीर विक्रमा
दित्य बोलीयौ राजा वीर विक्रमादित्य
किसड़ो गंभीर हुतौ / पुतली कथा
कहै छै उजेणी नगरी राजा वीर वि
क्रमादित्य राज करै / एक दिन एक व्या
पारी सुन्दर सुन्दर हीरा लेनै राजा
नुं आय मिलीयौ / राजा उवैरी कीमत
कराय व्यापारी नुं रुपीया गिणाय दी
या अर पुछीयौ थारै कोई घणा मोलो
रो हीरौ छै / तारवां सुन्दरो एक हीरो
कालीयौ अंधारै मैं उजास करै जहां
राजा देखवि नै कीमत कराई सु करोड़१

रै मोल रौ हुवौ। राजा हीरो देख खुशी हुवौ अर पुछीयौ इसड़ा थारै बीजा रत्न कोई वले छै गुजरी कह्यौ म्हारै इसड़ा दस रत्न छै। राजा कहीयौ वेग ही ले गुजरी कहीयौ वले तौ कोई नहीं। ताहरां कहीयौ म्हारै पाट हाथ लगाय ताहरां गुजरी पाट हाथ लगायौ तब राजा दसक्रोड़ रुपीया दीया अर परतीत रा आदमी साथ दीया दिन ४ आवरा रौ ठीक कीयौ। बांदरी पै राजारै मांगता नुं लेजाय रत्न दस अंध्यारै उद्योत कारी गिरा दीय। पुन नल्ल करि आवता पुन बीच नदी पूर आई इसै कन्है एक रत्नां री जोखिम अरु राजा री आज्ञा पाल राखी चौथेदिन राजा रै पाछे लागरयौ ताहरां विचार कहि मन मैं कहीयौ राजा री तौ आज्ञा पालणी जरूर छै। कहीयौ ॥ दूहा ॥ प्रभु आज्ञा मेटणी। अरु छेदणौ। मर्म छिपाणी नार। सो ~~बि~~ बिन हथ्यार दयौ मार। ॥१॥ आंरा मानणा राज्य फल। तप स्या रौ फल सील। विचारो फल ग्यान गुण। दान भोग गुण लाल ॥ २॥ इसौ जो नदीरै तिरणाहार मल्हा नुं कहीयौ मोनुं नदी पार उतार उवै कहीयौ किसी ऊंतावल छै दिन दोय धीरज थारौ

कर नदी पगार हुवी ताहरां थांरै प्यरे
जायो। ऊ बोलीयौ मोनुं तौ आज रा
जा रै पाए लागणौ छै। दस रत्न आ
ज लेजाय राजा रै हाथ दैणा जरूर
छै ताहरां मल्लाह इसी गरज री बात
सांभल कहीयौ रत्न ५ मोनुं दे तौ पार
उतारूं ॥ दूहा ॥ तरिवो महा नदी तणौ। ओरा
वरसों देष कारी जकावणो उ जिय वरीजी
औक विसेष ॥१॥ इसी बात सांभल राज
पुरुष ५ रत्न काढ दीन्हां। ताहरां मल्ल
खांधो चढोड नदी सिर पार उतारीयौ पु
राजपुरुष राजा सुं मीलीयौ रत्न ५ राजा
नुं दीन्हां। राजा कहीयौ बीजा रत्न
केथ उवै कहीयौ नदी पूर आई
सो दोइ दिहाडा रहै कन च्यार दिहाड
रहै अेक छावी प्रतज्ञा आज इसी
हुई तीयै कारण ५ रत्न दे पार उत
आयौ। म्हाराज सुं रुबरु हुवौ। ताल
रत्न पीयौ। एतो म्हाराज सांभल रतना ५
रत्न उवै नुं दीयौ तीयै खातर म्हे
छे राजा वीर विक्रमादित्य सारखी
गंभीरता होय तौ इयै सिंघासण
सै। इति सिंघासन बत्तीसी री पांचम
कथा संपूर्ण ॥ ५ ॥
तथा बहुडे केर राजा भोज मुहर्त्त
सिंघासण बैसण नुं हुवौ। तिसडै छ
पुतली मनुष्य वाणी हुइ बोली अहो

विक्रमादित्य
राजा भोज थारौ राजा वीर विक्रमादित्य
सारखो उदार चित होइ तौ इणै सिंहास
णा बैसे नहीं तौ देख बोकरे। ताहरां
भोज कहीयौ राजा वीर विक्रमादित्य कितौ
उदार चीत हुतौ। तारां छठी पुतली
कथा कहै छै। उजेणीं नगरी राजा
वीर विक्रमादित्य राज करै एकदा प्रस्ताव
वसंत रितु में दरबार जुडीयौ छै इतरै
बागवान कहीयौ म्हाराज सुं अरदास
तौ आज बाग देखण जोग छै।
दरबारी राजा सुं गुदरायौ सु बागवां
णा आयौ छै विनती करै छै राजा
कह्यौ बागवांणा नुं बोलावौ बनमा
ली भीतर आयौ कह्यौ म्हाराज बाग
देखण सारीखो छै। अनेक वृक्ष आंबा
नींबू बीजोरा जंभीरी नारंग केल केद
बतूत सहतूत पील्लू नींब खिजोरा
दाख दारव चांपा जुइ केतकी कमल
रा फूल गुलनात बेल अर अनेक
जात वृक्ष फुलीया छै। के फलीया
छै के मोरीया छै वसंत रै विषै
वन विहार क्रीडा रौ समीयौ छै ती
पै कारण कहूं छुं। तद राजा पाट
रांणी सहित बीजो राजलोक सरब साथ
कर अर नृत्य कारणी वेस्या रा मजल
रा नायका साथ करि अर क्रीडा रा व
मांटे जाइ प्राप्त हूवौ बागरै बीच जाय

प्राप्त हुवा। बागमें बीच डेरा कीया छै जे
पर नल बणायो छै फवांरा छूटै छै
रात्र दिन पातरां नाचै छै तेथ राजा
रांणी सहित सखीयां सहित जनांना कीयां
फूल चुणै छै। अक फूल गूंथ गूंथ
हार बणावै छै अर अनेक भांत क्रीड़ा
करै छै। रात्री रै चांनणी रा बिछान
मां छै राग रंग हुवै छै। मजा बाजे
छै सखीयां रा वृंद अनेक भांत
करि राजारी सुश्रुषा करै छै। राजा
नुं सुख दै छै। पांणी हौद चोबचा
भरीया छै। तेथ जल क्रीडा करै छै
तायफा साथ लागा फिरै छै। इतरै
बिचालै एक तपस्वी दुर्बल आय अरच
ना कीवी अक बहुत काल रो उवै
वनमांहे तपस्या करतो हुंतो अक राजा
री जनानो देख नष्ट वैराग हुवो
राजा पृथ्वीपों चाहै काइं चाहीजै। तपसी
कहे हुं देवीजी रो आराध हुवो। सु
देवता रात्र सुपन मांहे कहीयो हूं
काइं मांगै। मैं कहीयो मोनुं विषय
रा सुख अक कायारो बल परलोक
रो भावे इहलोक रो। तरां देवता
कहीयो एकरा राजा विक्रमादित्य छै
तीयै नुं जाय जाचना करि तूं इयै
ही भव मांगीस सु पाइस इयै
ही कारण महाराज पास आयो छूं।

३ अरु सांगलो चंद्रमां री सोभा लीयां मुख विकसंत कंवल सारीखा नेत्र नुं सोभत हास सोने सारीखो देही री वर्ण स्याम केस। उंचा अरु कठ न कुच। कोमल सरीर इतरी स्त्री रा स्वभाव रि गहणा छै। इसडी स्त्री जो वलभ छै तीयै नुं देखतां कीसो सुहावै नहीं। राजा मेघनदी इन्द्र जाल कौतुक नुं छोड वलभ स्त्री नुं देखै ही देखै। ताहरां सोभल राजा कहीयौ। इयै वै तौ तप खडहडीयौ पिण इयौ रौ तौ दुख दूर कीयौ चाहीजै। इयैरौ मन स्त्रीयां कर हरीयौ छै ॥ दूहा॥ चित्रां में त्रिय मन हरै। दीठा चतुर नरेह। वचन विलास कटाक्ष कर मोंवौ किस्यूं कलेस ॥१॥ करवा नाम का विन त्रीया विकला हाथे हीन। तदपी नग्न न दिखाइये वैरी जी प्रवीन ॥२॥ राजा दीठौ इयै तौ बन क्रीडा करतां योवन वती सरुप स्त्री दीठी हुती। तीयै रै देखवौ कर इयैकी तपस्य अर वैराग गयौ। पि रा जितरी तपस्या कीनी तितरी रौ फल हुती। इतरौ कहि तपसी नुं नैड़ो बुलाय नै कहीयौ अहो विक म सुखनो संसार मांहे निंदनीक कौ अरु तूं मांगै छै

छै इयै कलीयौ मैं सिद्धांत दीनौ
छै। संसार विषै यती छै अर मैं
जोगीयौ सु पायौ लीयै तो किसुं सुखी
जै ताहरां राजा विचारीयौ जिकौ पारकी
दौ पौ दीयै सु सूखै नहीं। ती लीयै नुं
पारकी पावै ही पावै। दूही साध हिं
दू तुरक चोर पाद पेरव राय। असा
पुछै जल पाइयै कोक पीवौ कैसे
आय॥१॥ तौ इयै नुं एक सौ स्त्री
मुग्धा मध्या प्रगल्भा यौ अक कयै
रै ही नाम गांव बसावौ। अक
बारह गांम बीजाही इयै नुं यौ।
अक बहुत रिद्ध दे गांव रौ
ठाकुर करौ ताहरां राजा हुकम से
ती वौ गाम बसाय ति अभषेक करा
य ठाकुराई रौ तिलक दे बांभरा
नुं बारह गांम रौ ~~तिलक~~ ठाकुर की
यौ। बांभरा छी सु सुख भोग
वै छै पाछै राजा वनि विहार क्रीडा
करि उजेणी आयौ। पूतली कहै छै
राजा भोज इसडौ थारौ उदार चित
हुवै तौ सिंघासण बैसे। ताहरां
राजा भोज सब विलखो करि ऊभो
हुय रह्यौ। इति सिंघासण बत्ती
सी री छठी कथा सम्पूर्ण॥६॥

बीजै मूहूर्त राजा भोज सबै अभिषेक
सामग्री कर सिंघासण बैसण नुं

आयौ ताहरां सातवीं पुतली बोली अहो राजा भोज इयै सिंघासण राज वीर विक्रमादित्य सारखौ हुवै साहसी जु बैठे ताहरां राजा भोज कह्यौ राजा वीर विक्रमादित्य किसड़ोक साहसी हुतौ। ताहरां सातमी पुतली कथा कहै छै। उजेणी नगरी राजा वीर विक्रमादित्य राज्य करै छै। तै विषै इसडी सात विसन नहीं। भली बात करै छै ठौड ठौड पंडत सास्त्र री चरचा करै छै। धर्म री चरचा। धर्मसुं नृपत सदा। पाप रौ भय। कीरत री वांछा परोपकार री वांछा सतभाषणा नैं निर्लोभता इसड़ा लोक जीयै राज मांहे छै तीयै नगर मांहे सुध नांम साह वसै तीयै साहरै द्रव्य रौ प्रमाण कोई नहीं जु वात नगरी मांहे चाहीजै सु उवे साहरै घर मांहे लाभै। उवे रा कोठार खुलै ताहरां उवै नगरी मतां सुकाल होय एक दिन उवै साह विचारीयौ। इयै भव तौ ~~परलोक~~ घणुं ही सुख भोग वीया परण परलोक रौ कोई ~~उप~~ उपाव न कीयौ तौ क्युंही न कीयौ तेण दुहौ कहीयौ छै॥ दुहा॥ मनो कामना रूपलौ लखमी भये कहा होय जो परलोक न साध्यौ मन पछतावौ होय

जै रिपु मारा मरदीया गलै देइ
नै लात। परा वैरी मोहन मरदीया
जो सुख पावै सात ॥२॥ जे स्त्रीये
सारी हियौ बहु सेवायौत कांम। प्रम
इष्ट सु प्रीत नह वृथा जमारो तांह
॥३॥ इसौ विचार कर दांन खंड सास्त्र
मांहे कहीयौ छै। ज्युं दांन री ध्वज
बांधी ज्युं बांमण जोगी सन्यासी वै
ष्णाव जती अतीत अभ्यागत आवै
सु पहिली भोजन तांहरा घर सौ
सदा वर्त्त लै। पाछै बीजी होड जावै
इसडी धर्म री प्रवृत्त कराई आप
स्त्री सहित तीर्थ नुं चालीयौ तेथ
महा तीर्थ पर्वतो देवालय वाम आगे
का समीर आयौ तेथ सिला ऊपर
चढदे सिर जुदा जुदा दीठा अरु
तेथ इक लिख्यत दीठौ अरु वाचीयौ।
जु ए द्रव्य सुकन्न स्त्री छै। एकोप
इसडा पुरष होय आपरा सिर आप
रौ हाथ काट बल दै तौ औ
दोरं जीवै। अरु साच भाराज्यो अरु
मृत्युक गंधावै नहीं॥ ए आश्चर्य॥ दूहा॥
अचरत पडै घड्यौ चडै। मेसरा
घराड समय डकायौ अराकीयौ कहै। जो
छै सो दिष्ट रूप ॥१॥ इसौ आश्चर्य
देख परात द्रव्य खरच कर लिखनी
तौ लाहो लै तीर्थ यात्रा सफल

मेघ जुगा तलाव भरीयौ साह खुसी हु
वौ बीजै दिन तलाव खाली हुइ
गयौ । पांणी ठहरै नहीं सुस जाय
तलाब ऊपर वृक्ष अनेक भांत रा लगा
या । महादेव रौ देहरौ करायौ तला
व रमणीक दीसै छै पण पांणी
ठहरै नहीं । घणा ही जतन कीया
घणी पुराय जतन कीया पण पांणी
न ठहरै । साह बहुत चिंतातुर हुयौ
अर कोइ एक दिन एक सिद्ध आयौ
उवै कह्यौ कोई एक बतीस लखणौ
पुरुष हुवै अर इयै धरती रै भोमी
यै नुं बल देवै तौ पांणी ठहरै।
ताहरां साह सवालाख रौ सोन पोक
जो करायौ तलाब ऊपर ऊंचौ चो
तरौ कराय नै मोरगास ऊभो की
यौ कन्है चोकीदार राखीया । अक
कहीयौ जिकौ कोई आपरौ पिंड
समरपै अक आपरौ पिंड धै उ
औ पोरसो लेवै सु आपरा बेटा पो
ता नुं धै सु द्रव्य रा लोभी तौ
घणाही आवै पिण सालखीक कोई
न आवै ५ लोक देरव २ इतला फि
जावै । इसी वात राजा सांभल नै
कह्यौ ओ वात और नुं मनां कहै
अपां बिन्हे जाय कोतक देखसां/बी
जै दिन राजा

को राज भली भांत हलावज्यो । म्हे
दिन १० कौतुक देख आवसों पछै इत
नुं साचौ ले राजा चालीयौ । उवै नगर
आय तलाव दीठौ हरखत हुवौ । पहर
एक रात गई तमासा दीठा अर आ
धीरात गई जाहरां तलाव मैं जाय
ऊभा रहीया अरु कहीयौ जु देवता
छतीस लक्षणा पुरुष रौ लिसायौ
जु आप तृपत हुवौ । इतरौ कहि
खड्ग ले आपवौ सिर काटण नुं
हुवौ तरहरां देवता प्रगट होइनै
हाथ ग्रहीयौ । मांग मांग हो सत्या
धक हुं तुष्ट मान हुवौ । ताहरां
राजा कह्यौ जे प्रसन्न हुवौ छै
तौ संसार रै उपगार निमित्त साह
तलाब खिणावायौ छै सु तलाव
मैं पांणी रहै छै नहीं सु तला
ब में पांणी भरीयौ रहै । अर दे
वता सुं कहौ मेट वरसाय तलाब
काढौ जल सुं भरौ। ताहरां देवता
देख घडी मांहे मेह वरसाय तलाब
काढो बोढीयौ । राजा उजेणी आयौ
किणही नुं कहीयौ नहीं । पुतली
कहै छै जे राजा भोज रे राजा
वीर विक्रमादीत्य सारखो इसड़ौ पर
उपगारी हुवै तौ इणै सिंघासण बैसौ
नहीं तौ नजर सुं निरख बोकरौ॥

।। इति श्री सिंघासरा बतीसी री आठवीं कथा संपूर्ण ।। ८ ।।

फेर राजा भोज सुभ मुहूर्त देख घरौं टरव सुं राज्या भिषेक कराय सिंघासरा बैसरा नुं हूवौ लारां नवमी पूतली बोली अतो राजा भोज तू राजा वीर वि-क्रमादित्य सारखो हु इढवंत हुवै तो इयै सिंघासरा बैसै। राजा भोज कहीयौ राजा विक्रमादित्य त्रिलोक इढवंत हुतौ। तारखं पुतली कथा कहै छै। उजेरगी नगरी राजा वीर वि-क्रमादित्य राज्य करै। राजा रै पुरोहित तीयै रै दिवाकर नाम पुत्र लता सुखे तीयै नुं एक समी यै पिता सीख देवै छै। अरे पुत्र तूं क्राम्द करै छै विद्या भरा ज्युं भलौ दीसै ।। दूहा ।। विद्या गुरा जीयांरै नहीं ओर तपो गुरा हीन / दान सील गुरू ग्यान नह / तेन विकीसै कीन ।।१।। हूं विद्या ठाकुर गांव नौ हुवै बरा बर नाह। ठाकुर गांमही मानीयै वि द्यावंत सब ठांह।।२।। इसडी वात सुरगी पिता कनी सीख मांगी दिवाकर वारगा रही गयौ तैय चंद्र मौल उपाध्याय सुश्रुषा करि आराधी यौ ।। दूहा ।। सुश्रूषा यह द्रव्य कर / अ

उपाय न कोय ॥१॥ गाहवां उवै उपाध्या
य संतोष पाय सिद्ध सारस्वत मंत्र दीयौ
तीयै सारमंत्र ~~कर~~ साध महा पंडत हुवौ।
विद्या वंत हुय अपूठो घरां नुं वलीयौ
मारग मांहे अंतीपुर नगर आयौ तेथ
वेस्या री पुत्री नरमोहना नांम नव जो
बना सरवांग सुन्दरा रूप तीयै नुं
राक्षस मांदौ। मनुष्य कोई आवरा
पावै नहीं जावरा पावै नहीं। जावै
सु मारै। मनुष्य पोंच सात मारीया
सु डरतो कोई वेस्या रै घर मांहे
जावै नहीं। दिवाकर उवै वेस्या नुं देख
आसक्त हुवौ दिनरी भूख गई रात
नींद गई शरीर क्षीरा हुवौ प्रोहित
सांभलौ जु दिवाकर अंतपुर आयौ।
नरमोहनी सुं आसक्त हुवौ आवै नहीं
पढीयौ घरौ ही हुतौ। परा पढी
यै सुं बीजां सुं काम घरौ रौ
हुवै। इसड़ी बात प्रोहित सांभल बेटै
नुं ले आयौ। परा मन दिवाकर
रौ ओथ रह्यौ काया उठे आई।
दिवाकर राजा सुं मिलीयौ आसीरवाद
दीवौ राजा पुछीयौ दिवाकर मारग
मांहे घरां दिन क्युं लाया। दिवा
कर कह्यौ महाराज दिन लागा सु
वात कहरगी नहीं। राजा कह्यौ वात
कहै क्युं नहीं गाहवो कह्यौ जी कहां

काढं। हुवै हुवा पूरवै राजा कह्यौ हूं
वात पूरवीत हूं वात काहि। ताहरां
दिवाकर कहै -कोंत पुर नगर छै तैथ एक
वेस्या छै तीयै रै एक कन्या छै नाम
नरमोहनी छै अति रूप जोवन अव
स्था छै जु मन म्हारौ ओथ छै।
उवै वेस्या सुं लाग रह्यौ छै। मोला
दीखवा बीजा परदेसी ओथ घणा ही
अलूझ रह्या छै मोनुं छोडिने जी
ले आया। राजा पुछीयौ रे उवै नुं
मिलीयौ कह्यौ उवै नुं एक राकस मां
तौ छै बीजै किणही नुं जावणा
देवै नहीं जावै तैनुं मारै ताहरां
तीयै काढ़वा डरतौ कोई जावै नहीं।
जे मिलीयां पछै मारै तौ मरणौ
एक भवईज छै। राजा कहै दिवाकर
मोनुं तेण्य लेहाल ज्युं म्हे देखां
ताहरां दिवाकर राजा चालीया उथ
गया नर मोहनी दीठी। ताहरां राजा
कह्यौ दिवाकर तैं कह्यौ तिसड़ी
हीज छै ताहरां राजा वैताल नुं
कह्यौ मोहनी रै राकस छै तीयै
नुं मारकाढो ताहरां वैताल राजा रा
कस नुं मारकाढीयौ। ताहरां मोहनी
आय मिली पगे पडी कह्यौ अहो
सूर वीर आज पछै हुं थारी दासी

राजा कह्यौ जे गुरा मानै छै तो मैं तोनुं दिवाकर नुं दीन्हीं ताहरां मोहनी कह्यौ एकबार मोनुं राज लोक दिखावौ पछै दिवाकर नु दीजो / राजा कहीयौ इयैरी पकी राज लोक ओ इसी पछै उजेणी आया मोहनी दिवाकर पर वाली बहुत हरषत हुवौ पुतली बोली राजा भोज जे इतडौ इढ वेत हुवै तौ इयै सिंघासण बैसै/ ताहरां राजा भोज मुंह विलखाय अपूठौ आय बैठौ ॥ इति सिंघासण बतीसी री नवमीं कथा संपूर्ण ॥ ९ ॥

पेर राजा भोज सुभ मुहर्त सकल साम ग्री एकठी कर अभिषेक कराय सिंघा सण बैसण नुं हुवौ इतरै दसमी पुत ली बोली अहो राजा भोज राजा वी र विक्रमादित्य सारखो दयावंत हुवै तौ इयै सिंघासण बैसै। ताहरां राजा भोज बोलीयौ राजा वीर विक्रमादित्य कि सडो हेक दयावंत हुतौ ताहरां पुतली कथा कहै छै उजेणी नगरी राजा वीर विक्रमादित्य राज करै। सु एक जोगी जंगल माहै रहीयौ दे बैठौ ताहरां लोके आय कहीयौ एक महा पुरुष वडो जोगी छै जिकुं वात पूछै सु कहै। ताहरां राजा आपरो मेलक परतीत रा मांणस मेलहीया परीक्षा लैण

री तांई जो कहीयौ ॥ दूहा ॥ फिरे २ घट
ता फिरै / कूडा ज्ञान महेत/ पेट भर
णा पाखंडीया लोक मानलै तेत ॥१॥ भेद
न जाणै बापडा बाहर बुध्ध गिंवार/
ऊपर देखै सो कहै / अंतर नहीं विचा
र ॥२॥ विरला सतवादी जगत / ज्ञान अ
गुणा वंत / ती कारण भेदीजीयै परीक्षा
करी महंत ॥३॥ वार्त्ता ॥ ताहरां राजा
रा पुरुष जोगेंद्र पास जाय नमस्कार
कर बैठा / जोगी परखीयो बे पर
वाह राव रेंक बराबर / आवन कहै
आव/ आवन कहै जाय / जे कोई
मिष्टान भोजन ले जावे तौ न खा
वै/ जे भीख मांग दन २ खाय/ क
पडा न राखै निरवस्त्र बैठौ
रहै/ किणही कहै सुं काम नहीं
तूटै सुं कांम नहीं / इसौ देख
राजा सुं राज पुरुष आय कह्यौ/
॥ दूहा ॥ भिक्षा रौ भोजन करै/ वीष
वास खंड धार कर रेषा पहरै स्वकर
सुवै धरा तरा सार ॥१॥ अंम सों
परंणा संके नहीं / नों कहीरी आ
स/ दीसै अन आनंद में / वसै
सुखी वनवास ॥२॥ म्हाराजा इसडौ जो
गी दीठौ बीजौ मैं स्युंटी न आणयौ/
॥ ~~दूहा~~ ॥ राजा कहीयौ ॥ दूहा ॥ जे कछु मन
[illegible]

तत्व विचारै रेज रहै। मट पुं सिद्ध
री रीत॥१॥ राजा .इसौ कहि जोगींद्र
पास आयौ महापुरुष जोरा डंडोत
करि पाए लागौ। अरु संजम नीयम
आसन प्रणायाम प्रत्याहार समाधी ध्यान
धारणां अष्टांग जोग चरचा करि कह्यौ
आइसजी मास च्यार रहौ तौ म्हारै
महैल हालौ हुं खिजमत करीस। आय
स बोलीयौ ॥दूहा॥ प्रथवी सेज उसीग
भुज ऊदन नुं आकास। दीपक चंद
वन तासु माते ओग बस्त्र हवास।
॥१॥ दिसा सहेली कर चमर। पव
न वीजना कार। राजारी परकर सुवै जो
जी पांव पसार॥२॥ बहुर जोगी कहै
छै॥ नित्य अनत्य विचारणा। त्रिया ह
मारे माव। परम मित्र बैराग तें
सम दम बंधव जोरा॥३॥ वार्त्ता॥ इसरै
जोगी री आंखणीयौ राजा गुणग्राहक छै
अरु कहीयौ म्हारै काई इच्छा
नहीं' राजा मो पासै आयौ सेवा
घणा कीयौ तौ निफल क्युं जावै। ताह
रां राजा नुं एक पीलहु दीन्हो अरु
कहीयौ ये खावज्यो अरु कहीयौ
इसनै खायां पछै कांमा रा सरब
रोग जायां पछै जरा रहित पाछै
पूरी आवरदा वीसां ऊपर सौ बरस
जीवै राजा सोपी पीलहु जोगी रै पाए लागौ

वरतांत सांभल पाछै ओगथावडी हुती सो पग मांहे पहिर तीयै दीप जाइ रव बर कीन्हीं / देखै तौ बारी वालौ सं घ्या सगौ आपणौ कुटुंब नुं सीख दे छै/ अर मरणा नै भय दिलगीर हुवै छै दय। मवौ हुवौ छै / ताहरां उण आ म राजा कहीयौ तूं थाहरै घरे जाय थारै बदलै राजारै घरे हुं जाईस। उवै कहीयौ तूं कुण छै जु पराई वेई मरै छै / इयै वात हुं तोनुं कासे तूं थाहरै घरे जाय इतरी वात कहि राजा राक्षस री ठौड जाइ बैठौ/ घडी ४ पछै राक्षस आयौ देखै तौ सामान्य पुरुष नहीं ताहरां पूछै तूं कुण छै राजा कहीयौ तूं कुण छै। ताहरो राजा कहीयौ हुं उजेणी रौ धणी राजा विक्रमादित्य छुं अर पंखीरा मुखसुं वात सुणी हुती जु कही/ ता हरां राक्षस कह्यौ तूं तौ म्हारा मंत्र रो मंत्र / हुं थारी महमानी करूं तै ओज्य छै तूं वर मांग। राजा कहीयौ मैं वर मांगीयौ तूं इयै रा जा नुं छोडु। आज पछै मनुष्य बल मत लेउ। राक्षस कह्यौ आज पछै मनुष्य बल न लेऊं उवै रोज घिर कर राजा ओज पावडी चाढि उजे णी आयौ। पूतली बोली राजा भोज

इसड़ौ धीरज ओयै मनुष मांहे हुवै सु
इयै सिंघासण बैसै ॥ इति सिंघासण
बतीसी री इग्यारवीं कथा संपूर्ण॥११॥
और दिन राजा शुभ मुहूर्त्त देख
अभिषेक कराय शुभ घड़ी सिंघासण
बैसण नुं हुवौ ताहरां बारहवीं पुत
ली बोली अहो राजा भोज जीको
पुरुष राजा वीर विक्रमादित्य सारखो उदा
र हुवै सु इयै सिंघासण बैसै। राजा
भोज कह्यौ राजा वीर विक्रमादित्य
किसड़ो एक उदार हुतो। ताहरां पुतली
कथा कहै छै। उजेणी नगरी राज वीर
विक्रमादित्य राज करै। तीयै नगरमा
हे भद्र सेन वहवारीयो वसै तीयै
रै पुरंदर नाम पुत्र छै सु पिता
हुंत ऊपर कर धन विलसै। तीयै
नुं हितकारी लोग बरजै छै अहो
पुरंदर इतरौ खरच मती कर लक्ष्मी
रही भली। मनुष्य छोरो मोरो लिख
मी सुं छै। नहींतर हाथां मिणीयां
सब लाख तीन हाथ छै। लिखमी
कर भलौ भलौ कहै। कवित्त॥ लिख
मी पुत्र पाय भयौ जल निध रत्नाकर।
तीन भुवन पति भयो धराधी पा
यौ कौस्तुभ धर॥ लिखमी परस बहु
वौ पुत्र तनु सार सकल जित॥ धो
डै ही खरचीयै होइ समरिद्ध जितरी

तित जिरा तेरा समम: धन बिन भये
लोक सबै भिक्षुक कहै। मति मांन लाज
गुरा ग्यान वहिजाहि सबै लक्ष्मी वहै।
॥१॥ दूहा॥ निरगुरा नुं कहीयै गुणी
जो देवाहि धन हीन। गुणीयन नुं नि
रगुरा कहै। जो दीसै धन हीन॥२॥
॥वार्त्ता॥ अरु लोक धनवंत रा गुणा
बखांराता सु निरधन रा दोष ब
खारौं। धनवंत आलसी होय तौ
थिरा निश्चल कहै। चपल होय तौ
उद्यमी कहै। मूक होय तौ मित
भाषी कहै। मुखर नुं वीमा वंत
कहै। इसा हितकारीया वचन सांभलि
नै पुरंदर कहै छै॥दोहा॥ गयै
सोच न कीजीयै। आयै हुइ न प्रमाद।
मन आरणद मैं राखीयै। हीय नौ
रीयै विखाद।१। जा तो जाय हि
जाय हल्लौ उदिरक पथ परि। आवत
आवहि आय। ज्युं पांराी मांधि ना
लिय॥२॥ वात॥ छ पुरंदर पिता रौ
कमायौ धन हुतौ सु बिराग्धीयौ। पा
छै खांरा नुं क्युं न रह्यौ। ता
हरां भायां बेकर बंधा मांहे कुरो
यौ न आइ। ताहरां विचारि दूटौ कही
यौ॥ दूहौ॥ सहित व्याघ्र गज वन मलो यै
फल फूल। वर पौढरा तृरा सायरै। परा

विरा धन कुटुंब विन धूल ॥१॥ वात ॥
इसौ विचार पुरंदर परदेस गयौ। तेथि म
लयपुर राति रहीयौ। तेथि एक स्त्री
करुणा कर रोवती सुणी। उवै रै दुख
रातिरी नींद न पड़ी परभात नगर रा
लोक पुछीया तीयां कहीयौ हे ईन
जाणां आ नित्य इयैहीज भांत रोवै
छै। इयै रै आहिठटेंडर तो कोई
पूछै नहीं। तीयै कारण लोक बहुत
संकै छै। इसड़ौ सरूप आंणा राजा
वीर विक्रमादित्य नुं कहीयौ॥ दूहा ॥
एक कथा दुखीया तणी : अक अरज
री वात। कहै भोज पावै नहीं
विक्रम है विख्यात॥१॥ वात॥ राजा
उवैही नुं भोज है उवैही नुं साथ
ले मलीया पुर गयौ। तेथ रुण्या
ली राजा लोकां नुं पूछ हाथ खड़ग
ले पुरंदर नुं साथ ले तेका स्त्री
रोवती हुती जिका खनैं गयौ अर
महाभयकारी राक्षस स्त्री नुं मारतौ
देख कहीयौ रे राक्षस अपराधी स्त्री
नुं किसौ मारै पराक्रम अधिक छै
तौ मोसुं संग्राम कर ताहरां राक्षस
स्त्री नुं छांड राजा ऊपर आयौ
राजा नै राक्षस संग्राम कीयौ राजा
खड़ग सुं राक्षस ~~स्त्री~~ नुं मारीयौ बारली
पैरी स्त्री राजा नुं आसीस दीवी।

BITS

कहीयौ धन्न हो म्हापुरुष तूं
कोड बरस जीवै म्हारौ दुख तैं कापीयो।
इयौ राक्षस कना मनैं छोडाई मोनुं
घरमाहैं सुं पकड़ बनमांहे लेजावतौ मनैं
मारतौ सु तै मनै छोडाई निर्भय
करी राजा पुछीयौ तूं कुंण छै ताहरां
कह्यौ हुं बराबीयांरी छुं। हूं परणी
ताहरां अत्यंत रूपवंत हुती म्हारो भर
तार मोनुं द्रष्ट सेती दूर न करतौ
अति ही आसक्त हुतौ पिण ब्रिण ही
बखत कीयै कर मोनुं न कचतै तीयै
कारण हुं नैडी न आती तीयै दुख
कर भरतार राक्षस हुवौ सु मोनुं
नित मारतौ सो तीयै दुख रूप
थारै प्रसाद छुटी हूं थेनुं पिण
उपगार करीस अक म्हारै संजाग
छै नहीं। अक द्रव्य छै सोनै रा
सात पोरसा छै तीयांरै पे अंगी
कार करौ ज्युं म्हारौ मन सुख पा
वै अक थानुं दीजै सु घोडो ताहां
राजा नुं द्रव्य मंगाय पुरंदर नुं
दीनो। इसडौ कौतुक कर उजेणी
आया। पुतली बोली राजा भोज
जे तूं इसडौ उदार होय तौ इयै
सिंघासण बैसे। ताहरां राजा भोज
मुंह विलखवाय अपूठो हुवौ। इति सिंघासणरा ब
तीसी री बारहवीं कथा संपूर्ण ॥१२॥

अ और दिन राजा भोज सुभ मुहूर्त
देख अभिषेक सामग्री कराय सिंघास
ण बैसण नुं हूऔ इतरै तेरहवीं पुत
ली बोली अै राजा वीर विक्रमादित्य
सारखो उदार होय सु इयै सिंघासण
ऊपर बैसै। राजा भोज कहीयौ राजा
वीर विक्रमादित्य किसडो हेक उदार हुतौ
ताहरां पुतली कथा कहै छै। उजीणी
नगरी राजा वीक्रमादित्य राज करै
सु राजकरतां हेकदिन राजा धरती रा
कौतुक देखवा नुं नीसरीयौ हुतौ
फिरतौ फिरतौ गुजरात आय प्राप्त
हुवौ। तेथ नदी साभरमती तीर देहरौ
छै तेथ पंडित बैठा वाद करै छै।
राजा पिण आय गयौ इतरै कोई एक
पोडो पढीयौ पिंडत बोलीयौ। मिथ्या
सास्त्र रौ वाद सुण राजा बोलीयौ
अहो पिंडत मिथ्या सास्त्र कहि आप
री पुस्तक करि अर्थ नै पढु
चायजै अर धर्म सो ताकी पदि पदि
वन बांधीजै। पक्ष पक्ष किणही रौ
न कीजै। अरु शास्त्र सारी विचार
करै नहीं सु तत्व कि जोवौ। जैसें
कोई एक बीजै रै कहियै व्याख्या
न करै नाम ल्यै पुरातन रिषि
श्वर रौ तौ विचार क्युं पाईजै।
त्युं मूरख लोग विचार विना विगडीयौ।

ज्युं शिरसाली बराऊ नु मारिग दे
खायौ तौ ही विष कंटक सर्प
वृश्चिक द्रिष्ट सों देखवि हलशौ त्युं
शास्त्र सांभली विचार करि साच झूठ
रौ निर्णय करवौ। एष ओली वि
चार कुग्यान कुशास्त्र / कुं स्मृत/कु
मारग परहरसो / परोपवादन करसौ
बुद्धि केवटवां बधै। बुध्धि आकाश
मी पड़ै न छै विचार करतां मन
निश्चल रहै / तब बुधी पसरै जैसा
गुरा पंडित विस्मय हुय वलीया / जर
कहीयौ अहो आ बारणी अर्थ स्मर्थ
रण्यात सरस्वती कोई हुंती / एते मांहें
एक पुरूष स्त्री नदी मांहे पैठौ
हंतो अर नदी पूरी आई तासां
वाहे चल्यौ / वहतौ पुकारीयौ लोकां
दया कर म्हानुं काढौ / ताहरां पिंडत
निः निर्दय बीजो पिरा कोई मरणा
रै भय नैडौ न जाय / ताहरां राजा
जाणीयौ ॥ गाथा ॥ विरला जाणंति गुण
विरला पालंति निरधनानेहा / विरला पर
कज करः पर दुखवीये दुखवीया विर
ला ॥१॥ ताहरां दया री समुद्र परदुःख
री कारण तर राजा विक्रमादित्य उठै
नदी मांहे पैसि / स्त्री पुरूष बहता
जीवा बाहर काढीया। ताहरां पुरूष
बोलीयौ अहो साहसी पुरूष थैं ही

ओंरांनीयौ जु परोपकार करूं ॥ गाथा ॥
पांरानी इक अंजलीयं : अवसर आदियेण
पुत्तो करियं जीययं । अवसर ठुयेण
सुंदरी वडसै दिनेण कित रस ॥१॥ रा
जा चरित्र देख उजेणी नुं आवतां
थकां एक दरिद्री अरु मोटै कुल रूप
नौ तीयै नुं देख उवै जडी सौ
सोनो नेरा एक करि दरिद्री नु दिल
लायौ । सोनौ रेिता दीन्हौ अर जडी
पिता दिखाय दीन्हीं । पाछो उजेणी
आयौ । पुतली बोली राजा भोज इसडौ
उदार होय सु इयै सिंघासण बैसै
॥इति सिंघासण बत्तीसी री तेरहवीं
कथा संपूर्ण ॥ १३॥

और मुहुर्त राजा भोज सकल सा
मग्री ले अभिषेक कराय सिंघासणबै
सण नुं हुवौ ताहरां चौदवीं पुतली
बोली अहो राजा भोज जे ~~तूं~~ इयै
सिंघासण उवै बैसै जिकौ राजा
वीर विक्रमादित्य सारखो हुवै । राजा भोज
बोलीयौ । राजा विक्रमादित्य किसडोहेक
हुतौ । ताहरां पुतली कथा कहै छै । उजे
णी नगरी राजा वीरविक्रमादित्य राज
करै वरसमें दिन सारी धरतीरी
खबर लेतौ आप विचारतौ अथवा
दूत मेल्हतौ । एक समीयै राजा व्यापार
करतौ देसांतर गयौ जंगल मांहे वहतां

सिध पुरुष देख नमस्कार कीयौ एकादे उवै कहीयौ राजा विक्रमादित्य तूं एथ क्युं आयौ राजा बोलीयौ तूं मोनुं क्युं पिछाणीयौ। तीयै कहीयौ हूं पहली उजेणी आयौ हुतौ सु दीठा हुता सु महाराज राज छोड क्युं आवीया। राजा कयीया रत्न जतने राखीजै सु कहीयौ छै॥ दूहा॥ राज पदै वैरी घणां चिंता तणौ निवास। अविस्वास धन व्यव घणौ दोडौ तैं पद पास॥१॥ राजा कहै जो कबहू भावी तणौ। टोलो क्युंही इलाज। तो दुख तन ति वाय नल। राम जुधष्टर राज॥१॥ सोरठौ॥ इक था रीजै ज्यान। कीयौ विचार तरंग बहु। अन्य जन मकुत कान करन विचारै वाइयै॥२॥ तीयै कार जयौ छै ताहरां सिद्ध पुरुष बोलीयौ सुं पहली पझनी खंड रैवि पटली पुत्र ध मास। तंई राज्य छोड देस मांहे निसरतौ ताहरां एक समीपै जोगीयां मिल राज्य कीयौ लीयौ अर राजा आयौ तब राजा नै तिरस्कार कर काढ दीयौ। रांणी नै कह्यौ दुख देखतौ होय तौ मोरी रै साथ आव। तद रांणी

रै साथ हुई । राजा बाराणी पाला
ही विचरता हुवा एक दिन रात्र रै प्र
थीयै पाटली पुत्र सुं नैड़ौ ही महा
वृक्ष रै तलै बाराणी सहित राजा सू
तौ । तीयै वृक्ष म्हां पांच यक्ष रहै
सु वातां करता राजा सोमलीयौ उजइयै
नगरी रौ राजा त्रिमाली अपुत्रीयौ छै
ताहरां पुछीयौ राज कुण करसी कहीयौ
आज वृक्ष नीचै सुतौ छै सु राजा
हुसी । ताहरां जक्ष री वातां सांभल नै
राजा प्रात काल उठिनै रांणी सहित
पाटली पुत्र पुहता । ताहरां प्रधांने
मिल इयै नुं राज दीयौ सु राजा
रांणी निकंटक राज करै छै इयै
समीयै श्रीमाल अमरावत भूपाल मिल
कहीयौ सु श्री जांबाजै जय जेवव रहौ
इकनां न होय । इसड़ौ विचार कर
नै सहर घेरीयौ । राजा रांणी क्रीडा
करतां रांणी राजा नुं कहीयौ । राजा
पर चक्र आयां राज रहसी । राजा
बोलीयौ त्रीया चिंता मत करौ पा
सै ढाल । जै पांच जक्ष राज दीयौ
छै तौ कोई न लेसी । आपणौ
तौ और कोई न छै ॥ गाथा ॥ तनश
व नयन्न भाग्यं । भवाति च भाग्यं
विनापि यत्नेन करतलगत नश्यत यस्य
च भवतव्य नानाति ॥१॥ ताहरां रांणी

पक्षां रौ दीयौ राज सांभल निश्चंत हुई
इतरै माहे सीमाल भूपाल फौज ले आ
या। तारहरां कोर मांट भी पक्षां रौ
प्रभाव करि चित्राम री फौज मालीयैं
मांट हुती लीयैं जाय संग्राम कीयौ
तारहरां पैला दल भागा। इती वात
सांभल रांणी नुं चिमत्कार हुवौ।
तारहरां राजा नुं दुखीयौ किणुं पट
तारहरां पांचे जक्ष प्रत्यक्ष होय बोलीया
म्हे पुरब जन्म पांचे माछला हुता
तीयैं नुं तै कुंभार जेठ असाढ
मैं ओछै पांणी तडफता तैं काढ
पांणी माहें घालीया। पाछे कितरा
हेक दिन हुवा मच्छ मर पक्ष हुवा
कुंभार मर राजा हुवौ म्हां पुरबला
भव रौ उपगार मान इयै नुं राज
दीयौ अर इयैरी रक्षा करी। इतौ
कहि पक्ष आपरी ठौड गया इतौ
कथा प्रबंध सुंणा विक्रमादित्य नुं
चिंतामणी रत्न एक मनो वांछित रौ
दैणा हार दे सीख दीन्ही। अर
राजा नुं कहीयौ तुरत जाय
राज भोग करि। उवै रै कहीयै
राजा तुरत जाय असवार होय उ
जेणी आवतां मारिग मांहे दारिद्री
अेक जमें आचक आय राजा जाची

करि भाव: पूजै जो हुवै हेरु मेन। तोलो के कहिजै राव: इहत पवत संसय रहत॥१॥ आदिदेव पुरारी नांम। जो चावै हिय मांहि सो सारै सब कांम। पवित्र करै मन आत्मा। ॥२॥ इणां भांत श्री आदीश्वर पूजी स्तुति कर तीर्थ यात्रा करि द्रव्य खरच ला होलै अपूठा बाहुडीया। आवतां एकै नगर आय उतरीया। तीयै तलर मांहे देखै तौ कडाह चोहडीयौ छै। मांहे तेल छै नीचै परा अग्नी बलै छै। तालरां लोकां नुं पुछी यौ औ कडाहौ क्युं चढीयौ। तारां लोके कहीयौ इयै नगर रै राजा री बेटी मदन सुंदरी नाम अति रूपवंत आविवाह लै बैठी छै। जिको इयै कडाह मांहे पैसि स्नांन करि नीसरै तेनुं परणीजै। इति वात सुमित्र पुरारी कुंवरी जाय दीठी सुमित्र विमोहित हुवौ तालरां क्युंही नहीं। मन पाछौ ले फिरा सौकै पाछो आयौ आय राजा सु मदन सुंदरी रौ वृतांत कह्यौ। सु वात राजा सांभली नै सुमित्र नुं कह्यौ चालौ उवैही तौड चाल कौतुक देखां तालरां राजा सुमित्र नुं साथ ले चालीयौ उवै नगरी आया तालरां

उकलतौ दीठौ मदन सुंदरी दीठी राजा
पिरा मोहीयौ। सुमित्र रौ पिरा प्रेम
अनुराग देखि राजा कूदि कडाह माहें
पडीयौ। लोक हाय हाय करणा लागा
तुरत मदन सुंदरी आई। राजा रौ मां
स पंड पर पलतौ देखि अमृत री
धारा सुं सींचीयौ। ताहरां राजा स
वायो रूप जोबन ले उठीयौ। अर
मदन सुंदरी बोली अहो जगत आ
धार पुरुष री परीक्षा लैणा री
तई मैं इतरौ आरंभ कीयौ सु
परीक्षा लीधी इतरौ कहि तुष्टमान
होय आपणी राजधानी दीनी अर
राजा अंगीकार कीयौ नहीं ताहरां
बहुडि बोली ॥ दूहा ॥ जीप चक्ष बांना
न लागा हिय। मन पछतावौ न
कीयौ जीयै अति ही विषय रस लो
भ न कीयौ धणि धानी कलि मैं
ताको जीयौ। तैं धीरज करि त्रिभुव
न जीता: पृथ्वी तल मैं हुवा वदीता।
ताहरां राजा मदन सुंदरी राजधानी लै
सुमित्र नुं दीन्हीं। अर आप उजेणी
आयौ तीयै कारण कहूं छुं राजा
इतडौ उदार हुवै तौ सिंघासण
ऊपर बैसे। ताहरा राजा अपूठौ
वलीयौ। इति श्री सिंघासण बत्तीसी री
पंद्रहवीं कथा संपूर्ण ॥ १५॥

वले महूर्त देख अभिषेक री सामग्री
कराय राजा भोज सिंघासण बैसण नुं
हुवौ इतरै सोलहवीं पूतली बोली अहो
राजा भोज राजा वीर विक्रमादित्य सार
खो हुवै तिकौ इयै सिंघासण बैसै
राजा भोज कह्यौ राजा वीर विक्रमादित्य
किसडो हेक हुतो ताहरां पुतली कथा कहै
छै। उजेणि नगरी राजा वीर विक्रमा
दित्य राज करै। एक समीयै राजा
चतुरंगणी सैना ले चहुं दिसां रा
राजा नी जीत पगे लगाय अपूठा आ
या भली भली वस्तु ल्याया। भला
भला मनुष्य आश्रय आराध्य करणा
लागा। इसै समीयै राजा सभा मांहे
बैठा वन बाग रौ रखवालो बागवां
न हुतौ तीयै आय राजा सुं वीनती
कराई म्हाराज सकल रित राजा वंसत
रित आय प्राप्त हुवौ छै। आपरी
सरब राजधानीं सीयां आयौ छै रा
जा वात सांभलि आपरौ सरब
प्राट साथ करि वन बाग विहार क्रीडा
करणा हालीयौ। तीयै क्रीडा रा सुख
करि केलि रा वन मांहे आया
उण केल्ली रा पानां रो मंड पत्री
यौ। उण सोना रा सिंघासण ऊ
पर राजा बैठौ। और सरब आ
यौ आपरी मजलस बैठा पंडत छै

सु नवरस हास्य विलास री बात करै छै कवि गोष्ठ रा सुख अनुभवै सा विचालै एक धर्माधिकारी सपष्ट बाणी बोलीयौ अहो राजा सांभलौ। कारागृह संसार हु राज्य विभव गुवा पाइ। राजा कहै छै धर्माधिकारी कहौ। संसारे अति भय मरण। दुर्निवारणी व्याधा कर्म पइयै कहो। एह ग्यान मन सा धि-। ११॥ बहुडि राजा बोलीयौ। धर्मा धिकारी कहै। विषय चोर सुती नाहिं गे। प्रिय संजोग लाडि जाय। दोके लगौ सुणा और सु न लिखी मन प छताइ ॥२॥ तातरां राजा कहै अहो सा च कहिज्यौ धर्माधिकारी॥ दोहा॥ जोबन जावै जांवणीयौ। आयु देखतां जाइ। गए न दिन कहु बाहुडै। लिखमी थिर न रहाइ॥ बीज चसकसो बीजणो। घल पर जलसो पेम। और मनो सुख सपन सो। तो हरि न भजीये केम॥३॥ धर्माधिकारी कहीयौ। दुहा॥ मन धावै जल सान्च सौ यथा सालि करै दोन। आप परि उलसिवै हर भजै ती कौण ग्राहस्थ्य समांन॥४॥ इसी सुणी राजा संतुष्ट हुवौ धर्माधि कारी नुं आठ क्रोड रुपीया दीना अरु सोलह सांसण दीन्हां। राजा वन वि हार करि घरे आयौ। पुतली बोली

राजा भोज इसडौ उदार हुवै तौ सिं
घासण बैसे। इति श्री सिंघासणा ब
तीसी री सोलरवीं कथा संपूर्णा॥१६॥
फेर और शूलर्ण सकल सामग्री तैयार
कर विध संयुक्त राजा भोज सिंघासण
बैसणा नुं हुवौ इतरै सतरमी पूतली
बोली इयै सिंघासणा राजा वीर विक्र
मादित्य सारखो परउपगारी हुवै सु
बैसे। ताहरां राजा भोज बोलीयौ रा
जा वीर विक्रमादित्य किसडोहेक परउप
गारी हुतो। ताहरां पुतली कथा कहै
छै। उजेण नगरी राजा वीर विक्रमादि
त्य राजा राज्य करै तीयै समीयै एक
भाट देसांतर सौ आय राजा नु
सभेट दे मिलीयौ। राजा पुछीयौ कठौ
काहूं आयौ कहीयौ चंद्रपुरी महां
सेप चंद्र सेरवर राजारी सभा मांटे
बैठा थांरी गुणा पढीयौ। एके भाट
मुं थांरी सुति सांभल नै हुं आच
रा नु आयौ॥ दुहा॥ मुंट मागीयौ
हुंता अधक। दीयै दान अरु मान
विक्रम पर उपकारीयौ कल्प कल्प
द्रुम जांण॥१॥ इतरौ सुणा चंद्रसेरवर
तिलरवौ हुवौ भाट नु पुछीयौ अहो
भाट इसडौ बीजौ ही राजा किथे छै।
कनही भाट कहै॥ दुजेती सुयर विरथ।
फिरे और समुद्रां अंत। तेती अय

अन दिरन करी। तीयै विक्रम सर कुंरा तें॥

॥२॥ चंद्रलेखर राजा विक्रमादित्य री सप्रथा करतां देवता प्रसन हुवौ। कहीयौ थारै असंख्य संपत होसी। तीयै कर दान भोग मोकलेन कर। अक प्रत्यक्ष होय कहीयौ तूं मो आगै ~~अगन~~ अगन कुंड कर नित्य थारै शरीर आहुती दे जुं नवतर्ज पाय शरीर पाय अत्यंत संपत लेइ दानादि करै छै। या बात भाटवा मुंहथी सांभली ताहरां राजा विक्रमादित्य चिंतातुर हुवौ। जु मो विद्यमान थकां बीजो दुख पावै तौ धिकार म्हांरौ जीवीयौ। इसौ विचार राजा ओगा पावडी पहर राजा चंद्रपुर गयौ। अग्न कुंड देख कहीयौ

दूहा॥ अंब अंब फल ना भखै खेती करै न मोर। विद्या बल धन सा चकै पर उपकार सनेह॥१॥ दीठौ जु राजा चंद्र लेखर नुं बडो कष्ट छै तौ आज परोपकार करां औ औसर छै इसौ विचार निर्लोभ थको उपगार निमित्त अग्नी कुंड मांहे पडवौ लागौ। ताहरां देवता हाथ पाकडी यौ परतख होय बोलीयौ अहो साधुक्रम उतावलौ होय काया क्युं नाख होमै सु कुंरा कारज। हूं तो ऊपर तूठो कहि ताहरां राजा बोलीयौ

मोनुं वाचा दै ज्युं मांग्नू ताहरां देवता वाचा दीन्हा। ताहरां राजा मांगीयौ जु चंद्र सेखर सौ कष्ट निवारौं। अर मुह मांगी संपत द्यौ ताहरां देवता चंद्र सेखर नुं संपत दीवी। ता पछै पा वडी पहर राजा उजेणी आयौ ता पछै लोके स्तुति करी ॥ दुहा ॥ पर नुं जाणौं आपणौ। वेग करै उपगार। आप होय रहै वेगलौ। प्रत्युपकार विचार ॥१॥ हो राजा भोज इसड़ौ परोपकारी हुवै सु इयै सिंघासण बैठै। इति सिंघासण बतीसी री सतरमी कथा संपूरणं ॥१७॥

वले राजा शुभ मूहर्त्त अभिषेक कराय सिंघासण बैसण नुं हुवौ इतरै अठारमी पुतली बोली अहो राजा भोज इयै सिंघासण राजा वीर विक्रमादित्य सारखो होय सु बैठै॥ ताहरां राजा भोज कहीयौ राजा वीर विक्रमादित्य किसड़ोहेक हुतौ। पुतली कथा कहै छै उजेणी नगरी राजा वीर विक्रमादित्य राज करै एक दिन भीतरली सभा बैठा हुता। पोलीये आय कहीयौ कोई एक परदेसी पुरुष बाहर बैठौ छै राजा रा पांव देख्या चाहै छै। ताहरां राजा भीतर तेडायौ पुछीयौ काई अचिरज री ही वात कहेली। ताहरां कहै

छै उदियाचल परबत चूलिका नाम एक
देव भवन छै। तीयै रै किनारै चंद्र
कांत सिलाबद्ध एक भला सरोवर छै।
तीयै ऊपर एक सोने रौ थंभ छै
तीयै ऊपर एक सोने रौ सिंघासण
छै। सो थंभ सूर्योदय थको पांणी
सुं बाहिर आवै अर दुपहरी तांई
वधै अर पछै घटतौ घटतौ सांझ
तांई पांणी मांहे जावै। इसो अचिरज
छै अर उठा रा लोक उवै सुं पाप
विनास तीरथ कहै छै। इतरी बात
सुणी उवै सुं घणो इनाम दे द्रव्य
दे राजा विक्रमादित्य पावडी पहिर उद
याचल गयौ अर पाप विनास ती
र्थ दीठौ। जाहरां प्रभात समीयै पांणी
मांहे थंभ नितरीयौ। ताहरां हलवे
हलवै पांणी ऊपर तिरतौ तिरतौ आ
य सिंघासण बैठौ पाछै थंभ सिं
घासण लीयां वधतौ वधतौ दुपहरी
तांई सूरज मंडल सुं जाय पहुंतौ अर
सूरज री स्तुति करतौ बोलणी कर
सूरज रा ताप सेती मूर्छित हुवौ
ताहरां मन मैं स्तुति करणा ला
गौ। सूरज देव तीयै रै साहस कर
संतुष्ट होय अमृत सूं सींची साव
धान कीयौ। ताहरां बहुडि बोलणी कर
स्तुति करणा लागौ। इसी स्तुति सांभलि

प्रसन होय बोलीयौ जु राजा वरमांग ताहरां राजा कह्यौ श्री सूर्यदेव थाँ रा दरसण पायौ तौ कासू वर मांगू। ताहरां सूर्य संतुष्ट होय एक कुंडलां री जोडी दीन्हीं। अरु कहीयौ इयै कुंडला री जकी सुं सवाभर सोनो नित्य झडसी। कुंडल राजा लीया ले नै राजा सिंघासण बैठा। इमहीज सिंघासण तलै आयौ राजा उतर तिरतौ तिरतौ बाहर आ यौ पछै विचै मारग माहैं सन्या सी आदमी पचास सार्थै इसौ महेत मिलीयौ। तीयां राजा नुं जान्चीया रा जा उवां नुं कुंडल दीया। कुंडलां रौ कह्यौ फल औ छै सवाभर सोनो नित झडसी। तीयां राजा नुं आसीर वाद दीयौ राजा उजेणी आयौ। पूतली कहै छै राजा भोज इसडौ उदार होय तौ इयै सिंघासण बैसे। इति श्री सिंघासण बत्तीसी री अष्टादश मी कथा संपूर्ण ॥१८॥ ७

और मूहर्त्त देख राजा सरब अभिषेक री सामग्री कर सिंघास णा बैसण नुं हुवौ इतरै उगणी समी पुतली बोली अहो राजा भोज इयै सिंघासण राजा वीर विक्रमादित्य सारखो उदार च्चित होय सौ बैसै ताहरां राजा भोज कह्यौ राजा वीर विक्रम

विदित्य ~~सारखो~~ किसो हेक राजा हुतौ। तद
पूतली कथा कहै। उजेणी नगरी राजा
वीर विक्रमादित्य राज करै। राजा है
आचारी पुरुष पतिव्रता स्त्री। आपुर्व
ल जीवनी प्रजा वृक्षसर्वदा फलै चा
हीजता मेट होय। पापरोप धर्म रो वि
स्वास। अतिथि री सेवा। गुरु री सेवा
परमात्मा चीत पात्र नुं दान। न राज
नीत व्यवहार। एक समै छत्तीस राज
कुली रा राजकुमार सभा मांहे बैठा
हुता अेक क्रीडा वन रै रखवालै
बागवान आय कहीयौ म्हाराज एक
काल स्वरूप वाराह कठाई ते आय
तुम्हारै वन अवगाह रहीयौ छै। इसी
वात सुणा राजा असवारी कर वन
मैं गयौ। तेण सूवर नुं बिगाड
करतौ देख राजा कोपायमान हुवौ
वाराह वांसै घोडो राजा दीयौ सू
वर वन खंड लांघ पाहड लांघ
जीव रौ उकालीयौ कठै ही गयौ
राजा पिरा उनै रै वांसै घोडो दी
यौ तेण देखै तौ परवत री प्रोल
जडी छै खिडकी खुली छै का हरो
राजा कौतुक देखण री तांई घोड़ा
थी उतर महां जाय जोतलि खोलि
घोड़ो मांहि लीयौ पिवा अंधकार
तिरा की दीसै सुं ही नहीं। गहरां

सु राजा जेष मांगे तेच ही जाचक नुं दीयै। राजा रस रसायण दोनुं आ गै चवी अर कहीयौ रस लेबी देही आरोग्य होइ अर पुष्ट होय अक रसा यण लेबी तावा लेबी सोनो होय। ताहरां ब्राह्मण खुसी हुबौ ताहरां जाणै रस लीजै। पुन जांणौ रसायण ली जै सु दूनां नुं वाद करतां देख राजा रस अक रसायण दोनूं दीया अर आप अठ उजेणी आयौ सु कहां छां राजा सु इसडौ उदार हुवै तौ इयै सिंघासण बैठे। इति सिंहासण की सी री उगणीसमी कथा संपूर्ण॥१९॥

वले राजा शुभ मूहूर्त्त अभिषेक की सरब सामग्री एकठी कराय विधि सं युक्त सिंघासण बैसण नुं हुवौ इतरै बीसमी पुतली बोली अहोराजा भोज इयै सिंघासण राजा वीर विक्रमादित्य सारीखो निर्भय परमार्थी। परदुख रो कारण हार चित्त उदार कठु होय इसो ईश्वर मान्य सकल कला प्रवीण इसौ होय तौ इयै सिंघासण बैसे ताहरां राजा भोज बोलीयौ राजा वीर विक्रमादित्य किसडोक हुतौ। ताहरां पुतली बोली उजेणी नगरी राजा वीर विक्रमादित्य राज करै एक समै राजा देसांतर देखण नुं चालीयौ पाणी तुंय

गया ताहरां पदमालय नाम नगर उतराध
नुं। तीयै नगर एक सुंदर देहरौ छै
तीयै मांहि जाय ऊभा रह्या जोष च्यार
कापड़ीया देखया बात करतां साभंल्या। एक
भाई कहै छै च्यारि ग्रंम तीरथ नदी
तलाव कुंड पर्वत देखया पिण एक पर्वत कन्याकर
नाम छै ~~कन्ने~~ तेथ एक तपस्वी सीधो पण
श्रुतो न भविष्याति जाको दर्शन पह्लो
क सुणावै। पण परबत नीठ चढ़्यौ
जाय तद राजा उडन पावड़ी चढ परबत
गया। देखै तौ महापुरुष पदमासन
बैठ्या है नाम गुरपुख्यो है। अनेक वि
ध्न ऊपजै। राजा इसा राजा नहीं
जे ऊं फिरै अरु सरीर बार बार
पावजै नहीं यह देह यह राज्य
दुर्लभ है राजा कहीयौ यह मान
भाव ते परत्र तत्व का भावारग हर
देही अनित्य है। देही पायां को
तौ फल हुयौ जु तुम सारी खां
साध को दरसण हुवै तौ जीवत
प्रमाण है। यह सुन जोगीस्वर
प्रसन हूवौ सिद्ध दरसन निर्मल न हो
य। तब राजा नुं खडग एक
दीन्हीं ड्रेचा एक दीन्हीं जे घा सस्त्र
न फूटै एक डंड ~~दीनो~~ दीनो जेथी
शत्रु नास होय। ए तीन वस्तत
दे राजा की विदा कीन्ही। तब

राजा चो त्यौं जावै तितरै पेड़ा मांहे राजा एक औंर मिल्यौ तिण रुही चाराची लाय / एके राजा म्हारौ भूम देस खिडाय लीधी / राजा हूं थारै लिववौ छुं / राजा वीर विक्रमादित्य उवे लीने वत्त उदा राजा नुं दीन्हीं / आप पेरे पधारीया / राजा भोज सुं पू तली कहै राजा भोज तूं इतरौ पर उपगारी होय तो सिंघासण बैठे / इति श्री सिंघासण बत्तीसी री बीसमी कथा तिण दर्शण रुजाउ देउ ~~कथा~~ समर्पण कथा ~~बीसमी~~ संपूरण // २० //

नहुठ राजा भोज फेर शुभ वर्लेनै अभिषेक री सामग्री कराय सिंघा सण बैसण नुं हुवौ इतरे इकीसमी पुतली बोली अहो राजा भोज जैरूं राजा वीर विक्रमादित्य सारखा परम उपगारी पर दुःख रौ काटण हार उत्कृष्ट होय तौ इयै सिंघासण बैसे ताहरां राजा भोज कहीयौ राजा वीर विक्रमा दित्य किसडो हेक राजा हुतौ / ताहरां पूतली कथा कहै छै / राजा विक्रमा दित्य उजेणी राज करै / इश्वर नांम प्रधांन ताकै १ पुत्र ताको नाम बुध सेखर पिण निपट मूर्ख एक दिन पिता पुत्र सुं खिज्यौ / जिणाकै पुत्र मूरख तिणकै छत्र अंधकारी / कुलं

तस्य निष्ठ चंद्रेरा सर्वरी ।।५।। चंद्र याही
वात ऐसी भयानक सपूत विघावंत पुत्र
विना कुल रिसौ तौ नहीं । या बात
पुत्र की सुरगी तब पिता की अग्या
मांगा यो बरणारणी जाय पढ्यौ । पिता
कही नीके । सदानंद नाम ब्राह्मण ताकी
सा गयौ तहां पढ़णौ लाग्यौ । वेद
पढ्यौ व्याकरण पढ्यौ काव्य पढ्यौ पन
रह पुराण पढ्यौ । साहीत मीमांस
न्यायसास्त्र । वैनक तर्क वैधक जोत
कपाल होत्र गज चिकच्छा । वास्त
तरव सास्त्र भणीया गुरु दक्षणा
दे आग्या मांग घरां आयौ । एक
समै हरसिध जी कै दरबार ग
यौ तहां अष्ट देवंगना पूजा करती
देखी । धूप दीप नैवैद्य षोडषोपचार
पूजा करि बाहुडी तहां एक सरो
वर थौ तै मांही पैठी । पाछे
पी बुधसेरवर उरा सरोवर महां पै
हौ राजा आ वात कही एक ब्राह्म
पास सुणी राजा उठै गयौ जाय
तलाव मांहे पैठो जाय देखै तौ
एक सरोवर छै ताकी पाल एक
देहरौ छै तहां एक तपस्वी है
सो तापै छै देवांगना जाय झ
गी रही छै । राजा आवतां देख्यौ
देवांगना साम्हीं आई । कहन लागी

चन्द्र भाग राजा पे अठे आया अब
इहां राज्य करौ राजा कहै म्हां वो
राज छोड इहां को राज कुण करै
देख्या कहै हमारौ सेवग है तद देख्या प्र
सन हुइ रत्न एक दीयौ कहौ अष्ट
महा सिध्य होय तद बिदा मांग अष्ट
हा वाहुड्या। मारग वहतां ब्राह्मण एक
महा पंडित देख्यौ तीयैं रा वस्त्र फाट्यां
देख्या। तद्दरां ब्राह्मण आसीर्वाद दे
कहण लागौ म्हाराज घणां दिन ताइ
तौ चाहतौ आज मनैं मिल्या छौ
सु दारिद्र दूर कीयौ तद राजा अष्ट रत्न
ब्राह्मण नुं दीयौ। सो पुतली कहै
राजा भोज इसौ परोपगारी हुवै
तौ इयै सिंघासण बैसे। ॥ इति श्री
सिंघासण बत्तीसी री इकवीसमी कथा
सम्पूर्ण ॥ २१॥ शुभं भवतु:॥ कल्याण
मस्तु:॥ श्रीरस्तु:॥

फेर राजा भोज मुहूर्त्त पूछ
सिंहास बैसण नुं हुवौ तद्दरां बा
ईसमी पुतली बोली अहो राजा भोज
राजा वीरविक्रमा दित्य सारखो हुवै
तौ इयै सिंघासण बैसे। तद्दरां रा
जा भोज कह्यौ राजा वीर विक्रमा
दित्य किसडो टेक हुतौ। तद्दरां पुतली
कथा कहै छै। उजैणि नगरी। राजा वीर
विक्रमादित्य राज करै। एक समीयै पुरब

दिस मुं गया आवतां थकां कामरू
देस विचै एक पर्वत तेथ सोने मय
वृक्ष तीयै है अमृत मय फल/सु
गंध मय पुह्प तीयै वन में एक
बावडी छै। ताह एक देहरौ तीयै मां
ह श्री लक्ष्मी नारायणरी मूर्ती। तेख
चक्र गदा पदम सहत पीतांबर झंगुल
ता कोस्तु भमणा थका ऊभा है चार
रिभेश्वर कर कमल जोड्यां ऊभा है।
स्तुति देवी री करै छै। वसौ राजा
दरसणा पायौ। परदिक्षणा ४ दे नै
दंडवत ४ कर स्तुति कीधी हे भगव
जिवा प्राणा आधार सरव व्यापक एक
ग मनासा कर तोनुं ध्यावै सु त्रिल
क पद बीचरणा बराबर छै। इतरै
एक तपस्वी और आयौ अक कीये
हो राजा थारै विषै राज चीत वस
ल दीसै छै सु अगम भूम
एकलौ क्युं आयौ ताहरां राजा क
मो सुख धर्म वलभ छै। जो दु
इहां आयौ तद उणा तपसी सुं राज
कही तुम पराणा देसांतर फिरा
काई अपूरब बाती देखी है
तौ कहौ। तद तपस्वी कही पूरब
दिसा की आडी एक महा पर्वत
नील है। तै परबत माहें कामाख्
देवी की देहरौ है ते देहरा अ

एक तिमर है तहां किवार दीयौ र
है है। सु कामाख्या का मंत्र कर
उघाडै छै। तीयै तिमर माहें रस
कौ कुंड छै तीयै रस की मंखुं
घणी चाहै छै। तद राजा उणा नुं
साथ ले उवै देहरै गयौ। रात उणाही
देहरै रह्या देहरै में देवी सपनै
आई। राजा तूं अठै क्युं आया जब
बतीस लखणौ पुरुष बल दीजै
तद किंवाड उघाडै। तद राजा आधी
रात हुई जाहरौ राजा उठी
यौ तपस्वी सूतौ मल्हौ राजा हि
नोन जप होम सकल करम कीया
देवी देवता का आवाहन कीया। पछै
देहर आगै खडग लै खांच्यौ थ
कौ खांचै लाग्यौ तद देवी हाथ
पकड्यौ। कह्यौ राजा चाहीजै सु
मांग ताहरां राजा कह्यौ रस सिद्ध
पाऊं देवी किवाड उघाड रस सिद्ध
दीवी। राजा रस सिद्ध ले उणा
तपस्वी नुं दीवी॥ श्लोक॥ कवचलीये
न गोत्मांग पारच्य देवी वर सिध्धि सिधि
लब्धा रता दतीखलु सघ काया। केनाम मा
नस्य च विक्रमस्य॥१॥ जिहां राजा
विक्रमादित्य आपणौ उत्मांग मस्तक बल
दान कर देवी रना रस ले परदेसी
नुं दीवी आप उजेणी आयौ। सु

राजा भोज इसौ हुवै तौ इयै सिंहासण बैसौं॥ इति सिंघासण बतीसी री बाइस मी कथा संपूर्ण ॥२२॥
हेरू दिन वले मुहूर्त जोवाय राजा अभिषेक री सारी वात एकठी कर उवै सिंघासण बैसणा नुं हुवौ तारां चैद्र मती नाम तेइसमी पुतली बोली अहो राजा भोज इयै सिंघासण राजा वीर विक्रमादित्य सारखो उदार हुवै सु बैठै। तब राजा भोज कह्यौ राजा वीर वि-क्रमादित्य किसड़ोहेक उदार राजा हुवौ तारां पुतली कथा कहै छै। उजेणी नगरी राजा वीर विक्रमादित्य राज करै सक-ल दिसा खिवै जाकी कीरति है छत्रीस राजकुली जाकी सेवा करै सकल पृथवी राजा भोगवै। प्रात काल स्नांन ध्यांन जप तप संध्या करै। देवी की पूजा कर सभा मांहे बैठै घणा उछाह नृत्य गीत देखै। अनेक दान सुवर्ण देवै तब दीन दुखी दुबल [illegible] ताकी चिंता करै। सजन सहत परवार सहत उमरावां सहत भोजन करै नाना प्रकार रा षटरस भोजन करै। कपूर सहत तांबूल आरोगै केसर कस्तूरी सों [illegible] करै नमल सुख सेजा आरोग्यां पछै वाजी गा[illegible] पौढ़ै तीसरै पहर सभा मांहे बै[illegible]

गीत ग्यांन अनेक बाजत्र हास्य करै। विनोद करै। सिंध्या समीयै सिंध्या वंदन करै। पछै सिन तत्व री साधन करै। सिनांन करै। एक समी मै राजा वीर विक्रमादित्य नुं सुपन लाधो सु। आधी रात समीयै सु पन लाधो प्रातः मुहुर्त प्रोहित सुं कह्यो मध्य रात मैं बुरो सपनो लाध्यौ तद प्रोहित बोल्यौ महाराज बुरो सपनो लाध्यौ तौ पुन्य कीजै। तब विक्रमादित्य आपरा भंडार खोल्या तीन दिन उजेराी नगरी पडहो बजा यौ जु जाके सु चाहीजै सु आंवा लेवौ अनेक विध्य दांन दीधा। धेनु द्रव्य सोनो वस्त्र पृथ्वी दांन दीया श्लोक॥ द्रष्य स्वप्न मात्रं च। भंडारं च दिन त्रयं। लुटयंति सवे लोके। श्लो विक्रम दान वत्॥२॥ तारहरा पुतली रा जा भोज सुं कही जु इण भांत इसौ उदार पणौ होय तौ तौ इण सिं घासण बैठे॥ इति सिंघासण बतीसी एवं सप्त कथा दान कथा तेवीसमी वार्ता संपूर्णं॥ २३॥

बहुड और मुहूरत सकल सामग्री एकठी कर राजा भोज सिंघासण बै ठे था तब चोवीसमी पुतली बोली अ रे राजा भोज इण सिंघासण मत

वैसे राजा विक्रमादित्य जारवो हुवै सु बैसै। राजा भोज कहै विक्रमादित्य कि सो हेक हुवौ तर टंसपदीनाम पुतली बोली। अवंती नाम नगरी राजा विक्रमादित्य राज्य करै पुरंदर पुर एक सेठ बसै सु कोडीध्वज ताके च्यार पुत्र। तब उणारी सेठ च्यार पुत्र सुं कह्यौ अहो पुत्रहो तुम माहो माहे मिल अर चालौ विरध मत करौ अर जु तुम मिलन चालौ तौ च्यार कलस सुवर्ण का छै सु। तीहां कलस मांटे बीजक लिखीयौ छै अक नांवो लिखीयौ छै। जाको नांवो जिल कलस मांहेस निकले सु ही कलस ताको बांट दीजै। हे बरा बर इसौ पुत्रहि कहि सेठ परलोक प्राप्त हुवौ। तबही पिताको कार्य कर कलस सैम संभाल्या। प्रथम कलस उघाडि संभाल्यौ तै मांहि सालका तुस है और तीनां कलसां माहे माटी खिमाड़ा हाड नीसर्‌या। तद इहां न्याय पंचायत बुझ्या सु किणाही हुं जाब नावै तद कलस लेजाय राजा वीर विक्रमादीत्य आगै मेल्हीया। अक विरतांत कह्यौ तर सभा कौ जाब नायौ। तब पंचायत अैसो कहौ। पैठांन नगर वहै राजा सालवाहन की सभा लेजावौ तद सेठका पुत्र लेगया। कलस आग

सभा मांहे मेल्या पिरा जाब कोई
न कीयौ अैसो करयौ जु बालन दोय
है। ताकी बहन विधवा है रूप वैत
है काहू सुं कुंवारी थकी भोग कीयौ
तब कारण हुवौ। ताको लोकापवाद
बहन का भायो सुनें हूं नेर परदेस
खंदाई आपुन साथ गई तद जु पै
ठान नगर आया कुंभार रै घर रह
तीहै बोमरणी कुंभार रै माता सहत
कुंभार रै चेरे है। तबही कलस
कौ वाद विवाद हुतौ तर ही प्रभात
समै राजा की सभा माहै आयौ
कलस को सरूप देखिनै कहवा लगौ
जो तुम्हारा पिता तुम्हनुं बौर दीहो

ट। सु आपकां आगे लेउ। जाके
कलस माहे माटी ताकुं सकल पृथ्वी
दीन्हीं। जाके कलस मांहे तुस ताकुं घर
ब धांन दीन्हौ। जाके कलस माहे
सोनो ताकुं सरब धातु दीन्हीं
जाके ~~[illegible]~~ कलस माहे हाड ताकुं घर
ब चौपदा दीन्हीं। म्हारे भाई बात
सुणा आपरे घरे आया। तद आ
बात राजा विक्रमादित्य सुणी नाहरां
राजा पैठांण नगरी आपरा सेवग मेल्या
जावौ सालवाहन ले आवौ तब साल
वाहन आवै नहीं तब सेठ आप रा
आ पुं कही म्हाराज सालवाहन ने

आवै। तद विक्रमादित्य कटक करि तमाम सैन्या करि पैठाणा आया। तोई सालवाहन न आयौ। तद पैठांन नगर घेर्यौ। तद सालवाहन की मामा नागराज कुमार की सेती कह्यौ अब मेरी कुरागत कहा करूं अकारज भयौ। पर वारतै निकस बाहर आयौ। ऐसे कह्यौ थौ। जब तुम कष्ट पडै तद मोनुं समरजै। हुं थारौ काम करीस। तब आय ठाढौ भयौ। तद ब्राह्मणी कह्यौ म्हारै बेटा मैं संकट बहुत पडै। तब मारी खेलणा सालवाहन कीया था। हाथी घोडा पायक घणा कर राखया था। सु समस्त संजीवन कीया। सालवाहन सेन्या कर चालयौ पैठांणा की राजा की सैन्या साथ चली अर नाग कुमार देवता साथ चलयौ। आय विक्रमादित्य युध कीयौ राजा वीर विक्रमादित्य की सैना लडी विक्रमादीत भागौ। तब रात कै समै नागकुमार आपरै पुत्र सालवाहन की पक्ष कर राजा विक्रमादित्य की सैना मुर्च्छागत भई भूम पडी। तद राजा विक्रमादित्य वासिग राजा की स्तुति करी तद वासग संतुष्ट मान होय अमृत को कलस आंण दी यौ समस्त सैन्या अमृत सुं सींची सर्व

समा सरजीत हुआ। तब राजा सालवा
हन दोय बालक खंदाया राजा वी
-क्रमादित्य आय पारथ्यो। राजेन्द्र ए
दोइ कलस अमृत का मोनुं देइ। तद
राजा ने बूझ्यौ तुम्ह कौण हौ। तब उणा
कह्यौ हम सालवाहन का खंदाया आया
छां। तब राजा औसो कह्यौ इसो वि
च्यारो। ओ वैरी खंदाया है। जो
मैं कलस अमृत का न देऊं तौ
जाचक विमुख जाय तद अमृत का
कलस दीन्हां। अपणी सेन्यां पाछा
जीवाई अर ~~[illegible]~~ बालका वैरी
का था त्यांहै अमृत का कलस पाछा
दीन्हां। राजा की स्तुति किया श्री
तद पुतली राजा भोज नु कह्यौ रा
जा भोज राजा विक्रमादित्य सारखो
उदार निःकपटी परदुख कौ काटणहार
इसौ हुवै तौ इण सिंघासण बैठो।
इति सिंघासण बत्तीसी री अमृत
कथा चौबीसमी संपूर्ण ॥२४॥
तबहि ओर मूहर्त्त राजा भोज अभि
षेक सामग्री भेली कर सिंघासण
बैठ था तब पचीसमी पुतली बो
ली हो राजा तुम राजा विक्रमादित्य
सारखो महा उदार परमारथी होय
तौ इसै सिंघासण बैसे। ताहरां
राजा भोज कह्यौ राजा वीर विक्रमादित्य

किसको हेक हुवौ। बाहरी पुतली कथा कहै छै। उज्जैणी नगरी राजा वीर विक्रमादित्य राज्य करे राज्य करतां एकै समीयै एक सकल शास्त्र प्रवीणा जोशी आय राजा पास ऊभो रह्यो। राजा नु आशीस दीवी तद नमस्कार कर पूछीयौ। तुम कहा गुणा जाणो हौ। तद जोशी बोल्यौ मैं ज्योतिष जाणूं छौ। आगम जाणूं तारा मंडली की बात जाणूं। सामुद्रक जाणूं। न्याय प्रमाण शास्त्र जाणूं। अर जे कौ बेद पाठ अंग स्फुर का लक्षण जाणौं। अर तिका ही राजा पूछै सु बात जाणूं अर कहूं। तद राजा कही मैं एक पूछा चित लई है। जैसा मे होली क न होय। तद ज्योतिषी बोल्यौ हे राजन बारह बरस को महाकाल पडसी। मेह की अनावृष्टी होसी तद राजा बोल्यौ हो ज्योतिषी प्रजा दुख पासी अर चतु ध्यद समस्त दुखी हुसी। हो ज्योतिषी म्हारै राज अन काइ नहीं। कहीयै आज तांई रागद्वेष नहीं' धौ कूड कोई न बोलै थो। चोरी कोई न करे थो। मेघ न बरसै सु किसै करौ। तद जोतषी कह्यौ होम जग्य करौ। राजा ब्राह्मणा बुला सौंपाबी पदम राणा दीन्हीं। अपकराय होम करीयौ।

परा मेघ वृष्टि न होय तद राजा कै
मन मैं घणी चिंता ऊपनी। तद
आकास बाणी हुई कै जो बतीस
लखणौ पुरुष बल देवौ तौ वृष्टि हो
य। तद राजा ने खडग ले आपणौ कंठ
छेदवा लागौ। तब मेघमाली दौडि
राजा रौ हाथ पकड्यौ। मेघमाला बो
हो राजा तूं मांग हूं तूठ्यौ तद राजा
बोल्यौ दुर्भिक्ष मेटो। मेह बरसावौ
जो तुम प्रसन हुवा तौ म्हारी प्र
जा सुख पावै तद मेघमाली दे
वता आज्ञा दीन्हीं। मेघ वरसवा
लागौ काल भागौ। सुभिक्ष हुवौ।
श्लोक॥ नैमित केनोक्त महोति दुष्टे। दुर्भि
ता अब्दस वर्ष भावे। सुतास्य देहेव
यतोर्ध पूजा। श्री विक्रमेणाप्य ततः प्रजा
र्थे॥ १॥ अर्थ॥ नैमित औसौ कहौ
जु बारह वरस दुरभक्ष होसी तब
राजा तब विक्रमादित्य साहसीक मनु प्र
जा कै निमित्त आपणौ सरीरघौ लो
देवताहै समर्प्यौ। पूतली कहै हो राजा
भोज तुम इसौ प्रजा पालक इसौ
पर उपगारी होय तौ इणा सिं
घासण बैसौ॥ इति सिंघासण ब
तीसी प्रजा निमित्त मेघ वर्षा की कथा
पचीसमी संपूर्णं॥ २५॥
औव छ्टर्त्त देश अतिबेक की सकल

वस्तु मंगाय राजा भोज सिंघासण बैठ
वा लागौ तब छवीसमी पुतली चंपक
माला नाम ज्या बोली । हो राजा भोज
तूं राजा विक्रमादित सारखो उदार चित
होय तौ इण सिंघासणा बैठे। तद
राजा भोज कह्यौ राजा वीर विक्रमादित
कांई उदार पणौ कीयौ तद पूतली
कहै छै। उजेणी नगरी राजा वि
क्रमादित राज करै । एक दिन राजा
असवार हुइ वनखंड गयौ जहां वन
के दोय देवता ब्राह्मण दुरबल के
सि ब करि राजा हे पुकारा हो मार
हीक प्रकब हमारी गाय कीच कादा मैं
गड नही तब राजा कही कहां
है तब कही तलाव मैं है
औसो कह्यौ राजा नै देवता एक
गाय को रूप कर कीच मढो रा
मै है। तब गाय राजा नै रांभली
सांभली अर राजा गयौ गाय देखी
राजा घोड़ै तैं उतर्यौ गारा मैं
गाय है काढवा लागौ। तब दूसरै
देवता सिंह कौ रूप कीयौ
जा मन मोह चीज कर इसौ चीतं
वौ ए गाय दुरबल ब्राह्मण देख
छोड भाग तौ सिंघमार राजा कौ
धर्म नहीं । हु गाय कौ बध देखौ
नौतरै। ए चुकतौ नहीं अब राजा

अडोलौ देख देवता आपरौ रूप धरि स्तुति करबा लागा। हो राजा महा बली हम वन के देवता प्रसन्न भया। तुम वर मांगौ तद राजा कह्यौ तुम्हा रो दरसन पायौ सु म्हें मोटो वर दीयौ। तब दुवुं देवता कामधेन दीन्हीं राजा लीवी। राजा घरे आवै लागा। खेडा मांह एक दलिद्री ब्राह्मण प्रार्थ ना कीधी। हो राजा म्हारौ दारद्र मेट। ताहरां कामधेनुं उवै ब्राह्मण नुं दीधी। इसी कही ज्या कोई मन की कामना होइसी तिका कामधेन देसी। ब्राह्मण नुं डंडवत करि राजा विदा दीधा। राजा आपरौ घरे पधारया तब पूतली बोली। राजा भोज इसौ उदार होय तौ इण सिंघासण बैठौ इति श्री सिंघासण बतीसी वनदेवता कामधेन ब्राह्मण समर्पण छाबीसमी कथा संपूर्ण॥ २६॥

और महूर्त्त देख सकल सामग्री अभिषेक तिलक की सामग्री मंगाय राजा भोज सिंघासण बैठवा लागा। तब चंद्र कांति नाम पूतली बोली। हो रा जा भोज तूं राजा विक्रमादित्य सा रखा उदार होय परमार्थी होय तौ इयै सिंघासण बैसजे॥ तब राजा भोज कहो राजा विक्रमादित्य कांई उदार

पराँ कीयौ। तद इतली बोली राजा विक्रमा दित्य उजेणी राज करै अरु ता नगरी मांहे धर्मी लोग वसै। नगरी मांहे सात विसनी वसै। एक विसनी जुवा खेलै: दूसरौ विसनी मांस भखै। तीसरौ विसनी मद पीवै: चौथो विसनी वेस्या हूं सेवै: पांचमो विसनी चोरी करै छठो विसनी अहेड खेलै। सात मो विस्नी परत्री गमन करै। तब राजा विक्रमादित्य देस देखतौ फिरै छै। एक नगर गयौ ताहरां एक देहरौ देख्यौ देखौ आगीयौ ताहरां देहरै मांहे एक परदेसी बैठो राजा देख मन मैं विचार्यौ जै कोई धूर्त छै। तबही एक खरा रह्यौ आदित्य हुवौ। दूसरै दिन जुवारां वस्त्र पैहर लगोटी पैहर माथै लीरी बांध्या। विक्रमा दित्य नखे आयौ। तब राजा औ पुरूष नै बूझ्यौ तुम कोण हो तब औ पुरुष बोल्यौ हुं जुवारी हुं मैं जूवौ खेल सरब धन हार्यौ अरु जुवा देहरा हुं जुवारी सेवे। तब राजा बोल्या तुम कुंवरा जूवा खे ल्या जूवा खेल धन चाहै। अरु सेवा कर मान चाहै। भीख भोग अरु भोग चाहै। ए तीने देव का

का वेच्या मूरख है। रे जुवारी
कह्यौ तूं ख्वा मत खेले। तद जुवारी
कह्यौ जु तुम उपगारी हो तौ एक
कारज म्हारौ करौ। तब राजा ऐसो
कह्यौ जु तुम ज्वा न खेलौ तौ
मै तुम्हारौ कारज करौं। तब उना
कह्यौ मैं ज्वा को अभ्यास मेल्यो
तब राजा कह्यौ थारौ कारज कहि
कांई है। तब जुवारी बोल्यौ हो
राजा रतन सिखर परबत तिहां देवी
कौ देहरौ है: ता देवी को नाम
सिध देवी है: ताहवां देहरा को
किंवाड खिण उघड़े खिण जड़ि जाइ।
तिहां स्वल देवी है जु आपणौ मस्त
क कटि पूजा करै। तबही देवी
तिहं पुरुष प्रसन होइ। जु मांगै
सु देइ। तबही राजा उना पुरुष
नुं लै साथ ले चाल्या। तहां ग
या। जलां जाय स्नान करि देवी
पूजा की मस्तक छेदवा लाग्यौ त
देवी राजा रौ हाथ पकड़्यौ। देवी
प्रसन हुई राजानुं रसायण दीन्ही। त
ब राजा रसायण ले जुवारी नुं
दीयौ। जुवारी नुं बिदा कीयौ। राजा
देवी रा पगां धोक दे सीख मांग
राजा घरां पधारया। इतली कही राजा
भोज तूं इसौ परमार्थी उदार होइ

बौ इरण सिंघासरण बैसौ॥ इति सिंघा
सण बतीसी री सताइसमी कथा संपूर्ण॥२७॥
त्यापी और महूर्त देख राजा
भोज अभिषेक री सामग्री कर राजा
सिंघासण बैठण लागो तद रूपरेखा नाम
अठाइसमी पुतली बोली। हो राजा
भोज तूं राजा विक्रमादित्य सारखो
उदार परदुख रौ काटण हार इसौ
परमारथी होय तौ इयै सिंघासण
बैसे॥ तद राजा भोज कहै किसौ
उदार पणौ कीयौ। पुतली कहै है
अवंती नाम नगरी। राजा विक्रमा
दित्य राज करै एक समै राजा
देसांत देखतौ फिरै थो। तहां
एक पुरुष राजा है मिल्यौ। राजा
बूझ्यौ हो परदेसी काई बात कहै
अपूरब जराति देखी होय सु कहो।
तद औ पुरुष राजा सुं कहै छै
हो पुरुष राजा। स्वामिन पूरब देस
कै विषै ताल नाम नगरी
तिहां तपिता नाम देवी है। सु
एक मनुष्य नित प्राते भक्षण करै
तब उहिं देस का लोक परदेस
को लोक पकड़ लावै अर वेचै मो
ल लै अपणौ बदलै बलि देहै
तब उवा देस हू गयौ हो तब
उवा देस के आदमी मोकुं पकड़ण

जुं दोड्या थे। तब मैं भाग कूरा परम
कष्ट करि चले आयौ। तब आ बात
सुणी राजा बेताल नगरी आयौ तब
राजा देखै तौ कोई एक परदेसी नु देवी
नुं बलदेवा साक सिनांन करायौ छै।
गलै माला मेल्ही छै अनेक बाजत्र बा
जै छै। घणां उछाह सुं देवी आग
ल ले गया छै। इसौ प्रस्ताव देख
राजा वीर विक्रमादित्य मनमैं घणीं
दया आई। इसी कही. भलां है लोका
हुं आपणा सुख कै कारण महा
पुरुष परदेसी बल द्यौ छौ सु
भली न करौ छौ। अर देवी कौ
देखत जोवौ जो मनुष्य को बल
मांगै। तब राजा विक्रमादित्य लोकां
नुं कह्यौ रे लोकां इण बापड़ै रांक
नुं छोड़ौ अर मोहे बल द्यौ मैं
मोटो पुरुष मेरी काया है तब
सकल लोक विसमय होइ या
कही। जे औ कोई सत्पुरुष है सु
मार्गी है। धन्य औ जिसा है
आपणौ देह विद्या सौ अथवा केरा
क्रम कै बल कहतु है तब राजा
इह पुरुष कां बंधन था सु खड्ग
सुं काट्या अर आपरौ कंठ छेदवा
लागौ तद देवी नै राजा कौ हाथ
पकड़्यौ संतुष्ट मान हुई अर कह्यौ

BITS PILANI (RAJ)

कहहावो बुलवायौ तबही वाको मस्तक मुंड चुरा लगाय अर भखौ। तब काग का पग को आकार च्यक्षौ चून माहे। ताके प्रभाव ए काली बैचे है तब जोसी सेती राजा कहै औ ही यह नारा गावाँ क्या और भी जाणों तब जोसी कह्यौ हो राजेंद्र राजा कै वाम अंग आंत काबली है तिणा मांह सामुद्रिक का सकल लछण होय। तब राजा कटारी कर पेट चीर्यौ। बाई दिसा की आंतडी बाढै नीसनी तब पेट सिवायौ तब जोसी है सह त्र मोहर अखूट दीधी। तद पूत ली कहै के हो राजा तूं इसडौ उदार अर साहसीक होय तौ इणा सिंघासण बैठे। इति सिंघासण बत्तीसी बालरा सामुद्रिक की कथा पुराणी तणी संपूर्णं ॥२९॥

बहुड फेर शुभ मूहर्त देख सक ल सामग्री एकठी कराय सिंघासण बैठवा नुं हुवौ इतरै तीसमी पुत ली बोली हो राजा भोज तूं राजा वीर विक्रमादित्य सारखो होइ तौ इणै सिंघासण बैठे। राजा भोज कह्यौ वीर विक्रमादित्य किसडो हेक हुतौ तद पूतली कथा कहै छै उजेणी नगरी राजा वीर विक्रमादित्य

राज करै। एक समै विषै राजा
कै दरबार कलावंत आयौ तब दुवार
पाल आय कह्यौ राजा जी एक कला
वंत आयौ है। तब राजा हुकम
कीयौ आबा देहु। जब कलावंत
जाय अलाठ दीयौ दीयौ राज सूं क
ह्यौ राजा जी देखौ तौ एक कला
दिखलाऊं। तब राजा सकल सभा मांहे
बैठौ तबही कलावंत बुलवायौ। ऐसो
कह्यौ हो कलावंत आपणी कला दे
खावो। तिरा प्रस्तावै और पुरुष
साथै एक आयौ एक स्त्री है लीयां
आयौ स्त्री महा रूप पात्र अप
छरा समान जां ...... आयौ अरु
खडग हाथ कै विषै ताको देख
सकल सभा को आश्चर्य ...... टीरा
जा है नमस्कार कर स्त्री सहत
पुरुष है बोलबा लागौ हो राजें
द्र .... मा सार कै विसै एक स्त्री
साक अरु लक्ष्मी औ दोनुं वाल
जली मे लीन जा ...... के विस्या
न आयौ। पुनहो पर स्त्री पराङ्मुख
होय। इंन्द्र को सेवक हूं सज्य...
...... जब ही काम होय तबही
स्वर्ग जाय आऊं। अब मो हूं
कार्य भयो है ...... दित्य को या
या अस्त्री मेरी राखज्यौ। राजा साहब

जी। स्त्री हे राजा नरवे मेल के .... —
.... विषै गयौ वेताल राजा आगै
बाढौ है तब महूरत एक भयौ तब
..... ते पड्यौ तब सिरा एक
पुरुष अंतर नगत्र सरीर आय पड्यौ।
तब तिट की .... राजा सों कही। हो
राजेंद्र तुम हमारा भाई हौ ए
हमारा भरतार सु केटी खंड खंड करि
डार्यौ सु याके साथ सती होसुं। तब
ही राजा वा स्त्री ते बरजी। तब उवा
स्त्री आपणा भरतार के खंड खंड एकठे
करि अगन प्रवेस कीयौ। राजा स्त्री
को घणो सोक कीयौ तिहि प्रत
थाय उह पुरुष राज सभा मांहे
गाढो आंवता भयौ। स्वामी तुम्हारा ज
सादसे हमारा कारज सिद्ध हुवौ हमा
री स्त्री हमकुं देवौ तब राजा
विक्रमादित्य सकल सभा समेत दुख
अरु आचरज भयौ। तब उवै पुरु
ष राजा नुं कही जु हमारी स्त्री
राजा कै अंतःपुर मांहे छै। तब
उवै पुरुष राजा कुं कह्यौ जु हमा
री स्त्री थी। तब राजा कही अं
तः पुरमें है तौ ले आवौ तब ही
उवै पुरुष राजा कै अंतःपुर महां
से आपकी स्त्री ले आयौ सभा
मांही आंवता ऊभौ रह्यौ या वात

देख राजा लजायमान हुवौ तब औ
बोल्यौ हो राजा यो हमारी इंद्रजाल
विद्या है तुम दुख मत मानो तब
राजा वेताल नुं प्रसन्न होय कही
पांडु देस कोलम सुत द्रव्य को निख
प आठ मणा सोनो आयौ यौ सु
दीयौ बेताल को अंबीच मोती प
चास मणा मनोदमंत वदे हस्ती
सकल श्रृंगार सर्वाभरण भूषिता एक
सौ वेस्या एती वस्तु वेताल नुं एको
दिन दीन्हीं। वेताल सब द्रव्य काम
सेना वेस्या नुं खायौ थोड़ा दिनां
मांहि तबही बेताल राजा विक्रमादित्य
नुं आय जुहाड दीयौ। हो राजा
थारा नगर मांहि सुष्यो तब राजा
बूझ्यौ तुम्हें कौण सुस्या। तब
बेताल गाथा कही ॥ गाथा ॥ उर अंतर
बाहुलया: स्तन गिर रौ मराम तन गहे
ने सुर नर गंध्रवो। उरा नीया मेरा
चोरेवा।१॥ हिदय ऊपर कुच कपीया
परबत छै कुचां विचै खाली छै।
सु मानो बाहलो छै रोमराय छै
सु वनस्पती छै तहां मदन काम
देव कपीयो चोर सु तहां नास है
सु तीयै चोर हुंटीया। तब राजा खुसी
होय जेता वेस्या के घर लक्ष्मी खाई
थी तेती बहुरि दीन्हीं। वेस्या प्रसा

जी। स्त्री हे राजा नरवे मेल के .... —
.... विधै जगौ वेताल राजा आगै
बाढौ है सब महूरत एक भयौ तब
..... ते पड्यौ तब विराट एक
वृक्ष अंतर समान सरीर आय पड्यौ।
तब त्रिय की .... राजा सौं कही। हो
राजेंद्र तुम हमारा भाई हौ ए
हमारा भरतार सु केटी खंड खंड करि
डाल्यौ सु याके साथ सती होसुं। तब
ही राजा वा स्त्री ते बरजी। तब उणा
स्त्री आपरणा भरतार के खंड खंड एकठे
करि अगन प्रवेस कीयौ। राजा स्त्री
को घणो सोक कीयौ तिहि प्रस
थाय उह पुरुष राज सभा मांहे
जडो आंवता भयौ। स्वामी तुम्हारा प्र
साद सें हमारा कारज सिद्ध हुवौ हमा
री स्त्री हम कुं देवौ तब राजा
विक्रमादित्य सकल सभा समेत दुख
अरु आचरज भयौ। तब उवै पुरु
ष राजा नुं कही जु हमारी स्त्री
राजा कै अंतःपुर मांटे छै। तब
उवै पुरुष राजा कुं कह्यौ जु हमा
री स्त्री थी। तब राजा कही अं
तः पुरमें है तौ ले आवौ तब ही
उवै पुरुष राजा कै अंतःपुर मतां
से आपकी स्त्री ले आयौ सभा
मांही आंवता ऊभौ रह्यौ या वात

देख राजा लजायमान हुवौ तब औ
बोल्यौ हो राजा यो हमारी इन्साल
विद्या है तुम दुख मत मानो तब
राजा वेताल नुं प्रसन्न होय कही
पांडु देस कोलम पुत द्रव्य को लिख
प आठ भरा सोनो आयौ यौ पु
दीयौ वेताल को अंबीच्च मोती प
चास भरा मनोरमैत वेद हस्ती
सकल शृंगार सर्वाभरण भूषित बरु
तौ वेस्या एती वस्तु वेताल नुं एको
दिन दीन्ही । वेताल सरब द्रव्य काम
सेना वेस्या सुं स्वायौ ओजा दियो

मांहि तबही बेताल ... दीयौ। हो राजा

तुं आप बलाउ दीयौ। हो राजा

सारा नगर मांहि सुण्यो तब राजा

बूझ्यौ तुम्हें कौरण सुण्या। तब

बेताल गाथा कही ॥ गाथा ॥ उर अंतर

बाहुलया: स्तन गिर रो मराय तन गए

ने सुर नर गेयवती। जरा गीया मेता

चोरेवरा। ॥१॥ हिदय ऊपर कुच कपीया

परबत छै कुचां बिचै बवाली छै।

सु मानो बाहलो छै रोमराय छै

सु बनस्पती छै कहां मदन काम

देव कपीयौ चोर सु तहां नास है

सु तीयै चोर हुंटीया। तब राजा खुशी

होय जेता वेस्या के घर लक्ष्मी लाई

थी तेती बहुडि दीन्ही। वेस्या परा

बजाही तव पुतली कहै छै हो राजा भोज तूं राजा विक्रमादित्य सारखो पर दुख कारण हार होय तौ इण सिंघासण बैसे। इति श्री सिंघासण बतीसी की कथा तीसवी संपूर्ण॥३०॥

तले राजा भोज शुभ महूर्त्त सकल अभिषेक की सामग्री एकठी कर सिंघासण बैठण नुं हुवौ इतरै पद्मावती नाम इकतीसमी पुतली बोली अहो राजा भोज जे तूं राजा वीर विक्रमादित्य सारखो परदुखवो कारण हार होय तौ इण सिंघासण बैठै। तब राजा भोज कह्यौ राजा वीर विक्रमादित्य किसडो हेत हुतौ। तद पुतली कथा कहै छै। उजेणी नगरी राजा वीर विक्रमादित्य राज्य करै अवंती नगरी माहें दंतल नामे सेठ हुतौ जाकै लक्ष्मी घणी पण सेरव्या न जावौ लक्ष्मी की ताको बेटो सोमदत्त नाम ताको नवो मंदिर करावणौ मांड्यौ जब पुष्यार्क आ तब नीम दीधी। जब पुष्य अ यौ तब चेजो चलायौ विदक्षण द्वार तोरण साल थंभा स्थिल नितिचित्र आंगन किवाड आगल ची डी। हाथी का दांत का बरणा। का निवास। वज्र की थूंभ बांध

शब्द हो वाकीया। साहनुं नींद पड़ी
नहीं। प्रभात साह राजा पास ग
यौ राजाकुं रात की देवबाणी कही।
राजा विक्रमादित्य ~~ना~~ या वात सुण
चिंतवा लागौ। ~~कु~~ तब राजा साह
तेती कहै कोई उद्यम कीजै नाहीं
राजा कह्यौ हो सोमदत्त साह जौ
कछु तुम्हारो द्रव्य लागौ सु हम
पासैं लेउ अर घर हमानुं देउ। औ
सी वात सुण सेठ हरषत हुवौ जि
हि घरतै प्राणपुर त्याग होय सु
घर कांई कीजै तद सेठ कागल
मंगाय लेखो कर जौ कोई द्रव्य
लागौ हो सु सेठ कुं दीयौ। राजा

सुवर्ण का खांभा रत्न जडत अनेक
रचना । एक सघन ग्रह । एक गडुम्भ
स्थानं ऊपर पेच वर्ण । चूंड्या ध्वजा
रथ साला अश्व साला दन्त साला औ
सो विचित्र ग्रह समरायौ । तब सुभा
कि योगे ग्रह प्रवेस कीयौ । रातकै सौ
जब पालक सयन कर्बा लागौ तब
आकास बाणी हुई । जु मन पडौं पा
डौं । तब एक वचन सुनौं । तद फेर
पडौं पडौं सबद हुवौ । तब ताटस्थ
सै डरीयौ । तब चिहुं दिसा देख
वा लागौ तब दीसै कोई नथी ।

विक्रमादित्य नुं सेठ घर दीयौ। तब राजा संध्या समै घरां दान पुन्य पूजा करि राजा घरमांहे डेरो कीयौ लोक समस्त राजा नुं वरजै। राजा किहीं कौ कह्यौ न करै राजा सेठ कै घर मांहे एकलौ रहै। आपरौ बल पराक्रमे करि तहां पालीखीं जाय सूतौ। तब रात्र कै समै पडौं पडौं को शब्द करयौ। ता तवां राजा कही पडौं पडौं कांई करै वेगो पड़। तब देवता राजा ऊपर फूलां नी वृषा कीधी। देवता प्रसन होय सोनै कौ पोरसो पड़ौ तब राजासौं आपरौ प्रभाव कहि अदृष्ट हुवौ। तब राजा प्रभाते सेठ बुलायौ। एलो थारा घर लेउ अर औ थारै घर निमित्त पोरसो सोने को दीन्हों सु तुम्ह लेउ। तब राजा सेठ कुं घर अर पोरसो दे आपरौ ठिकांणौ आयौ। पुतली कहै छै तो राजा भोज तूं इसौ होय तौ इण सिंघासण बैठे॥ इति श्री सिंघासण बत्तीसी की सेठ सोमदत्त की इकतीसमी कथा संपूर्णं ॥३१॥

वाहुड राजा भोज मूहूर्त्त देख सर्व सामग्री एकठी कर आंभषेक लेय संघासण बैठवा लागौ तब पद्म कांत नाम बत्तीसमी पुतली बोली

हे राजा भोज तूं राजा वीर विक्रमादित्य
सारखो उदार परमार्थी परदुखभंजण हो
य तौ इयै सिंघासण बैठे। तब राजा
भोज कह्यौ राजा वीर विक्रमादित्य काई
उदार पणौ कीयौ सु कहो। तब पूतली
कहै उजेणी नगरी मे राजा वीर विक्रमा
दित्य राज्य करै सु राजा रै आ प्र
तग्या तिणा स्याम कांई चीज बिकै सु
बिकै पाछै वास्त रहै सु कोठार ली
जै अरणीं सुं दाम कोठार सुं
गिरवईजै / सु एक व्योपारी गाडो पात
पत्थर एक दुलद्र इसौ नाम को
आयौ जो बाजारमें कहै सु दलद्र
रौ पूतलौ छै जो कोई लेवै तौ
तिणा केई लीयौ नहीं / तब दरोगे
यौ बसत लेवणा रौ सु राजा
सुं अरज मालम कीवी दलद्र रौ
पूतलौ बिकाऊ आयौ सु विकीयौ
नहीं बाजार मैं खडौ छै हुकम
हुकम छै / तब राजा फुरमायौ मो
ल लेवौ तब दरोगै कह्यौ दल
द्र छै / तब राजा कह्यौ भावे
सुं हुवौ म्हारी प्रतग्या छै सु
तौ मिटै नहीं तद पूतलौ मोल
लीयौ कोठार राखीयौ व्योपारी दाम
ले घरे गयौ / रात राजा पौढीयौ
तौ तब लछमी दिव्य रूप धर आभरण

पहर राजा आजी हाडी हुई / राजा क
ह्यौ तूं कौरा छै कह्यौ लक्ष्मी हुं
कहौ थे कुंवरा कांम आया छो / नद स
दनी कह्यौ थे दालिद्र मोल लीयौ म्हे
न रहां: कहो जी पधारो पहर १ हुवौ
इतरै पुरुष को रूप कर साहस आ
यौ पुछीयौ थे कुंवरा कह्यौ जी म्हे
साहस कह्यौ थे कुंवरा कांम आया
कह्यौ जी म्हानुं विदा द्यो कह्यौ म्हुं
कह्यौ थां दलद्र मोल लीयौ म्हे न
रहां तौ कह्यौ पधारौ ताहरां
साहस हीजायौ ताहरां पोहर एक हुवौ
ताहरां पुरुष रौ रूप कर विवेक
आयौ पुछीयौ थे कुंवरा छौ / कह्यौ
जी हुं विवेक हुं जेथ दालिद्र
तेथ विवेक न रहै ताहरां कह्यौ
जी पधारौ / चोथौ पोहर रात रही
ताहरां पुरुष रौ रूप कर सत्य
आयौ / राजा पुछीयौ तुम कौंण हो
कह्यौ जी हूं सत्य छुं कह्यौ म्हुं
आपे कह्यौ जी थां दालिद्र मोल ली
यौ तैरुं लक्ष्मी ही गई साहस ही
गयौ विवेक ही गयौ ताहरां हुं
क्युं रहूं ताहरां . राजा कह्यौ तुम
क्युं जावौ इतरा कारज हम कु
पावै स्वंरा रे पगां कीयां छै
मु थे मतां जावौ तब सत्य कह्यौ

रह्यौ राजा कह्यौ तूं जया तो पाछै
मनुष्य में कांई नहै। श्लोक॥ प्रथात
लक्ष्मी च पलस्व भावा: गुरो विमेक
प्रमुखा यातु प्राणा स्व यधेनु कृत
प्रयांणा: मया तु सत्यं तु कृतं नरा
णां ॥१॥ तब सत्य पास लक्ष्मी साहत
विमेक आया कह्यौ राजा धर्मन्द
पास म्हारौं रहनों नहीं हुवै तै इयै
नुं कहीं पासै श्री आग्या देवौ
तब राजा कही कहो की आज्ञा दे
के। तब सत्य कही उवा दलन्द
सुं कह्यौ अठै उ ठैह तठै मेल्हौ।
तब र दूसरै दिन राजा आइ रिघ
कर लह्यौ पूतौ ताटरां दलद मैलो
कुचाल कप सुं आयौ तब राजा
पुछीयौ तुम कौंण छौ। तब उन
कही हुं दलद्र सुं तब राजा कही
तुम्हारी उत्पत कहौ। तब दलद
कह्यौ जब नवग्रह रावण रोवण
बंधी रवानै दीयै तब उवा सब
आपकै डील को मैल उतार मोनुं
बणायौ रावण कै नगर के दरवाजै
राख्यौ। शनीश्चर कै मेरे नेत्र बणौ
राहु के मैल को मुख बण्यौ केत
के मैल कौ मेरे चरण बण्यौ औ
ती के मैल के मेरे अंग बणौ
सु जहां जहां मेरी दृष्ट पडी ठठौ

तहां मैं सफल्ल नक्त कौ नास कर्यो।
दुःख मिष्ट करी नास राजकौ कयौ
तब बभीषण कुं राज तिलक हुवौ तब
श्री रामजी आग्या कर मोकुं समुद्र
के पार दाक्षिण दिसा नाख्यौ तब
ते हुं दक्षिण के देस रहौ। बब
तालां अब श्री महा सिवजी की आ
ज्ञा भई जु इहां दरिद्र है सु
कहां जाय बैठो ज्युं इहां लक्ष्मी
कौ निवास हुवै। तब साहूकारा
चेलां हुइ मोकु इहां आय बेच्यौ
तब राजा कही अब तुम कहां
रहौगे। इहां तौ तुम्हारौ रिझाव नहीं
जहां तुम कहौ तहां पहुंचावां।ता
हवां दलद्र कह्यौ जहां अत लोभ
तहां मेरो वास। तब प्रात समै
राजा असवार हुइ दलद्र कुं गाडै
घात लीयौ उतर दिसा कुं चले
चले मरुस्थल देस कुं आये तहां
एक डोकरी लकडी चुगै थी। तब
उन पृछीयौ औ सत्य है।
है। तब आगै वालों किन को
जु राजा वीर बिक्रमादित्य रो छै।
परदुखव रौ कारण। टार छै ज्युं
कुटि चाहिजै सु देवै छै। तब
डोकरी बोली औसो दातार है तौ
औ डेहर मोकुं चोरंग लक्ष्मी

अर देवौ। तब राजा ऊ डेरह घोडे ऊंठ गाय भैंस गधा बकरी गाडर स ब भेला कर ऊ डेरह अर दीयौ। उठां दलद्र कुं रखवीयौ दोलो गढ इरवाय नाम सिध सिकुपुर देय राजा पाछौ आयौ हरष उछव हुवौ तब रात्र कै विषै सत्य साहस विवेक लछमी आया आसीस दीन्ही तब विवेक बो ल्यौ ॥ दूहा ॥ सत्य मता छाडे हो नृप ता सत छाड्यां पत जाय सतकी बाधी लछमी बहुरि मिलेगी आय ॥ १॥ तब साहस बोल्यौ ॥ दूहौ ॥ सत मत छाडे मित्र तुलब चवगणी होय। सु खदुख रेखा करम की टारी टरै न होय। २॥ इव श्रीरज देय आसी सदेय आपरै ठिकांणौ गया। पुतली कहै हो राजा भोज तूं इसौ सत वंत होय उदार होय विविकी होय सत्ती होय। तो इणा सिंघासण बैसे। इति सिंघासण बतीसी री बती समी कथा संपूरणं॥ ३२॥

इसी जे चंद्रकांता नरणी री पुतली बतीसही राजा भोज की सभा मांहे राजा विक्रमादित्य का गुणा कहि करि आपणौ रूप फेरुौ अनेक वस्त्र आ भरणा पहिर पार जातग की माला पहिर बतीसां ही देवंगनां को रूप

कीयौ राजा भोज की सभा मैं प्रतख होय अर या कही। हम तुम्हारे प्रसाद थी सराप ती मुक्त हुई। तब राजा भोज देवंगनां है बुझी। ये प्रथम कौरा की कठाय्वी सराप हुवौ कौरौ दीयौ अर सराप थी मुक्त स्यु कर हुई। तब देवांगना राजा सुं कहै है। एकदा प्रस्ताव नंदन वन महां एक तपस्वी देखि वै म्हे हंसी तब राजा इंद्र हमकुं हंसती देख सराप दीयौ तुम पाखांणा मय पुतली होवौ तब हम कही पुतली हुस्यां परा तुम्हारे सिंघासरा के निकट रहिस्यां अर स्वामी हमारौ सराप कदि मोख हुसी। तब राजा इंद्र कह्यौ तुम हमसा सिंघासरा दौली रहौ। यो सिंघासरा राजा विक्रमादित्य हे देस्यो तब राजा विक्रमादित्य सांत हुसी तद सिंघासरा पृथ्वी महां गडिसी पछै कितरे हेके बरसे औ सिंघासरा राजा भोज काढसी सभा माहें मेल्हीस तहां तुम राजा विक्रमादित्य की कथा कीर्ति कहिस्यौ तहां तुम्हारौ सराप जासी ये देवांगना के रूप हुस्यौ सु तुम्हारे प्रताप से सब बतीसां रो उद्धार हुवौ। हम संतुष्ट हुई तुम वर मांगौ राजा भोज कह्यौ हम क्षत्री हां कही पास मांगा नहीं तुम्हारे प्रसाद ते हमारे सब कुछ है। हम्हारो मांगवा को धर्म नही। राजा भोज कै आगै राजा विक्रमादित्य कौ चरित्र देवांगना कह्यौ। यो चरित्र कोई पढै सुणै सुणा वै तिहि पुरुष रै कीर्ति धीरज पराक्रम लक्ष्मी की प्राप्त होय। इह वात कहि देवांगना स्वर्ग के विषै गई। राजा भोज राज करवो भोगवै लागा॥ इति सिंघासण बतीसी की कथा समाप्त॥

श्री गणेशाय नमः ॥ अथ खीची गंगे
व नींबावत री दोपहरो लिख्यते ॥
गंगेव खीची कां गें यडां किवाड़ः वीयां जडा
उपाड़ः जिरागढ़ी सेल कहूं बणाय । सुणते
या मन प्रसन थाय ॥१॥ वरषारितु लागी:
झहरा जागी: आभा झरहरे: बींजां आवा
स करै: नदी ठेबां खावै: समुद्र न
समावै: पहाड़ां पारवर पडी: धरा ऊप
डी: मोर सोर मंडै: इंद्र धार न
खंडै: आभो गाजै: सारंग बाजै: द्वादस
मेघ ने हुवो हुवो: सु दुरवधारी री
आंख डुई: हुवो: झड लागो: पृथ्वी रो
दलद्र भागो: दादुर डहिडहे: सावंरा
ओघण वेरी मिध कहै: इतौ समीयौ
वण रह्यौ छै: वरखा मंड नै रही
छै वीजली झलोमल करै नै रही छै:
बादलां झड लागौ छै: सेहरां सेहरां
बीज चमक नै रही छै: आंबां कुल
रा नामका धरती नीसर अंग दिखा
य हसनै घर प्रवेस करै छै। मोर कु
हुकै छै: डेडरा डहकै छै: आखरां
रा नाला बोल नै रह्या छै: पा
णी नाडा भर नै रहा छै: चोकडीया
ल उतक नै रह्या छै। वनस्पती सुं
बेलां लपट न रही छै: परभात रौ
पोहर छै: गाज आवाज हुय नै रही
छै: आंबां धरा, धरां हरख सुं

जमीन सुं मिलवा नुं आई छै: इसै
वखत समीये मैं जेगेव नीबावत बोले
छै। मन री उमग खोले छै: सैला ति
कारां रो दूवो हूवौ छै: भाई उम
रावां सांटरणीयां नुं हुकम हुवो छै:
तैयारी कीजै छै: मन भावणीया रवीया
र पोसाख लीजै छै: घोडा दरी
कटोल सुं लंपाडायजै छै: फेर ऊजले
पांणी न्हाय जै छै। हजार घोडा वै
यार कीजै छै।: ओकडां लगाम
दीजै छै: सु घोडा कुरा जात रा
छै: कुरा रंगभांत रा छै: औराकी: आ
रबी: तुरकी: खंधारी: ताजी सिकारपु
री: घारी काच्छी मालवी: खबलांनी
पुरबी: टांघड: पहाडी: चीन्हाइ ओ
टी अनेक जात रा घोडा तैयार कीजै
छै कुमेत: नीला: समदा: मकडा: सेली
समंद: भुवर: बोर: सोनेरी कागडा: गं
जल: नुकरा: केला महुवा: धूमरा:
टरीया लीला: गुलदार: पंच कल्यांण
जवरा: गुरड: संजाब संदली: सी
चकवा: अबलख: सिराजी: फेर ही
अनेक रंग रा घोडा तैयार की
छै। साखत जीरा काढीजै छै:
जीरा किसा भांत रा छै: गुजरा
कसमीरी: कसुरी: मारवाडी: दखणी:
जाई: अटनेरी: लाहोरी: हजारयेरवी

रंग रंग री बनात मुखमल कलाबूली
सोने रूपे रा। बराणिया जीरा हजार कीजै
छै: जीरा मांडजै छै: केसवाली रंग
रंग री बगांली गुंथजै छै अगा
डी पछाड़ी खोलजै छै: रेसम री बाग
डोरां सुं ओरा हाजर कीजै छै: जकी
साहेब घोडा छै: बे पख भला: ऊंचा
अलला: करोरा नरवा: आरसी सिरीरवै:
ती अंगल गाला: मुठीया बील फला:
निमसी नली: गाडा भालेर फली: उर
ढाल ऐसा: कुकड कंध तैसा: आंख
पांरणी मोती नवा: लिलाड का बेठा
तवी: जल अंजल पीवै: कनोती लोय
दीवै: मगर लादक अघी: कोरी कछी
पुठ बाघां न मानै: पुंघी चवर दावै:
फीचां खनरव जोसी: काघ नारंगी तै
सी: अेसा घोड़ा राव चाकरां रै
हाथां मैं काढणी सुं: मोर जुं तेड
व करै छै: निकुली ज्युं अंग मो
जै छै। म्रघ ज्युं उलटै छै: भागा
काला माकडां ज्युं भाफां भरै छै:
निरत कारखा ज्युं नाचै छै: नट ज्युं
उलटां खावै छै: डोरमे घका ए
की बेकी करै छै। आंख का
गोला: सिंघकै जैसा: मन का गंगा
जल: मुकलीराणी ज्युं चंदाउजल: अैसा
हजार घोडे बांन आंरा हार हुवा छै:

जमीन सुं मिलणा नुं आई छै: इसै
वखत समीयै मैं जेजेव नीबावत बोलै
छै। मन री उमग खोलै छै: सैला सि
कारां रो हुवौ हुवौ छै: भाई उम
रावां सांटणीयां नुं हुकम हुवो छै;
तैयारी कीजै छै: मन भावणीया रवीयां
र पोसाख कीजै छै: घोड़ा पकी
कटोल हुं संपाड़ापजै छै: फेर ऊजले
पांणी न्हाय जै छै। हजार घोड़ा त्यै
यार कीजै छै।: चोकड़ां लगाम
दीजै छै: सु घोड़ा कुण जात रा
छै: कुण रंग भांत रा छै: औराकी: आ
रबी: तुरकी: खंधारी: ताजी सिकारपु
री: धारी काछी मालवी: रबजांनी
पुरबी: टांघड: + पहाडी: चीन्हाइ ओर
टी अनेक जात रा घोड़ा तैयार कीजै
छै कुमेत: नीला: समदा: मकडा: सेली
समंद: भुवर: बोर: सोनेरी कागडा: गंगा
जल: कुकरा: केला महुवा: धूमरा:
टरीया लीला: गुलदार: पंच कल्यांण:
जवरा: गुरड: संजाब संदली: हीरा:
चकवा: अबलख: सिराजी: फेर ही
अनेक रंग रा घोड़ा तैयार कीजै
छै। साखत जीण काढीजै छै: तिकै
जीण किरंग भांत रा छै; गुजराती:
कसमीरी: कमुरी: मारवाड़ी: दखणी: मिर
आई: अजमेरी: लाहोरी:
हजारयेरी [illegible]

रंग रंग री बनात मुखमल कलाबूली
सोने रूपे रा। बगीया। औसा हजार कीजै
छै: औसा मांडजै छै: केसवाली रंग
रंग री बगांली गुंथ गुंथजै छै अगा
डी पछाड़ी खोलजै छै: रेसम री बाग
डोरां सुं ओरा हाजर कीजै छै: ज क्री
साहेब घोड़ा छै: बे पखव भला: उंचा
अलला: कटोरा नरवा: आरसी सिरीखी:
ती अंगल गाला: मुठीया बील फला:
निमली नली: गाडा भालेर फली: उर
ढाल ऐसा: कुकड कंध जैसा: आंख
पांरगी मोती जवा: लिलाड का बेठा
तबी: जल अंजल पीवै: कनोती लोय
दीवै: मगर लादक अघी: कोरी कछी
पुछ बाचां न मावै: पुछी चवर दावै:
कीच्चां घनख जेसी: कांध नारंगी तै
सी: ऐसा घोड़ा राव चाकरां रै
हाथां में कांढराणि सुं: मोर ज्युं तेड
व करै छै: मिकुली ज्युं अंग मो
जै छै। मच्छ ज्युं जलतौ छै: थागा
काला माकडां ज्युं भाफां भरै छै:
निरत कारसा ज्युं नाचै छै: नट ज्युं
उलटां खावै छै: डोरमे घका ए
की बेकी फरै छै। आंख का
गोला: सिंघकै जैसा: मन का गंगा
जल: हुकलीराणी ज्युं चंदाउजल: औसा
हजार घोड़े दान ओरा हार हुवा छै:

वढा उपरांग जंजेव तींबावत रा भाई भतीजा ऊमारावह्जूरी: जोसारवां करै छै: कसुंमल: केसरीया: ह्री: सबज: सपताळू सोसनीया: नारंगीया: सपेत जोवो तैजारा की वाडी फूली छै:। ऊपर उराहीज बेखाता हथयार बांध्यजे छै:। तरवार: कटारी: ढाल: छुरी: तरगस: बंदूक: बरछी: गिलोल: गोफरा: चुकमार: और ही भांत भांत रा आवध सझीयां: पकां चोक पधारै छै: सु किसा भांत रा छै: काली वौ कलस: सती रौ नाले र: तौरणा रा आंखा: कुवारी घडां री दः गाहड रा गाडा: फोजां रा लाडा: काचा कुंभ ज्युं काया ओरौ: पराई छडी जाणै: विडलो तेज: कुरखीयो लोह: लीयां रहै: काछ वाच निकलंक: तठा उपरांयंत जंजेव तींबावत बाहर पधारे छै सु किसा भांत रौ छै: ऊगतौ सूरज: पाछा सर रो होस: कुंव रा पत कुंवर: अल हद जबा ४ भोगी भवर: कसतुरीयौ म्रघ: लांग्वीयो सिंघ: सील गंगेव: दुरजोधन अहमेव: जु जड्डल ज्युं सांच: दुरवासावाच: ग्यांन रौ गोरख: सहदेव ज्युं सारी बात समरथ: अरजन ज्युं बांण: करण ज्युं दांन पांण: छतीस आखडी रौ निबाहणा हार: वैरीयां विभाडणा हार: परभोम पंचायणा

घरा दियरा: जल लियरा: कलायरो मोर:
मुखे भीने गात: केसरीया पोसाक की
यां: पाचुं हथीयार बांध्या: आरा घोडै
असवार हुवै छै: नगारै इक डको वा
गो छै: मीर सिकारां नैं हुकम हुवौ छै:
बाज: जुरा: कुही: बहरी: सीकरा: लग
ड: चिपक: तुरमती साथ लीजै छै:
चीतेवारां नैं हुकम हुवौ छै: चीता
साथ लीजै छै: घोडा री पुठ तरनना
ऊपर बैठा छै: आंख्यां आडी ढल्ह
छै: सकलायत रा पटा: रुपैरी भंवर
कडी: रेसम की डोर: तिके चीता काठा
रा छै मरोटरी आच्छीरा: देरावर री
रोह रा: घेर वै पहाडां रा: ईडर
रा डूंगरां रा: जालोर रा हुडां रा:
पावर रा थलां रा: पारकर रा विहं
डा रा: इसा चीता साथ लीजै छै:
महतरां नैं हुकम हुवै छै: कुतां री
डोर छुटै छै: लाहोरी: वाजी: लुच:
बाग: जीलजा: पहाडी: जिकांरी मुड छ
मोहनाल: हाथभर नास: वड रै पोनीजि
सा कांन: ताजरा सेद पुछ: नारे
सा पेजा: वाघली आंख: पातली ला
क जाडे आडुं: इसा भांत रा कुता:
बनाती पटा: रुपेरी भंवर कडी: रेसमी
डोर कानां में रुपे सोनेरा वेढला: गलै
में निजरा वाइत इसा भांत मुं

BITS LIBRARY PILANI (RAJ) BITS

आंरा हाजर हूवा छै: इकां बहलां रहकलां ऊपर बैसाणा जै छै: सु इका वहल वहकला किराभांत रा छै: गुजरा ती: सुरती: खंभाहची: अजनगरी: हेसमी: उजीणारा: वगीया चरोमीसुरा: पीतल लो ह दांत रा जडीया: लाल सलाहटी रा पीदरा बिच्छायां थकां: चांदराणी ढली यां थकां ओंरा हाजर हूवा छै: वैह लीयांरी फुरराणी बाजरही छै: जेण घुघ रा वाज रह्या छै: सु वेहली याकि रा भांत रा छै: थोर काकरेच रा छै: सोरठ रा छै: हालार रा छै: सु वालख रा छै: देस देस रा इक रंग सपेत छै: जाहरी सपेदी आगै बगला ही मगासा नजर आ वै: मेंहदी सुं रंगीया: वनात रा मोहरा: लीले सूत री नाथां रेसम री रास: सींगां पीतल री खोली: वनाती झूलां घातीयां रहकलां इकां खडमलां जुता छै: सु हालीयां थकां घोडां नी माम पाडै: इसा वेहली जु तां रहकलां इका खडसल: आरणा हाजर हूवा छै: तथा तडा उप रायंत आइयां नै हुकम हुवो छै: थुंजाई रा बासरा तैयार करवै नारी नाडि चालिज्या: सु वासणा तैयार कीजै छै: देगा: चरू: कढाई: कुडछा:

खुरपा: डहोला: ऊरहर: चालशी: बाल
कटोरा: प्याला: ढकणी: लोटा: पाला:
बागोट: औरही सब पकड़ां गाडां
घातजै छै तठा उपराइत मोदीयां
नै हुकम हुवौ छै मुंजाई माल घा
री ही बात: लीधो: लीहांरा: बेस
बार: सरब लेय रातौ गाडी चाल
ज्यो: म्हे सिकार रमंता उगा गाडी
आवां छां: सु मोदी: ओइतो पाधरा
गाडी रै मारग बहीर हुवा छै: आ
प रमवा मारग आरवरा नै खुडारै
मारग नै चालीया छै: घोडां रै
पोडां सुं जमी गुंजरही छै: खेहरो
डेरो आकास नुं जाय लागो छै: सु
पखमाल घोडां री बाज रही छै: ही
सकलल: होय हुय नै रही छै:
घैहलीयां रा घुघरां: जगो रो झमकार:
हुय नै रह्यौ छै: बल्लां रा बांस
पलीयां रौ खडभड़ाट हुय नै रह्यौ
छै: होकारी हुय नै रह्या छै: नया
रै इकडको हुय नै रह्यौ छै: टोका
रा हुय नै रह्या छै: सहनायां मे
मलार राग हुय नै रह्यौ छै: बी
सांरा मुंहडै आगै फरहर नै रह्या
छै: नकीब चौबदार: नजर दोलत: कोर
. . . .
. . . . री फिरसां नै बरछीयां

री एकै किरणां हुय नै रही छै: इसौ तणीयौ नवा नै रह्यौ छै: जठा उपरायंत: ऊंठा चढीयां रबारीयां आंरा मुजरो कीयौ छै: सु ऊंठ कुरा कुरा दिखावर रा छै: काच्छी: बोदला: छपरी: जालोरी: बगरु: बलोची: सिव वाडीया: खाडलीया: और ही अनेक जा त भांत रा ऊंठ छै: सु साथ रौ धुमरो कीयां थकां रमरो फिर आंरा खडा हुवा छै: हमैं तीतरां ऊपर बाज छूटे छै: करवारनकां ऊपर जुररा छूटै छै: तीलारां ऊपर वासां छुटै छै: लवां ऊपर सिक्रा छुटै छै: बटेरां ऊपर तुरमती छु टै छै: बोचड़ां ऊपर चीपक छुटै छै: बुरजां ऊपर लगड छुटै छै: कुलंगा ऊपर कुही छुटै छै: इण भांत देलोत राजेसर सिकार खेलै छै: घोड़ा दौड रह्या छै: होकारा गामो हुय रह्यौ छै: इतरै बीच थोटर भाखरां रा बिहडा मांह खरगोस उठीया छै सु किसा भांत रा छै: मोटा: चौं पा छै: तांबडीया छै: धरां लीलै जडी बूटी रा चरणा हार: पांहडे पांखती रा पीवणा हार: तिकां ऊप र कुतां री डोर छुटी छै: बांठ बोझा कूदै छै: थुचली खाय रह्या

छै: दुलीरी: गोफरागी: तीरांरी चोटां हुय रही छै: के घोडां आखडै छै घोडां रै पगां सुं कांकरा पथर ऊछलै छै: इतरै बीच हिरणा रा डार आंरा नीसरै छै: तिके किंण भांत रा हिरणा छै: काला बडा बग ड छै: मुंडा रै डार में मेघ हुय रह्या छै: माटे नाग छै जीके कूदे ऊछलै छै: धीगरा हिरणा छै: सु रत आइ हिरणी नै घेचता फिरै छै: सबलो हिरणा निबलै नै घेचै छै: इण डारक रोलां मुरडां आगै आंरा काढीयौ छै: तिकां ऊपर चीता छुटै छै कुलफां दूर कीजे छै: तमासो बणा रहीयौ छै: इतरै समीयै में भालुवो आंरा अरज कीवी छै: भाखवां रा खुंडा वेटडा मांट सुवर नीचा उतरीया छै। रा जा नो देसोतां सुवरां साम्ही वाग लीनी छै: फडकडां फडवडायां जावै छै: इतै में सुवर निजरां पडै छै सु सुवर किंण भांतरा छै: धुरा: कवला: केई अबलख छै: डार एकै पासै छै एकल एकै पासै छै: सु एकल किंण भांत रौ छै: जेरो बाहरे आंग ल खग: लीडी कर छै: कांधो

पुछ एक साबखो छै: गुलवाउ: जो
हू: जब: चिरागां रो: जुवार रौ चरता
हार छै: मय मत छै: सु चर
चर फरसीयां आया छै माथरां
रा सेताया: पोहर: ने झाडरा: बीड़ा
सुं खतै छै: पुउ वाहै छै सु जड़ां
समेत उखेड नाखै छै: इसां सुवरां
रा मोरां ऊपरां राजा नां घोडा
लगाया छै: बरछीयां रा चमोड़ा
लाग रह्या छै: तुकयारां री खाट
खड लाग रही छै: केई घोडा
सुवरां रा तुडां सुं उछल परै
पड़ै छै: तरवारां वाहि रही छै
कटारी वाहि रही छै: केई सेल
टूटै छै केई आच्यो सले छै: सुवर
मारजै छै: ऊंठा ऊपर घातजै
छै रसै सनीयै मैं धुप तपै
छै रातरो अमलां रो खुमारीयां
देखोतां राजा नैं तिस लागै छै.
तद नाडी साम्ही वाग वाल्ही छै: ति
कार सरब एकठो कर रहकलां ऊंठा
ऊपर घातजै छै: होसमा रारा तला
ब आया छै: तिको तलाब कि
सा भांत रौ छै: राती बरडी रो
पांडरो नीर: पवन रो मारीयो: फीरा
आफ्रेर तौ थकौ: झोला खाय रह्यौ
छै: लहरां लीयै छै अपगडो बछै

कडीयां जु वे पांणी में पेठा पगां
रा नख का खै छै: दूध्यरै भोला
वै विलाव वासीजे छै: ऊपर कुरजां
सारसां गहक नै रही छै: डेडरा डक
नै रह्या छै टीटोडी टहक नै
रही छै: जल काग गुटक मै रह्या
छै: मुरगाबी तिर नै रही छै: अठार
भार वनासपती फुक नै रही छै: त
लाव है छेहडां कुवल फुल ने
रह्या छै: हजार पोवडाईल छै:
आठलै पावडा ऊपलै छै: इसा भांत
रौ तलाब छै: सु आडो नालां भ
रीयौ छै: जाणौ दुसरौ मांन सरो
वर छै: तिरा ऊपर चहुं गां वडां
पीपलां बोरां बकायणा: नींब: ना
लेर: आंबा: आंबली: सीजुं: लहेस: खेज
ड: जाल: आला पालो: खिजूर: गुंदी
ले सुडो: केवडा: खिरणी: मोलसरी:
करवा सराय सेरा: महुवा: ढाक:
कुंभटा: कीकर: तुला: कुट नै रह्या
छै: डाहला सुं डाहला भड बै रह्या
छै: छाया में सुरज नजर नावै छै
तावडै री कुरा चलावै: आछो सो
मेट आवै तौ छोर पिरा पुहरा
नै पावै छै: इसी सांपरणी
वनस्पती मिल नै रही छै: जाणौ दुध
री ध्यरा छै: दरखतां ऊपर मोर

कुटक रह्या छै: सुवा केल करै छै: तू
ती बोल रही छै: लाल हाक मार
रह्यौ छै: ऊपर बगला पावस बैठा
छै: सु किसा एक सोहै छै: भांरा
काला हिरण कागोलउ नारवली आवै छै:
तिका री छांहडी आपराजा नां देसोतां
पागडां काढीया छै: आप आपरा घोडा
सुं देसोत: बाफतां री चादरां सुं पव
न करै छै: घोडा लोह चाब
रह्या छै जीन जीरणां री साखां जना
खां ऊंची नारवजै छै: तंग खोला
कीजै छै तठा उपरायंत पतारवां सुं
बादला पोंछजै छै: सु किसा भां
तवा बादला छै: हलवद रा: मोर
बीरा: अंगार रा: भरवछुरा: हालोर
रा छै: रुपैरी टूंपी सांकली लगी
छै: पंगी मिलरटी अरापंगा मेवीटी
या पक्का: ऊपरा बेवडी: तेवडी काल
री मेग रकाब कीया थका छै:
सु उराहीज बादलां सुं घोडां रा ला
लीया छांटजै छै: फेर बादला खं
खोल उराहीज तलाव रै पाणी सुं
धोवण भरजै छै उरा हीज वडां पीप
लां री सारवां सुं टांगजै छै:
कोटा दीजै छै: पवन सुनाय पांणी
ठंढो कीजै छै: तठा उपरायंत आजमां
णिलमांरा बिछावणां हुय नै रह्या

छै: ऊपरा गदरा चांदणी बिछायजै
छै: तै ऊपर सुजनी दालजै छै सु
किरा भांतरी छै: अडोछी बाफतेरी:
का पचरौ कलाबूत रेसमरो: कारचोबीरी
कामरी: गुजरात रै कारीगर रीकीवी छै:
तकीया लगायजै छै: तठा उपरांयत
देसोत राजांन आपरी टोली मजलरा
जुवांन लीयां बिराजमांन हुया छै:
कमरां खोलजै छै: बनछी रा कूला
कीजै छै: सु बरछी किंरा भांतरी
छै: ताडरा बड: पीतल री भरती
बुडी: गजवेल: दांतौ रा फल रामपुरै
रा पडीयोडा: रूपै रा सोनै रा
नकस छै: फोफलीया रूपै रा
लाग्या छै: फलां ऊपर बनातरा
मुखमल रा चकारा लगायजै छै:
तठा उपरांयत तरगसां रा कुलाबा
छूटै छै: सु तरगस कूण भांत
रा छै: ~~लाहोरी~~ लाहोर कसूर
री बणी होंडी: घरां बनात में
लपेटी थकी: पचरौ कलाबूत सुं
गूंथी थकी: रूपैरा कूंटा कुलडी
सी सीसी लागी थकी तिकै हारी
साठ साठ तीरां सुं भरी थकी
तिके किरा भांत रा तीर छै: गुज
रात री नीपनी सांठी: गाडे गाठी:
सात वार सेचे मारी: जाफर स्याह रंग

गजवेल दांतौं रा पेगाम छै: ऊपर
सोनेरी नकस छै: खुरसांणा रा ऊतारी
या: माठीरा तिलारीया: ऊपर कपैरै
सांबां बे पीतल तांबै रा चुला छै
दांत री चौकठी छै: तिलोर रा
पंखारा छै: दांतरा मुकाला छै:
सोनेहरी हल लीखी छै: नच मुंह रा
तीर छै: इसां तीरां सुं भरीयां थ
कां: सु उराहीज वडां पीपलां रा दर
खतां सुं नागलजे छै तठा उपरायंत
कमांणां कुरमाणां मोहे मेलजै छै:
तिके कमाणां किरा भांतरी छै: बारै
बरस दरीयावां माहे जिहाजां हेठै
बंधी आइ: चिले वाली हकारा कर
ती: गुरा भार वंकी अढार टेकी: असा
ली नाधी पठांण री बेटी: ज्युं
तुंटी तुटीं करती थकी: बलोचणी
ज्युं लचका करती थकी इणा भांत
री कबांणा उणाहीज दरखतां री साखां
सुं नागलजै छै: तठा उपरायंत ढालां
रा अली बंध खुलै छै: सु ढालां
किरा भांत री छै: सिलहरी छै
सुध गेंडा री: आरसांणी छै:
घरांणा री मांदी वधै छै: बारहै
महीना तंचै मैं रहै छै: मोहर
तोलै तौ रंग रोगान लागै
छै: तरवार कटारी बरछी रा दाव ही

न लागै छै: मुवर री दांतरी ला
जै तौ पिगा रउक नै ऊतरै: गोली
लागै तौ उपकुल पाखरी पड़ै: सोने
रुपै रा चांद फूल: मुखमल री
गादी सांबर रा ल्पोसा: बोयदार डाबा:
कसां: इरा भांतरी ढालां मु उरा
हीज दरखतां री साखां मु नांगलीजै
छै: तठा उपरायंत तरवारां रा ~~कम~~
कमसा रीया खुलै छै: मु तरवाऱ्यां
किरा भांत री छै: सीरोही री नीप
नी छै: बेओं अगला वाड ऊरीया
थकां: जनैब: मगरेब: पुउतकाल: सेफ
बिलायती: अजरी: विरारा पुरी: हब
सोनी: फिरंगी: मु ~~म्या~~ म्यानां माहै का
ढ घास मैं नाखजै तौ पांगी रै
भोलावै जनावर डुगावटे: बगतर मैं
वाहि दोय टूक करै: चौरंगमें वाही
थकी सीक सिरो चलरारीया सावा वा
छै: लोहमैं वाह्यां थकां बाल बोटी
न पड़ै मु घराौ मुखमलवनात
रा म्यानां मांहे लपेटी थकी घरौ
सोनै रुपै मैं जड़ी थकी: घरौ बु
लगार साज मैं लपेटी थकी: उरा
हीज ढालां रा गड गदां में मेलजै
छै: तठा उपरायंत कटाऱ्यां रा कम
बंध खुलै छै: मु कटाऱ्यां किरा
भांत री छै: विरारा पुरी: रामपुर

री: बुदीरी: राजाशीटी: तोडारी: अढा
ई ओगलीरी: क्रोला खांनी: पाडा जीमी:
धरों सोनै मैं अकोली पकी: नव नगा
वाघां सु भरी पकी उरगाहीजि सेलां
बाफतां रा कमर बंध्या मैं लपेटी थ
की: उरगाहीज ढालां री आच्यां मैं मेल
जै छै: तठा उपरायंत ~~मेडी~~ पेटीरा
कसा छूटै छै सु पेटी कुरग भांत
री छै: असल दांवगदार बोयदारवी
छै: तैरी खसबो रा लीया भंवरा
गुंजार करै छै: बीस बीस चांवडा
खसबोय रा डोरा छूटै छै: जोंबों गां
ची हार पसावी छै: तठा उपरायंत:
वागां रा चिलर बंध छूटा छै:
सु विरग भांत रा वागा छै: सिरी
सांभ: ग्रैरव: चोतार: कसबी: माह
मुदी: फुलगार: अधरस: सेला: बाफता:
डोरीया: मोमनी तंनजेब: साहिबी: रै
तरै रै कपडै रा वागा छै: सु
उतार उतार उरगाहीज दरखतां री
साखां ऊपर उरला कीजै छै: तठा
उपरायंत चरणां रा गिरदानां मोकला
कर जाजमां जीलमां ऊपर बैसजै छै:
पाघां लपेटा उतार ढालां रा जडगदा
मैं राखजै छै: बाफतां रा सेलां रा:
रुमाल केसरीया छै सु माथा ऊपर
रारवजै छै: बीअरागं सुबायेरा कीजै

छै: सु किशन आंत रा बीकराणां छै.
लाहोर रा क्रियाड़ा छै कपैरी डांडी:
जरी सुं मंढी हूकड़ी री झालरी सु
बरणी पन्नी खवास पासै वाहणां रै
हाथ छै: फराश वडां फराशी पंखा
सुं वायेरो घाल रहा छै: माते
हाथी ज्युं हीडं रह्या छै: तीन आंत
री पवन बाज रह्यौ छै: शीतल मंद
सुगंध जल सुगंध: गरमी मिटायजै
छै: तठा उपरायंत राजा नां मलुक
कुंवरा रा हाथ साहु कलारी रो हुक
म हुवौ छै: तिजारो मंगायजै
छै: तिको तिजारो किसा आंत
रो छै: तासरणी री हाडी री नीप
नो इकतीस हाडी रो: नालेर सो मोट
रो: खोपरा वह रो: गरी रै
दल रो: हाथ सुं छूट पड़ै तो
काचरी सीसी ज्युं किरची किरची
हुय जावै: पांणी मैं घालीयां पक्का
ढहि जावै: इण भांत रो तिजा रो:
सु गोरो सुवंरीया पुंहचां सुं दुजरा
साल्यां करो रां मैं भला सुवा
न मचकावै छै: बेवडी गलणी
सु मीन रिचची चाढ छांणजै छै:
ऊजलां कचोटां मैं घाली सुनहरा
हुय नै रही छै: तठा उपरा
यंत अमल मंगायजै छै: सु अमल

त्रिंरा भांत री छै: भेट आगराही: का
लु केरीन री भीपनो: उरो: घराइ:अ
रोडी: नहलीया: भोज पुरावरी: गुआ
गराही अमलरी चकी बच्यां फुरुयां मुं
मिरी वढ कीजै छै: केसरीया पो
ता रुमालां में घात जै छै: अरोडी
गालजै छै: भोज पुरी रा हापला
कीजै छै: मुनहारां हुय नै रही
छै: अमलां रा जमाव कीजै छै: अ
मलां रा तेडल रोपजै छै: अमलां
री नावां पीजै छै: इसे मैं भांगे
गुर मेंगायजै छै: सु किरा भांत
री भांग च: केसर री क्यारी दोल
ली: वासग माथारी: धोहर रा
वीडा री: भावर रा खुरा री:
उरे मोर री: काले पोन री: आ
बु रा बिहडा री: भमर मार: मे
रघ माल: लरीयाल: चिडीयाल:
चोरडीयाल: अेक पांन अडगरीयां
न: एक पान अहमदा वाद: पान
पान री रस लीजै छै: तिरा
भांग साक मसाला मंगायजै छै:
जायफल: लांग: इलायची: मिरच:
विवाली: अंजु नागकेसर: भमरांरी
तज: तंबाल पन्न तंबोल: पतसेयी
और ही मसाला मंगायजै छै:
मिश्री कालपी: गंगा पार री मंगाय:

कोरा प्याडां मैं भिजोयजै छै तठा
उपरायंत: रुखा री कूंडी। तेजबलरो
घोटो घोय तैयार कीजै छै: भांग
रा वीया मोकला पांणी सु धोयजै
छै फेर फेर कोरी हांडी मैं राख
जै छै तठा पछै घोटजै छै
भला गोरीयार रोसनाक जुवांन वरस
वै छै बेवडा गलना सुं मचकाय
मचकाय काढजै छै: माथै टीकै
काढजै तौ नीसरै: 4 पावन री मारी
तीक ठाहरै: इवा भांत री भांग काढ
तैयार कीजै छै: कटोरां सुं होस
जाक पवन कीजै छै: सु कपाटां मे
लीयां रखवां: सपासे वांरा हाजर करै
छै: मुनहारा हुवै छै: देसोत आ
रोगै छै: अमलां चाक हुय जै
छै: तठा उपरांयत आंगडीया नै हुक
म हुवौ छै: सु भांवन ख्याल
गावै छै: माता हाथी गजराज पटा
कर ज्युं झोला खावै छै: सहना
यची सहनायां माहै सारंग वरायौ
छै: तठा उपरायंत सिरदारां देसोतां
तलाव मैं झूलरारी होस करै छै:
लाल लांगी री पोतां पहरजै छै:
चडनावां वरगायजै छै: सु ले तलाव मैं
वडजै छै: टालो तमासो कर रह्या
छै: माथा रे जुडा केसां रा छुटा छै:

सु केसां नजर आवै छै: जाणौं का
ला वासग तिरै छै: जल डोहि रह्या
छै जाणौं रेवा नदी नै हाथी डहोल
रह्या छै: इसौ तमीयौ बणा नै
रह्यौ छै: जिसमैं पांणी मैं तिरती
मुरगाबी नजर आवै छै: तिकां रै
सिकार रै पगां बंदूकां गिलोलां
मंगायजै छै: सु बंदूकां किंण भांत
री छै: जंगापार री: सिंद नद समी
पांणी री: लाहोर री: करनाटक री:
फिरंगरी: मरारी: घणौं सोने रूपे
मैं गरकाब कीवी थकी: नकस
दार ओणौं गोडीयै नागरा लोबी
कीवी छै: दूसरोबीजरो सवाव: बीस
पीलीये: ढुधै री लकडी रा कुंदा
छै कपै री तारां रा: कोकडी:
छातम: सपेते रा बंध छै: बोय
दार री डाबां छै: कसेवल घृत
री लपेटी ओबकी छै: कपेरी ब
नातरी मुखमल री कुंदा रै पीं
दी बणा रही छै: सुइया सांकली
कपेरा चमक नै रह्या छै: सात
सात बिलंदा री लोबी दराजां खो
ली मैंदा कपड़ री: सु बाहर
काढजै छै: जाणौं बादल भांहा
बीज भीतरी आकासरी: कनाती नदे
तमासे मारु पातली कांमरी पोसाख

कर नीसरी : इसा भांतरी बंदूकां मो
टीयार तिरता तिरता लेय उरा पड
नावां आया छै: गिलोलां किसा भां
तरी छै। घरौ ~~[illegible]~~ सींग लक
डी री जोडी घवणी पण सरेस
री पचाइ: कमांरगा रै प्यार री दांनदै
मोगरां लागा पकां घरौ सोने री
हलरी लिखी जंगाली रंगरी: नवे चढा
वनी तांत: रेसमे रो मेंदान गुंथीयां
पकां: राजा नों देसोतां रै हाथां
दीजै छै: कुंभार री कंगामोडी: ख्या
ली रा मारीया: खुइ रा पचाया:
नीवुबै प्यार रा: इसा भांत रा गि
लोलां हाथ दीजै छै: उराहीज बं
दूकां गिलोलां सुं मुरगाबीयां नैं
चोटां कीजै छै: तमासो हुय रै
रह्यौ छै: सीकार मुरगाबी एकठी
कर तलाब सुं बाहर पधारजै छै:
लीली पोतां दूर कीजै छै: चरखा
पहर जै छै: सु किसा भांत रा
चरखा छै: इलायचे रा मीसकरा:
गुल वदन रा: मालनेरी रा: बाफतां रा:
चालीस चालीस हाथां रा छै: गिरीया
डोबरे समानाडा छै: सु चरखां पहर
जोडी पगां ~~[illegible]~~ घालै छै: सु जोडी
किसा भांत री छै: लाहोरी: पिसोरी:
घरौंरी बनात मुखमल री लपेटी: प की:

घरां कलाबूत सुं गूंथी थकी: पेहर जै छै . तठा उपरायंत पाघड़ी पोहर री ढलती छायां री विलायत कीजै छै देसोत सिरदार जाजलमां पधारै छै: केस सुवारै छै: मोगरै री बेल: केवड़े रै तेल सुं केस सुधरो कीजै छै: दांतरा: छलांरा: चंद रगरा चरखड़ी रा कांगलीयां सुं केस सुंवार जै छै: केसां रा जुड़ा बांध जै छै: ऊपरा मखतूल रा डोरा बांधजै छै: तठा उपरायंत गोठ सारू बागरा मंगायजै छै: रबारीयां नुं हुकम हुवै छै: परगनां मांहे बाकरा दही ले आवौ: सु रेबारी उठां आवै छै: किसा भांत रा रेबारी छै: डीघा लांबा सुवान: दीसतां रा जांन वांकी मुछां: राते नेणा: साली डाढी: मोटे वेसा: जाडा पुटे चा लाबां हाथ: सुवबे सिंधनें घाते बाथ: इणा भांत रेबारी ऊंठां नै झाले छै: सु ऊंठ किसा भांत रा छै: धापवी तलीरा: सुतवी नली रा: नालेरां जोडां रा: बील फूल दूर कीरा: हथालीये ईडर रा: ससा सेरी बगलां रा: प्याट बाजोट रा: बाघमें कांधे रा: कसतुरीयां पटां रा: कोरखे कांनरा: टोमकसे माथे रा:

लांकवे नाकरा: तजीये होठरा: कवाडी
यां दातों उघरे पीड रा: परचलां
आसरागे रा: कांगरै पुबरा: मोटे
पुडेरा: उवरीये करा: चोलमें रंगरा:
लांधीये हीट ज्यु लंकां चढीयां थकां:
भागा गाढा ज्युं बढठाढा करता थका:
बेस्या ज्युं काला करता थका: मांते
हाथी ज्युं हुंकारा करता थका: इसा
ऊंठ ओकजे छै: हाथ फेरजै छै:
पीतल रा गीरबांरा रुपैरा कडा छै:
तां मांहे मोटरा बेलचे मोहरा घा
तजै छै: लुंबा कवडा लावलेवडा
घातजै छै: लाल सिलहटी स्यां
पडधुयां गादी घातजै छै ऊपरां
पलांरा मेलजै छै: सु किसा भांत
रा पलांरा छै: हांस रै काठरा
घरां लोट पीतल सुं जडीया थका:
रुपै री फुलडी लागी छै: दांत रै
काम सुं वसीया थका: वनातरा
मंढीया ओछुं पीतल रा बाजरांगे
पागडा कडी कुंटे जाली ठकठो
सांतरा: पराडां रा चोलु बां वरागयां
पंका: काणा कसरणा क्रीया पक्कां
चढ खडीया छै: गांव गांव मांह
दही रा कलस मेलजै छै: एवडां
मांहे बाकरा उठायजै छै: सु किसा
भांत रा बाकरा छै: रातडीयै सिरा

रा: उजला पलां रा: पराी गांगु
वरा: तीगा वंरा रा चवरा हार: परौ
काचर तूंबै रा चररा हाव: गुंवार
चीडी: मोठ: रा खावंरा हार भांह
वै साहरा: कडकती नलीरा: कनाडीया
दातां रा: कम र सुवा उंचा: चीलकतां
मोरां रा: माड रै खेतरा: मादली
यां पेरां रा: बालरमाली बोकडा: खो
डे खीलैहै ती रा चारीया: फुररतीयां
रौ बैसराहार: कुभटे कंकेडे रा
मुरडंरा हार: आयबे रा चररााहार:
सु उवां ऊंठा ऊपर मसकोरी पर
दोय दोय बांध जै छै: उचलामां
आमै छै: राजानां सुं आय मु
जरो कीयौ छै: बाकरा नुं ठरको
करणा रै पणा: अलवलीय मोरी
यारां नुं हुकम कीजै छै: सु
असीलां सीरोहीयां ले नै उठीया
छै: मलकती वी खांभरै छै: जांरौ
पाछा सर रौ हेस मोती चुगरा
चालीयौ छै: दोय दोय बाकरां
री सिन्हाउ नै ठरका हुवै छै:
तरवारां रा झणणकार हुय नै रला
छै: चोरेगारी रनाट खड हुय नै रही
छै: करोरां माहै फूल लीजै छै:
बाकरा होसनाकां वस कीजै छै: देसो
तरवां चोस हाथ उजला कर वीसाकां

ऊपर विराजमान हुवा छै: तठा उपरायंत हुकारी होल कीजै छै: चाकरां नुं हुकम हुवौ छै हुका तैयार कीजै छै क्रिरा भांतरा हुका छै: सोनेरा: रूपेरा: विदरी: खांखोल छाडे पाणी मुंभ जै छै: नीचै सुधरा बिछायजै छै ऊपर हुका मेलजै छै: नयचा सरद कीजै छै: सु नयचा क्रिरा भांत रा छै: बीदीवा: चौगानीया: चर्दौ बना नवा लपेटीया: सालू रा लपेटीया: बोपदार रा मंढीया: चेतरा: कलाबूत रै कामरा: सोने रूपै रै चलांया: कपैरा कुलाबां लागा थकां: सोनेरी हूंडी: रूपैरी चिलम: चिलम पोस छै: तमाकु बणायजै छै: सु क्रिरा भांत री तमाकु छै: सुरत नीपनी: तांबे रै रंग री: कडवी डोवली री: सु इरा भांत री तमाकु सु चिलमां भरजै छै: उपरा बोलरा आकरा कोयलां रा: चिलमीया मेलजै छै: जांरौ सहिजादे वालाहत: बम्हल लगा योडो जोगी: तिरागारी होल मारजै छै: मधरो मधरो खांचजै छै: धुंवै री डोरो लाग रह्यौ छै: सु भांरौ आसाढ री वादली उमार वहै छै: तठा उपरायंत खलखोय मंगायजै छै: सु अतर क्रिरा भांत

रो छै: गुलाब रो: चंदन रो: चित
ने रो: अगर रो: खस रो: कस्तूरी रो:
सु तीसी बुली छै: सु तीकां भर भर
काढ जै छै: लगायजै छै: मुनका
कीजै छै: तठा उपरायंत पुवा यंत्र पु
दागौ अगर रौ चीकाणी सुप्यो मंगा
यजै छै: तीसी बुल्है छै: मोती पुडै
री तांपरै प्यालां मैं प्यात हाजर कीजै
छै: सुप्यो बगलां लगायजै छै: तठा
उपरायंत केसर मंगायजै छै: सु केस
किराभांत री छै: औराकरी: क्रिमर
वाडरी: कासमीरी: आडी पांखडी री:
वर वींडाडी री: सु केसर चंदन रा
सुकडां सु जेसलमेर रो डोरो सामें
होसनाक जुवांन घसै छै: ऊजला
कपारां मैं उतारजै छै: देसोतां रै
मुंहडै आगै राखजै छै: तिरा रा
तिलक कीजै छै: आडां काढजै
छै: तठा उपरांयत बाकरा उराही
दरखतां सुं टांणरागां कीजै छै: बाक
रा टुलै छै: जांदा रुई री
वरकी बोपारी खोली छै: मांस
अथा उतार उतार पातौ राखजै छै:
तरवार रा पडदला मांहि सुं करा
कां मोंटा सुं छुरी काढजै छै:
मांस चून चून पातै कीजै छै:
मोरां: पसवाडां: पीडां रौ मांस.

देगचां मैं घातजै छै: हडोई रा
मांस पासे चकुआं मैं घातजै छै:
सीरां होसनाक गुघारै छै: दुयजै
छै: गरम पांणी सुं धोयजै छै:
देगचां मैं घातजै छै: ओजरा धो
य धोय माहें मसाला मांडीयो मां
य घात दबगर कीजै छै: फुल
आंता अवल धोयजै छै: उपरा
दुसरी आंतां री सांढा गुथजै छै:
मसाला चडायजै छै: रजबो दही रो
दीजै छै: तठा उपरांयत सकरखो
लजै छै: सारां उतारजै छै सु
किरा भांतरा दीसै छै: जां सौ
रेगरेज री हाट खुली छै: जुदो दे
गचां मैं बरायजै छै: तठा उप
रायंत हिरण खुलै छै: जुदो दे
गचां मैं बरायजै छै: हिरणा इणा
भांत दीसै छै जांणै धोबी रै
घर कपड़ा मोकला कीया छै: मां
स उतार उतार टुकडीयां मैं घा
तजै छै: मिरच: धाणा: सुंठ: लुण
हलदी: बेसवार दीजै छै: दही रो
रजबो दीजै छै: लकड़ी री कढो
ती मैं सुद चढ़ु वास छै: तठा उप
रायंत खरगोस होसनाक बणावै छै,
मछलांद मिरायजै छै: भान्हौं चुन
देगचां मैं घातजै छै: बेसवार

दई दोब हलद चंदन गोरो चंदन घर
स्युं इत्यादिक मंगलीक वात्त मंगाई
नालेर सदाफल बिजोरा अमृत फल
इत्यादिक अनेक फल मंगाया ।-छत्र
चामर खडग इत्यादिक राज चिह्न
मंगवाय। सोभागवती मंगल कारणी
स्त्रीयां रा वृंद आय प्राप्त हूवै इयै
प्रकार राजा नुं अभिषेक कराय व्याघ्र
चर्म ऊपर सप्तदी पावती पृथवी लिख
आगै धरी प्रधांन मुहतां आपरै पर
वार सहित राजा नुं मूहरते सुभ
लगने राजा आय सिंहासण ऊपर
बैसण नुं हूवौ इतरै देवतां रा
प्रभाव सेती प्रथम पूतली मनुष्य
बोली कर बोली राजा इयै सिंघा
सण रै धंणी सिरखो उदार चित होइ
तौ सो इणा सिंघासण पग धरै
और सामान्य राजा इयै सिंघासण
योग्य न छै। एते सुनत मात्र राजा
मुहतां हुं उन्मेत मात्र लक्ष देवुं छुं
तो काहि पुतली बीजो तिण मो
सारखो उदार कोई और छै किना
कोई और हूवौ / बहुड़ी पुतली बोली
इसड़ी उदारी वात आपरौ मुख कहै
मो सारखो बीजो उदार चित कुंण
हूवौ तौ उबै सारखो सिद्धि नीकसी री
पुरुष कुण हुवौ। जो आपणी बड़ाई आपरौ मुख कहै।

देगचां मैं घातजै छै : हडोई रा
मांस पासे चकुआं मैं घातजै छै:
सीरां होसनाक सुघारै छै: धुपजै
छै: गरम पांणी सुं धोयजै छै:
देगचां मैं घातजै छै: ओझरा धो
य धोय मांहे मसाला मारीयो मां
स घात दब गर कीजै छै: पुल
आंता अवल धोयजै छै: ऊपरा
दुसरी आंतां री सांठा गुथजै छै:
मसाला चरायजै छै: रजबो दही रो
दीजै छै: तठा उपरांयत सुवर खो
लजै छै: सारां उतारजै छै सु
किरा भीतरा धीसै छै: जां रो
रेगरेज री हाट खुली छै: जुदो दे
गचां मैं बरगायजै छै: तठा उप
रायंत हिरस खुलै छै : जुदो दे
गचां मैं बघारजै छै: हिरसा इणा
भांत दीजै छै जां रो धोबी रै
घर कपड़ा मोकला कीया छै: मां
स उतार उतार टुकड़ीयां मैं घा
तजै छै : मिरच : धाणा : सुंठ : लूण
हलदी : बेसवार दीजै छै: दही रो
रजबो दीजै छै: लकड़ी री कठो
ती मैं सुद घड़ राख छै: तठा उप
रायंत खरगोस होसनाक बणावै छै,
मछलांद मिटायजै छै: जां रो पुन
देगचां मैं घातजै छै: [illegible] बेसवार

हलदी : धाणा: सूंठ: मिरच : जायफल

लोंग: तज: घालजै छै: हींग्यो लूण

दही लाय दीजै छै: तिलोर: तीतर:

करचानक : मुरगाबी: होसनाक बणावै

छै पोरा चीरजै छै: पेराल जो

चीरजै छै: मुंहडै मैं हींग भर

जै छै: पेट मैं जीरो भरजै

छै: पांख समेत देगचां मैं बाफजै

छै: तठा उपरांयत तीतर वो मांस

सिला ऊपर बांध्य पलीथो कीजै छै:

दूसरो मांस न्यारो न्यारो बणाय

जै छै : घणा मसाला दीजै छै:

लवां रो मांस होसनाक हुआवै

छै: बाकरां रा फीफर गरम पां

णी सुं धोयजै छै: ललाई मि

टाय जै छै : पाछै देगचां मैं रा

धजै छै: घणौ घी : बेसवार

मसालां : सुं बणायजै छै: तीकां

पाछै बणौ छै: आडा डोरा ची:

रा दीजै छै: मांस रंधतै ती

खसबोइ फुट नै रही छै : तैरी खु

सबोय लेयवा नुं तेतीस क्रोड

देवता : गंधा गंध्रव होसा व्याप

रह्या छै: भांत भांत रौ मांस ब

णा रह्यौ छै मैदे रा मांडा क

रजै छै: तैमें घणौ नानों कूणीयो

मांस मंदी आंच कढाई मैं तलजै

छै: वेसवार मसाला घात उना मांडा
मै घात जै छै: तठा पछै मांडा
गूंघ समोसा बणाय तलजै छै:
तठा उपरायंत सीरो पुडी बणौ छै:
सोहितै साक: देवजी भिंजोयजै छै:
विरंज लाल चोखा मंगायजै छै:
पुलाव साल कमोद बीराजै छै: काठा
जाडुंला बौ आरो मंगायजै छै: सु
नालेर जरा जोलवा रोटा बणायजै
छै: मुंगाखी पातली दाल पचौ मसा
लां सुं कीजै छै: तुवर री दाल
खुरां चावलां रै पगा देगचां मै
कीजै छै: खुरां चावलां रै चरा
रै पगा बासमती मंगायजै छै:
पातला रोटा जुदा ही बणा रख्या
छै: ठाम ठाम देगचा चढ चढ रख्या
छै: मूंग जुदा ही देगचे मैं रंधै
छै: सु मूंग किसा भांत रा छै
मगरै रा नीपना: भरत रै खेतरा:
हवीयै रंगरा: सु चुवंला जे बडा:
इसा भांत रा मुंग हाथां सुं रल
कायजै छै: चूरा वीरा कांकरा काढ
जै छै: सु मूंग होसनाग बणा
वै छै: अनेक भांत रा फतीस
भोजन बणौ छै: तिजारै है
फारसी सुं आरो गेदजै छै: तैरा
रोटा करजै छै: रोटा ओर पीडी

कीजै छै: तठा पछै कढाई मैं तल
जै छै: तठा पछै फेर ओर कुट
पांदा मांहे बूरो घालजै छै: घी
घात चूरमो कुतबी बणायजै छै: तठा
पछै सिखरणा रै वगा दही बांधो घो
तैरी गलणी रखुलै छै: मांहे बूरो
घात अघोतर रै कमाल सुं घाल
जै छै: मसाला मांहे ओंगः इला
यची: मिरच: घालजै छै: इवा भांत
रो सीखरणा कर नाटकी भरीजै छै:
हडोई ऊपर चीलकां कागला कडो
फड कर ने रख्या छै: तिका कै
गलां सुं महक जादा कुंवर जी
लोलां री चोरां कर रख्या छै:
इवा भांत तमासो करतो पखो पा
छलो चोपडीयौ आय रह्यौ छै:
अमलां रौ बखत हुवौ छै: तद
खिजमतगारां नुं हुकम हुवौ छै:
ततावी सुं: हरसंकरो तैयार की
जै: सु हरसंकरै री तैयारी की
जै छै: सु हरसंकरो बिराभांत रौ
छै: भांगेसर पोटीया री पीडी प
वौ मसाला समेतरी आराजै छै:
गलीया अमल मैं भोग घाल जै
छै: फेर दारु सुं उलारय काढ
जै छै: रुमाल सुं तिवारा पांराजै
छै: तैयार कर पातलां रा कलस

भरीजै छै: सिरदारां आगै आंटा
गोलजै छै: ऊजला कपोरां मैं चाव
मुजरारां सुं सारै साथ नै पायजै
छै: सु किसा एक सिरदार जुवांन
छै: पाकां पाकां वरीयांमां नुं: अज
रायला नुं: खीबरां नुं : ~~अत~~ हु डांरा
हुला डाकीयां सुं : करड दंता नुं
लोह चडां लोह परडा हला नुं: लो
ली देता: कटारी उगाराई खाता: प
चासां बोलावीयां : आछै आछै वाट
उतवीया: जीयां रा पांच पांच हजार
दांम पारा बंधाई रा पारेदार खा
प चुका छै: पांच पांच से हाथ
कोरी पारां नै लागी छै: इसा
आंतरै रजपूतानें अमल सिरदार
आपरै हाथां करावै छै: घरां
चीज सुं मन लीयां मनवारां करै
छै: दिल हाथ लीजै छै: अमलां
गहतंत हुया छै: माते हाथी सुं
ओरा खाय रह्या छै: फुरसती बा
ज रही छै कोसा लाल चीरमी
हुवा छै: आख्यां फीटक रही छै:
मछरै मछरै हुकां सुं तमाखु खोन
रह्या छै: गलहां कीजै छै वडा
उमरायंत मुलागरीयां होसनाकां नुं
हुकम हुवै छै: जाजमां कनारे खला
तैयार करौ : सु हिरणां रा कमार:

पसवाडा: पींडा सुं मास उतारजै छै:
फुसां सुं धून जै छै: सु सुरी किसा
भांतरी छै: पेस रूबज: चकचकी रुमी:
बिलायती: म्यानां मांहे काढजै छै:
तिकां रा दस्ता किसा भांत रा छै: मो
टबै रा: गुरडो दगार रा: संगरेसम
रा: माही दांतरा: रूपेरा: सीपवा
जडीया: नवै नवै री दस्तां री भांत:
तिका फुसां सुं मांस फुनजै छै:
मसाला बेसवार: लूंण चराबजै छै:
दहीरो रजबो दीजै छै: तरगसां महां
सीकां काढजै छै: बेवडां सीखां चा
ढजै छै: बीच खीसरी भरलीदी
जै छै: सुत कुंवीर तीकां ऊपर
चाढजै छै: आडै हाथ ओबा
घी रा दीजै छै: इणा भांत
सूला बणै छै: बडी देवगरी पा
ली मांहे उतारजै छै: तठा उपरा
यंत देसोत फेरा सातां फिर आ
या छै: हाथ पग मीटी सुं
उजला कीजै छै: कुरला कीजै
छै: संध्यां बांदसा रौ बखत
हुवौ छै: वंनाली आसरा बिछै
छै: पीतल रा वरत रा धूपीया आगै
ओणा मेलजै छै: गुगल बतीसै
मसाले साहित खेवै छै: खसबो
ही महक रही छै: देई देवता [illegible]

बोड़ लेय रह्या छै: बभांत री गऊ
मुखी मैं हाथ घातीयां आपरे इष्ट
रो स्मरण कर परवारीया छै: आज
मा आय बिराजै छै: तठ उपरा
यंत मसाला हुय छै: दुसाखा
हुया छै: मसालचीयां ओरा मुजरो
कीयौ छै: नजर दौलत बडीदार कर
रह्या छै: अमरावां: सिरदारां: खि
दमत गारां सारांही आंरा मुजरो की
यौ छै: सारा ही मुंहडै आगै वि
राजमान हुवा छै: तठा उपरायंत
दारू रा घडा मंगायजै छै सु
दारू किसा भांत रो छै: ओरा करो
बेराक: संदली रो कंदली: फूलरो
अतर घातीये बकै: धुंवाधोर: ति
वारां रौ काढीयौ: बोदी बाड मैं
नाखीयां जग उठै, बाप री पीयो
डो बेरो छिकै: असवार रौ पि
योडो प्यादो छिकै: राजा पीयै: पर
जा छिकै इण भांत रौ पहल डै
तोडै रौ घातो: सु दारू केसरीया
गुलाबी: यां रा दाव दीजै छै: मु
जरा कीजै छै मुनहारां हुवै छै:
मतवाला हुयजै छै: ऊपरा उरा
भांतरै सूलां रौ थाल बीच मैं
लीया छै: मोघरण डुंगार हुय र
ह्यौ छै: चौल बोलां हुयजै छै:

तठा उपरायंत बालदारां अरज कीवी
छै जुंजाई तैयार हुई छै: आप
फुरमायौ छै पातोरा नाखो: बाज
नर थाल मंगावौ: पातोरा नाखीया
छै: आगै बाजवट मेल्हीया छै त्यां
ऊपर रूपेरा: पीतल रा थाल जल
सुं खंखोलीया मेलीया छै: सिर
दार पातोरा आय बैठा छै: रहडु
अं थालीयां देगचा चरू ओनाजै
छै: परीसारा रौ हुकम हुवौ छै:
सारै साथ नै सरब वस्तु रौ परी
सारो हुवौ छै: पांच पांच
दस दस टुकलां लीयां दाइदार
भेला बैठा छै मुनहारां हुय
रही छै: फराती फीनस ताइचोज
लीयां आरोगजै छै: दारू रा
दाव बीच बीच लीजै छै: गोलीयो
री खार खड लाग नै रही छै:
मुसालां रो चांदणो बणा नै
रह्यौ छै: जोरौ सरद री पुरसा
माली खुली छै: फेर हुकम हुवै
छै महताबां रौ चांदणौ हुवै: जु
महताबां पचास सब सांवनी ही
लागी छै ओबौ जेठ रौ दोपहरो
खुलीयो छै: इण भांत रौ चांदणौ
में जीमणा री होस मांगजै छै:
दारू सुं मतवाला सिरदार नाहरता

बोलै छै: इणा भांत सुं आरोग पर वारीया छै: थाल बारीयां उठाया छै: हाथां री चीकणाई उतारणा रै वगा मूंगा रा थाल मेंगाइजै छै: तिणां मांहें हाथ नाखजै छै: मूंगां सुं मसल चीकणाई उतारजै छै: तठा उपरायंत पाली ारा चलू करणा रै वगा मेंगायजै छै: चलू कीजै छै: कुरला कीजै छै: हाथां लोहणा सुं रुमाल हाजर हुवा छै: हाथ पूंछ जै छै: रुबरै मैं तंबोली बीड़ा ओरा हाजर कीया छै: तिके पाव क्रिणाभांत रा छै: मघी: दखणी तोडेरी वाडी रा नीपना: नीकां रा बीडा बंके छै: मोटे कपूर चूनो काथो: सोपारी घात बीडा त्तिर दारां मैं दीजै छै: खुस वखत हुवै छै: कवीस्वर आसीस दीयै छै: अखै अनदाता: ध्रुव मेर ज्युं अटल: चंद सूर पवन पांणी ज्युं जुगो जुग राज करेंता: सु जठल वाला ज्यां गजु: अंनपुत छीले अपार: दिल थाई आलीर दै: कवि जंपे जे कार! दस कुप समो वापी: दस वापी समो सर: ससां सरवरां समी क्रिन्या: अमदांन विसेखत: इणा भांत री अनेक आसीस दीये छै: अेसो

गहरे लादक बिराव बोलै छै: जोशो
नगारे डंको हुवो कनार्ँ भरे चाव
हुवौ: इण भांत कविराव आसीस
देवै छै: तठा उपरायंत अरगजो
मंगायजै छै: सु अरगजो किण
भांत रौ छै: चोपे चंदण रा
मुठीया गुलाब रै पांणी सु रंग
दीजै छै: माहै कपूर कसतूरी नजै
छै: केसर रौ रंग दीजै छै: कुंद
चंबेली री मेल वणी दीजै छै: इण
भांत रौ अरगजो कपैरै कचोरां मां
हे घात आंणा हाजर करै छै: अर
गजो लगायजै छै: तठा उपरायंत
माली फूलां री छाबां आंणा हाज
र करै छै: सु फूल कुण भांत
रा छै: हजारा: नोरंग: गुररो:
मेंहदी: किलंगो: सोनजुही: इसक
पेचो: रवेरी: कोयल: मालती: सेवती:
चांदणी: मुखमल: नगास: हवास:
गुल अनार: दाऊदी: केवड़ो: और
ही अनेक भांतरी फूलां री मा
ला: किलंगी: छडी: सेहरा: गुंथीया
छै: सु सारै साथ नुं बगसजै
छै: फूलां रा चौसरा घातजै छै
छडी हाथ मांहे बिराजरही छै:
तठा उपरांयत कवस कवि रावां नुं
निवाजर हुवै छै:

कड़ा: मोती: सिरपाव: चिरमा बकसीसै
छै: तठा उपरांयत ओनगुवां नाज
दारां नैं इनाम दीजै छै: माली मो
स्याल हलाद दीजै छै: सारा टी आस
उमेद वर ओंराजै छै: इतरै मैं सा
त घड़ी बाजी छै: आठवीं रो
अमल छै: सिरदारां: रजपूतां अरज
कराई छै: असवार हुय जै माथ
सारो अमला गाढो सदोरो छै:
अमल चकावै छै: तरां आप उठी
या छै: माते गज राज जुं हींडतां
पकां बववास पासे वासां रै हाथ
ऊपर हाथ दीयों घूमता थका चो
डै पधारै छै: साहनी घोड़ो
आसा हाजर कीयौ छै: पागडै पग
दीयौ छै: असवार हुवै छै: नगारे
गैर घाव हुवा छै: सादी यांसां
बाजै छै: ओंरौ आगौ गाजै छै:
तुरी: करनाल: रसालीगो बाज रह्या
छै: सहनायां मांटे वंभायची हुय
रही छै: साथ सारो अमलां सुं:
लालहर तो पको बहै छै: बधाई
दार आगै बधारया छै: सु
बधाई ओरण दीवी छै: तठा उप
रायंत कामसाजि हरब मंरग उबरसौ
कदै छै पीठी सिनांन करै छै:
खसबोय लगायजै छै सीस गुंथाय

पीपल रौ पान छै: तासा माखरा
री लोथ छै: नितंब करेला सा छै:
नाभी मंडल गुलाब रै फूल सौ छै:
सा रव्यातरी पदमराणी: क्ना रेभासी: क्ना
सरजारी उरवसी: असी कामणी पो
सावां कर मोहलां माहे मेरा
बनी री पील चोस्यां च्यारां खु
णां जगाय पान चाबै छै: चां
दणी रा बिछावणां खूब रह्या
छै: ऊपर बनात री कलाबूती: चौ
दणी कपै री चोभां सु खडी
श्री छै: सोना रा पिलंग कस
वां कसीयाँ छै: सो कैसो हेक
सोभाय मान दीसै छै: जांणौ खीर
समुद्र रो झाग छै: ओसीसा जीडे
वा कैसा बिराजै छै: आंरोली गी मल
काछवा समुद्र मैं केल करै छै:
इण भांत कांमणी पोसारव विसा
यत क्रिया बिराजै छै: जिसे मैं
खुसयाली आंरा जतरी छै: तारो
साथ मुजरो जुहार कर कर घरां
नैं पधारै छै घोडा पायणां
लगायजै छै: गंगेत तीबाबत भीतर
पधारै छै: रवमां रवमां हुय
रही छै: आंरा ढोलीयै किरा
जमांन हुवा छै: मुंहडे आगै
पातरां पोसाकां कर साज बाज

लीयां रवडी छै: हुकम हुवौ छै: रा
ग रंग हुवै छै: खह राज: वीस
रागरणी: मुरत वंत रवडा हुवा छै: ता
तपुर: तीन ग्रांम रो भेद: बताीयौ
छै: भाव दिखावै छै: फेर दारू
री मनुहार राज लोक करै छै: तठा
उपरांयत सारो राजलोक मुजरो कर
बाहुडै छै: उरिग रो वारो छै हु
वहै छै: एक दोय खिजमत गार
सहेली हजूर रहै छै: मुरव धीजै छै:
रस लीजै छै: केसरीया दुपटा
ओढ मुरव सुं पौढजै छै: परभात
हुवौ छै अमलां री बायर सुं
आंख खुली छै: अमल कीजै छै
गोठ मजलस अमलां रा बरवाणा
हुय नै रहया छै: दरबार पधारै
छै साथ सारो मुजरै आवै छै:
मुजरो लीजै: छै: फेर ही कोई
राजवी नाराजर हुवै तौ इयां
भांत होस मां राज्या: ॥ नरपुंनाग
न पयीया: काले केहरीयांह: जलपु
रीयौं परेवांरा ज्युं: गलहां ऊबरी
घांट॥१॥ भली पुं भलां नरांह: लांत
पुं लातां नरां॥ मुलडा मुवां पचांस
वाता लिखी वांच उत: ॥ इति दोपोरो
संपूरण ॥ शुभं भवतु ॥

॥ अथ दीन मांन रै फल री
बात लिख्यते ॥

॥ गुजरात देस तेमें पटरा सहर
तेमें सेठ धरमदास नामें साह
रहै : लाखेसरी : तेरै सुलछणी नाम
इसी स्त्री : सु सील वंती : पतभगता :
बतीस लखणी : भरतार री इछ्या मैं
रहै : इण भांत सु सुख भोगवतां
थकां धरमदास रै मनमें ऊपनी कै
कोठी कीजै : ताहरां धरमदास पिता
राजी कोठी कीवी : कोठी जमावण
रै वासतै धरमदास आप उठै
टिकीयौ : सु इण भांत रहितां : पुठै
एक परगणामें : नैण सुख नाम ब्रा
ह्मण रहै : सु सहर में फिरतां
थकां धरमदास साह री स्त्री दी
ठी : इयै रौ मन डिगीयौ : सु
इयै विचारीयौ मोनै साह री
स्त्री : कासूं इलाज कीजै ताहरां वि
चारीयौ कासी करोत लेईस : ताहरां
गुजरात सुं ब्राह्मण चालीयौ, सु
पिताजी गयौ सु धरमदास साह
री दुकान जाय ऊभो रह्यौ : ताहरां
धरमदास पुछीयौ देवता कठा सुं
आयौ : कुण कारज ताहरां नैण
सुख कह्यौ : गुजरात सुं आयौ
छुं कासी करोत लेईस : ताहरां साह

कह्यौ काली करोत क्युं लेवै छै: तद ब्रा
ह्मण कह्यौ म्हारे मनसा एकै वसत
री छै तै लेकं छुं: तादरां साह
कह्यौ धनरी लालसा छै तौ धन हुं
देईस: तूं काली करोत मतां लेवै:
तद ब्राह्मण कह्यौ धन री तौ लालसा
काइ नहीं एक बीजी लालसा छै: तैरै
वगा लेकं छुं: तद साह गाढ कर पु
छीयौ घणौ दबायौ: तद ब्राह्मण
कह्यौ: गुजरात देस में पंटण नांमे
सहर छै तैरै उधरादे पासे धरम
दास नांवे साह रहै छै: मु मोटो
साह छै: मु साह तौ वोपार करण
नुं कठै गयौ छै: तिणे साह री स्त्री
मैं फेरी फिरतै दीठी: तेसुं म्हारो
जीव उण मैं रह्यौ: तैरे वगा करो
त लेऊं छुं: तद साह कह्यौ तौ
उठै उण री तलास क्युं कीयौ नहीं
इतरी दुख क्युं आयौ तद विराम
ण कही लुगाई तौ धव रै लालच
सुं डिगै मु धन तौ म्हा रै नहीं मै
तद साह धरमदास कह्यौ धन
तनैं हुं देईस तूं जाह। तद फेर
ब्राह्मण कही मैं उण रै सहर में
पूछ खबर लीवी मु अ उणा पति
भगता छै: पारके पुरूष रौ नजर
भर मुंहडो न देखै: साह हाली पां

पछै एक टेक में ध्यान भोजन करै
छै: भरती सुवै छै: काजल·तंबोल
घृत रौ त्याग लीयौ छै: भरतारनी
खैरायत रै वगा हंसयां रो नीत्य
सांचो अंन गरीब भिखारी नै कु
तां नै देवै छै: आ कहै छै
जठै म्हारो भरतार छै तैरै आडो
आवज्यो: उवारी खैरायत छै सु
इणी स्त्री तलास करी हाथ नावै:
कई मोटे पुन्य सुं पावै छै: तेसुं
हासी करोत लेईस ज्युं उवा
स्त्री आवै तद साह कह्यौ जु रुपी
या लागसी सु हूं देईस तूं कहे
सरवरी जायगा मरतबीज: तो पंरा
ब्राह्मण मानैं नहीं साह घणौही
समझायौ: पचास हजार रुपीयां ताईं
आणीया पिण बांभण रै तौ एक
हीज बात: ताहरां साह धरमदास
कह्यौ उवा स्त्री म्हारी छै: ताहरां
ब्राह्मण कह्यौ थारी छै तौ भला
हुइ हूं तौ हासी करोत लेईस:
तद साह कह्यौ मैं स्त्री तनैं
दीवी: तु करोत मतां लेवे: तद
बांभण कह्यौ इव तौ बात मा
नूं नहीं जो स्त्रीमें हाल संकल्प
करदेवै तौ मानुं: ताहरां साह कह्यौ
बोहत सरवरी करी: ताहरां साह ब्राह्मण

ने साथ ले त्रिवेणी जी गयौ सनान कर क्र
मर जितो जल में खडो रहि संकलप की
यौ इणौ ब्राह्मण नुं दीनी डेहुं हाटे
आई आयो । बाजार रै लोकां नु लेबो
चो पु ने खरे ... ब्राह्मण नुं साथ
ले साह पाटण आया। साह घर में
गयौ स्त्री बहुत हरखवंत हुई साह
जी पधारीया रसोई कराई इतरै बां
भण आय आसीरवाद दीवी ताहरां सा
ह कह्यौ तीलवंती में तो थाने त्रं
कलप भर बांभणाने प्रागजी मां
हे त्रीवेणी जी रै जल में दान की
यौ छै. थे ब्राह्मण रै जावौ मनें
जाणतां जुं इयैं ब्राह्मण नुं नारा
ज्या: ताहरां स्त्री बोली बहुत भलां
थे फुरमायो सो सिरमाथे: ताहरां
ब्राह्मण स्त्री नुं ले बहीर हुवौ:
ताहरां साह विचारीयौ बांभण कठै
रहिसी: अक कांई नीवली हवेली कीन
में विसास साह ब्राह्मण नुं पाछो
बोलायौ कह्यौ देवता मनैं संकलप
भराय आ हवेली धन सरब लबें
दीयौ: तद ब्राह्मण कह्यौ कुडेक
धन थे राखो: तद साह कह्यौ
म्हारे धन सुं काम कोई नहीं स्त्री
परमेस्वर री प्रीत छै: तूं लै: सु सर
ब ब्राह्मण नुं दे आप साह वैराग

लै वहीर हुवौ: रात पडी ताहरां अ-
लारा लीलवंती नै कह्यौ थे तौ
मनै दीया साह हमैं मेहुं हस
बोलो: ताहरां लीलवंती कह्यौ साह थाने
दीवी सु कबूल छै: परंग साहजी कोडी
पधारीया ताहरां मैं छमहीना मुहत
लीयौ थौ तैमें दिन २१ वदै छै सु
इतरै माफ करौ ताहरां बांभण
कह्यौ भली वात: अर लीलवंती
अन छाडीयौ अर तपस्या करै अर
मनमें आ धारी सु इकीसमें दिन
देह छाडीस इसी धारी: अर सा
ह उस हीज रात एकै तलाव ऊपर
बडो पीपल थौ उवै पीपल री जडा
मांहे जाय बैठौ: पीपल रै ऊपर
हंस हंसणी रहै: सु हंसणी ऊप
बैठी थी: इतरै हंस चुगनै आयौ
तद हंसणी कह्यौ: पीपलरै जड मां
हे एक मानवी बैठौ छै सु अतिथ
छुं भोजन देसौं: अतिथ बैठां थो
अन करणौ आछौ नहीं: महा दो
ष छै: तद हंस कही सु फल एक
ल्यायौ थो सु भाषणौ गुजरांता नीठ
सै हुतौ: मानवी तुं कहा सुं दे
वों तद फेर हंसणी कह्यौ: ॥श्लोक॥
ई हवाधानी प्रस्थानी: अतीतो गृह
मेगता: तस्य भोजनं प्रानंते अतीर्थ

स्वर्ग संक्रम ॥१॥ तद हंस फेर कहै
यस्यश्चैव गृहे नास्ति: कदाच काले भो
जनं अतीर्थं आगतो द्वारै: कथं गेव
प्र पूजितं ॥२॥ फेर हंसणी कहै। आमि
लिकः वपुकश्चैव: कंद मूल फला न च:
तथा दानी भवे तस्य: अतीर्थ स्वर्ग
संक्रमे ॥ ३॥ अतीथ द्वारे तिष्ठंति: आप
गृहे च भोजनं: उदके तु सुरा पां
नीती अनं अपराध भक्षते॥४॥ अती
र्थं तिसुखं यांति: अजनोपि अप
देवता कोर पुजा विनस्यंति ब्रह्म हत्या
पदे पदे: ॥५॥ सु इसा भांत हंसणी
हंस ने समझायौ तद फल हुतौ सु
हंस साहनें दीयौ: तद साह हंस
नें पुछीयो सु इसा फल रौ
नाम कांसुं छै: तद हंस कह्यौ
अमर फल छै इणै खाधां अमर
हुवै: सदा पचीस बरस री अ
वस्था रहिसी: तद साह विचारी
सु म्हारे तौ इसा फल सुं कोई
कारज नहीं ओ फल उवै ब्राह्म
णा नुं दीजै तौ ब्राह्मण सुख भो
गवै: तद साह प्रभात सु फल
लेय पाछौ गयौ तद ब्राह्मण
दीठो सु साह री जीव नामगा न
रह्यौ: पुरन पायो तेसुं पाछो आ
यौ: इतै मैं साह फल काढ ब्राह्मण

नुं दीयौ गुरां कह्या: तद बालाता
फल ले आच्छो आप खाच्छो साच्छो
साहरी घ्नी नुं दीयौ: इसौ फल
लेय ऊंचौ राखीयौ इयौ रै वौ
प्रतंज्या सु सरब भांगीयौ अर साह
तौ फल देय उठै वहीर हुवौ
सु रात पड़ी तारां फेर उठै
पीपल तले जबां माहें जाय बैठो
फेर हेस १ आयौ तद हेस नागी
हेस नुं कह्यौ सु आज फेर अ
तिथ आवसौ छै: इसे नुं भोजन
देवो तद हेस फल ल्यायो थो सु
फेर साह नुं दीयौ: तद साह पु
छीयौ इरा फल रौ नाम कासुं: त
द साह कह्यौ इरावी नोव रौ
तौ मनें खबर नहीं: ते नाम
सुं काहे करवौ तूं भोजन करक
तद साह कह्यौ विना नाम लौ
मैं कोई काम नहीं: तद हेस क
ह्यौ औ फल मनें ब्रह्माजी दी
यौ थो नाम कोई दूछ्यो लगी
यौ नहीं ब्रह्माजी नुं खबर छै:
तद साह कह्यौ तौ हाल ब्रह्माजी
नुं पूछ्यां: तद हंस साह नुं पांखां
मैं बैसारा ब्रह्माजी रै लोक ले
गयौ: तद आवतां देख ब्रह्माजी
पुछीयौ हेस तुरत पाछा क्युं

आया: तद हंस साहराय जोड बेनती की थी: कु औ फल आप हेस जी कु ब्रमलीयौ थौ अर हेस जी कृपा कर औ फल मनें बगलीयौ कु इयै फल रै नांव री खबर नहीं तौ आप कन्है हुप्सरा आया छां: ताहरां ब्रह्माजी फरमायौ म्हे कैलास श्री महादेवजी कनै गया था ताहरां औ फल श्री महादेवजी म्हांने दीयौ थौ नांव तौ म्हां ही पुछीयौ कोई नहीं महादेवजी नुं खबर छै: तद ब्रह्मा जी: हंस: साह तीनेही महादेवजी कन्है गया: म्हादेवजी साम्हां आय श्री ब्रह्माजी री स्तुति कीनी ताहरां पुछीयौ किसै कारज पधारीया छौ: तद ब्रह्माजी साह साम्हों दीठौ तद सा ह हाथ जोड फल दिखायौ जो औ फल आप ब्रह्माजी नुं भेट कीयौ थौ ब्रह्माजी हंसजी नुं दीयौ हेस जी मनें बगलीयौ कु इयै फल रै नांवरी जाण न पडी कु आप इयै रौ नांव बतावौ तौ औ फल कारज लागै: ताहरां ब्रह्मा जी फरमायौ नाम री तौ म्हानें ही खबर न छै म्हे राजा धरम कु न्है गया था ताहरां औ फल राजा धरम म्हानें दीयौ थौ: राजा

धरम नैं नामरी खबर छै: ताहरां
महादेवजी ब्रह्माजी हंसजी साह धौरे
ही धरम जी कने गया राजा धरम
बहुत सतकार कीवी: साम्हां आया आ
दर कीयौ: पुछीयौ किसै कारज प
धारीया छौ: ताहरां श्री महादेवजी
साह साम्हों जोयो: तद साह हाथ
जोड अरज कीवी फल दिखायौ जु
औ फल श्री महादेवजी नुं आप दी
यौ छै: महादेवजी ब्रह्माजी नुं दी
यौ ब्रह्माजी हंसजी नुं दीयौ हंस
जी मनें दीयौ सु इयै रै नाम
री खबर नहीं जु नांव बता
वौ तौ कारज लागै: सु अठै
तौ इयै रै वखाणता हुवै छै
अर बठै ताहरी स्त्री ~~तप~~ तपस्या
जैसी जासु काली पतव्रता तैरै तेज
सुं इन्द्रासण ~~डिग~~ डिगीयौ: तद इंद्र
जी ध्यान कर देख्यौ पाटण सहर
मैं धरमदास साह री स्त्री पत
व्रता छै तैनैं कष्ट पडीयौ: ते स्व
रग लिख्यांमरण झंपै छै: तद इंद्र
जी आपरै आगा वादरां नुं उरमा
यौ: जावो सीलवंती नुं ले आवौ:
सु आगै वांदरा दौडीया सु जाय सील
वंती नुं कह्यौ थानैं सैदेह इंद्रजी
बोलावै छै: चालो: ताहरां सीलवंती

बोली : मनें तौ म्हारो भरतार मोनुं
इयै ब्राह्मण नुं दान देगयौ छै: तेसुं
इयै ब्राह्मण री आग्यामैं धुं जो ब्राह्मण
आग्या देवै तौ हाबूं ताहरां आगै
वारां आ हकीकत जाय राजा इंद्रनुं
कह्यौ मालम कीनी जु सतवंती तो
आ कहै छै: ब्राह्मण री आग्या
हुवै तौ आवुं ताहरां इन्द्रजी चंद्र
कोला नांव अपच्छरा हुती तैनुं आ
ग्या कीनी तूं उठै जाय डवै रौ
रूप कर उवै ब्राह्मण नुं बिल
माप: सीलवंती नुं बिवाण चढाय
तुरत मेल देइ: तद चंद्रकोला अरज
कीवी म्हाराज आग्या कीवी जु प्रमां
ण छै: पण मनख सुं भेटा हुईस
तद वौ अपछेप हुईस फेर म्हारौ
आवणौं क्युंकर हुसी तद इंद्रजी कु
रमायौ जु जितरै ब्राह्मण जीवै तित
रै ब्राह्मण री टहल करे ब्राह्मण
शांत हुवै तद गुरस्थल देस मैं कप
ल मुनि तपस्या कीवी छै: तठे स्र
पाल तीरथ छै उठै कारत कर मही
नेरा पांच दिन अंतरा सिनांन करे
तुं सात्मीय दोष सुं मोख हुय म्हार
लोक आईस इतरा वचन इंद्र
जी रै मुख सुं सुंण चंद्रकोला
पांवाला प्रणाम परदखणा कर वहीर

हुई: सु पाछा सीलवंती कनै आई
सीलवंती नुं कह्यौ थे जानौ अठै
थां सौ बदलौ हूं साझीस: ताहरां
सीलवंती कह्यौ इन तौ आऊं नहीं जु
ब्राह्मण थासुं रंजै तौ आऊं तद चंद्र
कांता कह्यौ जु हूं ओले ऊभ ज्युं
सुणाऊं तद सीलवंती ओले ऊभी रही
अर चंद्रकांता सीलवंती रौ सरूप
कर ब्राह्मण नोटलमेंटी डोलाट में
हींडे थौ मुंह आगै जाय खडी रही
तद ब्राह्मण पुछीयौ क्युं आया छौ
तद उण अरज कीवी जु थानें म्हे
जद अरज कीवी थी जु साहजी था
लीया ताहरां महीना छव रौ सील
व्रत लीयौ थौ तैमें दिन २१ घटै
छै जु आज मैं बैठी लेखो कीयौ
जु बचती तिथ लेखे ५ महीना आज
संपूरना हुवा: सु आप आग्या देवौ
तौ सिनांन सिणगार करूं: तद ब्राह्मण
हरखवंत हुय कह्यौ बहुत भली बात
छै: सताबी करौ तद चंद्रकांता आय
सीलवंती नुं कह्यौ हमैं थांरो मन
प्रसन हुवौ ताहरां साहरी नी रह्यौ
मन प्रसन हुवौ: तौ थे थे सता
न सिखावौ तद सीलवंती बिवाण
बैस बहीर हुई सु इंद्रलोक गई:
इंद्रजी साम्हां आया प्रसंसा कौ घनी

छै तूं: थारी तपस्या समान और
फकीरी तपस्या नहीं: पारजात रै फूलां
री हार मोतीयां री माल: इंन्दरजी सील
वेती री भेट कीवी: अर आगे वातां
नै कलौ थे इयौ सुं राजा चरम
री नगरी ले जावौ उठै इयां रै
बाग हवेली बगीचा छै सार च
मदास पिरा उठै छै सु सार
सुं मिलावौ सु आगौ वांरा
बिवांरा बैसांरा वहीर हुवा: सांरा
राजा चरम री नगरी इयोरै नाम
बाग बगीचा था उठै बैठाया: तद
लै निन्यारांवै फेर हवी सीलवंती
सारीखी दुसरी ही आंरा खडी रही:
तसलीम कीवी तारां सीलवंती इंन्द्र
जी रै आगौ वातां सु पुछीयौ
सु औ घी कैरी छै कुदरत छै:
तारां आगौ वातां कलौ सार चर
मदास थारें भरतार थौनें दान
दीया था सु सहस गुणौ हुवौ लिखे
औ छै: प्यर पब तो दान आपी
इधा सुं दीयौ थौ तैरौ कारन
सुरगौ औ चरम औ दरब वसी
यौ छै: अर फेर अमरफल दांन
दीयौ थौ तेरो औ बाग छै: तैनें
अमरफल पारजात कलपवृक्ष छै इता
भांत ~~वागा~~ वताय इंन्द्रजी रा आगौ

वांरा अमरावती गया: अर ठठै
ब्रह्माजी महादेवजी हेसजी साह बात
करै छै: साह फल री अरज धर
मजी सुं कीवी: इरा री नांव बता
वौ ती कारज लागौ जाहरां राजा
धरम चित्र विचित्र अगेवांरा था
तिरा नुं फरमायौ आवौ साह नुं
आपांरी धरमपुरी दिखावौ साह पुरी
देख आवौ पछै थारे फल रौ
नाम कहिसां: जाहरां धरम दास
तौ चित्र विचित्र साथै धरम
पुरी देखरा नुं तिथ की: ब्रह्मा
जी महादेवजी धर्मराज ग्यान चरचा
कीवी: साहरी प्रसंसा करै छै इसै
में पुरी देखतां देखतां और चोल
हरां मोहलां मैं गया: सारी मो
हलाइत देखी सु निस-कुमारी बरगाई
तिके मोहलायत रा काहूं बखांरा
कीजै: सु मोहलायत देख बाग री
खिड़की खोली किवाड़ पासै कीया
सु सीलवंती धरमदास दीठी: धरम
दास नैं सीलवंती दीठौ: च्यार नजर
हुवा सु ~~हजारे~~ हजारे ही रखी दै
ली ओंबा हुई: सीलवंती साहित
सिगलां ही साह नुं मुजरौ कीयौ:
साह पुछीयौ के इरा कौ नाव तां
सीलवंती कह्यौ तुरत खुल गया

हूं थांहरी चाकर छुं: तांहरां साह
कह्यौ के तौ उठै बालाराम कुं तुं दे
आयौ न थौ सु म्हुं आया: आया
मेली तांहरां लीलवंती चंद्रकांता री
सारी हकीकत कही: साह मोहन राजी
हुवौ फेर पुछीयौ: औ इसरी सी कुण
छै: तद लीलवंती अरज कीवी थांहरै
पुन्य रौ प्रताप छै: एक दाग की
वी थी सु सहस गुणी हुई: आ
खेली बाग सरब थांहरै दान रौ प्र
ताप छै: औ विराजो तांहरां साह
कह्यौ के बैठौ हुं हेकरसी पाछौ
जाय राजा धरमजी नैं फल एक
छै तैरौ नाम पूछ आऊं छुं तद
साह पाछो राजा धरमजी ब्रह्मा
जी महादेवजी बैठ्या उमान गुसटी करै
छा: तठे जायौ: साह नुं आयौ
देख धरमराज बोलीया जब नगरी
दीठी तद साह रहै दीठी: तद राजा
धरम राज कह्यौ इयै फल रौ
नाम औ छै: दीनवांन रौ फ
ल छै: जीसो देवै जीसौ पावै: जा
वो थारे घरे सुख करौ: इयौ विध
कहि साह नुं घरां मेल्हीयौ: ब्रह्मा
जी महादेवजी पेर लोक गया: साह सुख सुं
सी तिरौड़ीस हजार बरस देवलां
रा भोगवीया (इति दीन मोत

री फल री वात संपूरण॥ ॥

॥अथ पलक दरीयाव री वात॥

। पाटण सहर तठै अजैपाल साह
रहै: साह रै देवीदास नाम बेटो हेक
हेक वरसां पनराह मांहे बोहत सपूत:
त नावें लेखै जिहाज वोपार मांहे
बहुत खबरदार: साह रै धन घणौ
जिहाज री हुनर कोई नहीं साहा
रै जिहाजां हालै काम रौ नांम ले
खै रौ मुदार सरब बेटै ऊपर: अर
देवीदास रै ठाकुरां रै दरसण री
प्रतग्या सु सहर सुं अधकोस देह
रो तो सु तठे लिछमी नाथ जी: नि
वाजै सु देवीदास नित दरसण कर
अइतो एक भेर करै इव कवां दर
सण घणां वरस वितीत हुवा: भली
साची ~~भेट~~ प्रीत सुं दरसण भेट में
नागा कदे न घातै: सु हेक दिन
साह रै जिहाज रौ भार आयौ: ता
टवां अजैपाल साह कोम गुमास्ते
नुं सांप बेटै देवीदास नैं सा
थै ले घरां जीमण नुं गयौ:
जीमण बैठा अन पुरसीयौ तर
देवीदास नैं ठाकुरजी रौ दरसण याद
आयौ: ताहरां हाथ खोच बैठो तद
रै साह कह्यौ: बेटा बेगा हुवौ

आज काम छै: तारहरां देवीदास कह्यौ
म्हारै तौ श्री ठाकुरजी रै दरसण
रौ नेम छै सु आज मैं दरसण
कीयौ नहीं तेसुं दरसण कर पछै
जीमीस: तारहरां अजैपाल साह कह्यौ
सुवारे इको चाहे दोय वेरा दरसण
करे: आज आपां रै काम छै: तार
हरां देवीदास कह्यौ अन तौ दरसण
कर जीमीस: तारहरां साह कह्यौ
सुवारे सुन्हगारी भेल चाढ़े : परा
आज काम छै: सु देवीदास उठी ऊभो
रह्यौ: तारहरां साह कह्यौ भली बात
छै: दरसण कर सताब आये : इसड़ी
सुण देवीदास तौ ठाकुर दुवारै नुं
वहीर हुवौ: दिन पोहर डोढ चढीयौ
आठौ श्री ठाकुरजी रै राजभोग री
आरती कर पंडो देवदत घरां जा
यौ कपाट जड़ गयौ: देवीदास जा
य ऊभौ रह्यौ देखै तौ कारे
कपाट जड़ीया छै: तारहरां दुवांडो
री तेरी मैं जोय दरसण कीयौ:
नीमसकार कीयौ अर पईसो चिमटी
मैं पकड़ दुवाडांरी सेरी मैं घात
कहण लागौ महा राजा पईसो ली
जै: मैं मैं तकसीर पडी मोड़ो
आयौ: गुन्हो माफ कीजै हुं रावलो
चाकर चाकर छुं: चूक पडी सु माफ कीजै:

इव अरज करवां घडी एक हुइ रूदन करता लागौ: देही परलीज गई नै हवल हुय गयौ इसौ व्याकुल हुवौ जो आवण छुटै: ताहरां श्री लखमी जी श्री भगवान सुं अरज कीवी जु साहूकार बहुत दीन छै विहवल हुवौ छै: इवारा आवण छुटै छै इवा नौ पईसो लीजै: ताहरां श्री भगवांन फुरमायौ म्हारौ हाथ अदग छै मैं हाक रती इन्है मोडीयौ नहीं हुं सारां ही नुं देऊं कुं लैण नै हाथ आव्यो न सके: ताहरां श्री लखमीजी अरज कीवी जु हाथ न मांडो तो मुंहडै हुं फुरमावो: ताहरां देहरै मही अवाज हुई ल्याव उवौ ताहरां इमै पईसो चिमठी महां छोड दीयौ: पईसो देहरै भीतर जा य पडीयौ देवीदास निमस्कार कर परदखणा देवण लागौ ताहरां लखमी जी भव भगवान सुं अरज की वी देवीदास थांहरौ निज भगत छै: इमै नुं कुई देवौ तद श्री इच्छा हला फरमायौ मे तौ इयै नें घणौ ही दीयौ छै: ताहरां लखमी जी फेर अरज कीवी छै जु इमैरै म न मैं काई कामना छै जु करै देवौ ताहरां देवीदास परदखणा देय

सनमुख आय नमस्कार कीयौ इतरै फेर
देहरै मांहि आवाज हुई देवीदास मांग
जिकुं मांगीस सु पाईस ताहरां देवी
दास आंरीभौ श्री भगवान मेहरबान हु
वा: अवाज देहरै महां हुवै छै:
ताहरां देवीदास हाथ जोड अरज की
वी जु आप महरबान हुवा छौ तौ
मोगर सुं पाऊं: ताहरां फेर हुकम
हुवौ जु तूं मांगीस सु पाईस: ताहरां
देवीदास अरज कीवी जु आप पलक
दरीयाव कहावौ छौ सु पलक दरीया
व रौ तमासौ दिखावौ: ताहरां श्री
भगवान फुरमायौ इयै वात नौ कांई
देखीस: क्युं इजो मांग राज मांग
पातिस्याही मांग फेर धन मांग और
कोई लखरी वात देखै सु मांग ताहे
रां देवीदास डंडोत कर अरज
कीवी जो इतरा थोक तो आपरै प्रता
प कर घणा ही छै: जो आप
कृपा कीनी छै तौ पलक दरीया
व रौ तमासौ दिखावौ: ताहरां फे
आवाज हुई जु देख इतरौ हुकम
हुवंत हुवो ज्युं देवीदास डंडोत
करवा नु नीचो हुवो जु नुयौ थौ त्युंही
ज जीव नीसर गयौ सु बांधुगढ
रौ राजा कनकरथ तैरी पटरांणी
रै गरभ रह्यौ: आगै राजा रै

संतान न हुती सु आवधांन रह्यौ व
धाई हुई सातवें महीनें आघरती
हुई नवें महीनें कुंवर जायौ: वधाई
बांटी गुड बंटीयौ: नालेर वंटीया बडा
हरख उछाह हुवौ: डसोटरण कीयौ
ब्राह्मण वेद मंत्र भणीयां नांव विचित्र
काढीयौ कुंवर मोटो हुवौ बरस ८
रो हुवौ: ताहरां सेर पुर रै राजा
वीर भद्र री बेटी रौ नालेर आयौ:
घोडा एक सव हाथी च्यार कपडो लाख
एक रो जुहार गरथो लाख १ रो ना
लेर सोने रूपे रो लीयां प्रोहत आ
दमीयां च्यार सव सुं आंपण डेरो की
यौ राजा कनकरथ खबर मंगाई
औ डेरो केरो छै स्युं आया छै
कठै जासै कुण छै: ताहरां पडी
दार जाय पुछीयौ केरो डेरौ कठै
जासौ कुण छौ: ताहरां प्रोहि
त रै पडी दार भीतर प्रोहित सुं माल
म कीनी राजा रौ पडी दार बाहर
खडौ पुछै छै: ताहरां प्रोहित भीतर
बोलाय कह्यौ म्हाराजा सुं आसी
वाद मालुम करज्यो: अरज करज्यो
सेर पुर रै राजा वीर भद्र रौ पुरोहि
त छुं विक्रमादत म्हारौ नाम छै:
राजा वीर भद्र री बेटी इंद्रकुवंर री
सगाई म्हाराज रै विचित्र कुंवर सुं

कीवी छै तेरो नालेर ले आयौ छुं
इतना कहि रुपीया पांच इनाम ना
घडीदारां नुं दराया: विदा दीवी घडी
दार आय म्हाराज नुं मालम कीवी:
सेरपुर रै राजा वीरभद्र रो पिरोहित वि
क्रमाइत छै कुंवार कुंवर री विव
चर्जी नैं नालेर ल्यायौ छै: इतरी
सुण राजा बहुत खुस्याल हुवौ: फिर
मो घडीदार नै बगसीयौ अर आय
नै दीवांण नुं बुलाय कह्यौ: प्रोहित रै
डेरै सारी बात री आबतो करावौ:
मिठाई म्हण सब मेलावो रुपीया हजा
र एक मिजमांनी ना मेल्हौ इसौ
राजा रौ हुकम सुण दीवांण उरना
जौ माफक सारो भली तरै आबतो
कीयौ प्रोहित आबतै सुं बहुत राजी
हुवौ दूसरै दिन सरवरो समूरतो लग
न देख प्रोहित नैं हजूर बोलायौ रा
जा पोसाख कर सभा बणाय बैठा
छै: सतर खांन बहत्तर उमराव मुं
हडै आगै ढालां रौ कडो कीयां
बैठा छै घडीदार दरबारी सोने
रुपेवा आसाकां लीयां खडा छै:
दीवांन प्रधांन मुंहडै आगै बैठा छै:
पिंडत ब्राह्मण संस्कृत चरचा करै
छै: इसै मैं प्रोहित विक्रमाइत आयौ
राजा उठ आदर दीयौ बांह पसाव

कर कह्यै के बैठा: राजा री मुल्क
री वातां पुच्छी: इतै में कुंवर खीचि
व नुं बोलीयौ मुं कुंवर भली पो
साख कर आपरा हजूरी पासे वोरगा
साथै लीयां तारीफी पोसारव कीयां
दरबार आयौ: दरबार सारो ही उठै
ऊभौ हुवो: प्रोहित पुं कुंवर गमि
लीयौ कुंवर राजा रै मुख आगै
बैठा: महूरत ठीक आयौ ताहरां
राजा कनकरथ रौ जोतीषी बोलीयौ
प्रोहित जी उठौ म्हाराज कुंवर रै तिल
क करौ नालेर वंदावौ ताहरां प्रो
हित विक्रमाइत उठि तिलक करी
मोतीयां रा आखा दीया: नालेर
वंदाय हाथी घोड़ा रूपड़ो जहराव:
सरब ओरा नजर कीया प्रोहित
डेरै गयौ। दूसरै दिन प्रोहित नुं
बोलाय घोड़ो सिरपाव कड़ा मोती
जिनोई वगसीया अर साथै साथ नुं
जिसो लाजमो हुतौ जिसी निवाज
स कर राजी कर विदा कीयौ साहे
री ताकीद कीनी ताहरां प्रोहित अर
ज कीनी। मास १ पछै सेगास ला
गसी: सु मास १३ रहिसी ता पछै
ताहो वरसां: इन कहि कुंवर वहीर
हुवो कुंवरै रै साथै राजा सारा चाकर
मुतसदी दीया कुंवर सरब साज सौ

काम संभाय लीयौ: सारो जाब सवाल पूछै बहुत सपूत जीवतदार पिता री आग्यामें रहै: बडौ सुख देवै: इण करतां संगत उतरीयौ: जांनरी सामी तैयारी की: परणीजण चढीयौ: जाय परणीयौ बडौ रली रंग हुवौ: बडौ दब खरचीयौ: रात मोहल पौढण गयौ तद ओलगु दोय झरोखे रा रातरा ओलगीया: बहुत आछा ओ लगीया परभात बडी निवाजस कीवी: लाख पसाव कीबौ ओलगू हजूर राखीया: ताहरां ओलगुवां अरज कीवी म्हानें वरस १ हुवौ: म्हाराज वीर भद्र री चाकरी करतां नें जो हुकम हुवै तौ मुजरौ कर फेर रात आय आपरौ मुजरौ करां: तद कुंवर पु छीयौ के कहै छै तद ओल गुवां अरज कीवी: भुज नगर रै धणी रावल जाम अलवरी पातिस्याह रा वतनीक चाकर घरां घरां तौ काई कमी न छै: पण दाता रां नै देखण रै वगा मुलक फिरां छां जु वरस १ हुवौ म्हाराजा विल माम राखीया ताहरां कुंवर कह्यौ पे वरस १ म्हारै कन्है रहौ: ताहरां ओ लगुवां अरज कीवी राजाजी सारु छां: ओ राजाजी, तिणां देखी ताहरां

म्हाराज कुंवर कन्है आसां: ताहरां
विचत्र कुंवर कह्यौ भली बात छै
के मुजरै जावौ आपण ऊ गावस्यां इन्है
है पिरा भगत जीन अर आवां कांः आ
बात कहि सीख दीवी कुंवर डेरे आया:
घोडा दौडाया हदफरी चोरो कीवी:
पाछलौ पहर हुवौ ताहरां राजा वीर
भद्र तौ कुंवर हरभद्र असवारां स्हार
१ सुं भगत जीमरा रै वगा को
लावंरा आयौ। साथ सारो तैयार
हुइ सखरी उमदी पोसाख करि कुं
वर विचित्र साथ राजा रै दरबार
गया: मजलस हुइ साप नैं अमल
पांरणी री मनुहार हुवै छै रा
गरंग कलावंत गायका करै छै:
कबोरवै तीचै ओलग्र गावै छै:
सु विचत्र कुंवर री नजर तौ ओल
ग्वां मांहे छै: ओलग्र पिरा खु
ल गावै छै: रबाब सांरगी
ढोलक मांजीरा रो वाजो छै इसौ
ही कंठ रौ सुनार छै इसौ ही रब्है
जूनो। गुरा छै: सु सारी ही वातां
रौ ताल मेल मीली यौ छै: इसा
में पातीसा नारगीया कुंजाई सारो
साप आइ बैठो छै विचत्र कुंवर
फुरमायौ ओलग्र पिरा ऊपर आ
वै कुंजाई बैसे ताहरां राजा वीरभद्र

छडीदार नें हुकम कीयौ सु सतान हरदांन जोग
जांन शिवदान रामदांन च्यारांही ने ऊपर सो
लाय ले आवौं: महाराज याद कीयौ तद
ओलगर ऊपर आय महाराज सुं कुंवर बि
चत्र सुं मुजरो कीयौ बिचत्र कुंवर रो
नगारची नाजदार बैठा था: तिकां सामल
आय बैठा भली भांत सुनाई जिमीया:
पानां रा बीडा दीया अतर फूलै री
मनुहार हुई: डेरा नुं सीरव कीवी ताहरां
बिचित्र कुंवर नाजा। बीरभद्र सुं लाच
जोडीया ताहरां राजा बीरभद्र लग लगा
कहि: हाथ काल बीमा च्याली सुं लगा
य राजा कह्यौ बाबा कादं कारज
जे बदले इतरी बो कहो औ राज
पाट भंडार घोडा हाथी सब थारो
छै: ताहरां बिचित्र कुंवर अरज कीवी
हरदांन ओलगर मनैं बगसजे: राजा
बीरभद्र कह्यौ भली बात छै आ
पछै दीवान नें बोलाय कह्यौ: लाख
१ नगदी घोडा ४ सिरपाव मंगाय आंगा
हाजर क्रिया: ताहरां हरदान ओलगर
नें बोलाय बगसीया आपरे पैहरण रा
पोसाख हुती तै गैहणो हुतौ सु
सरब बगसीयौ: बिदा कीयौ तैमें
कंठी १ मोतीयां री हुती: ते माहें
लाल दो पाव चौ तिपर ब्रेस चौ
सवालाख दै कीमत री: सु केदी पिता

किला बरवांरा बडी मनुहारां कर
विदा कीया राजा वीरचन्द्र रौ कुंवर
सायौ बहन नुं पहुंचावरा हुवौ गजह
योग आयौ: तठै वीचीत्र कुं
वर हरषन्द कुंवर नुं विदा कीयौ:
लाल कठारी मैं हाथी एक घोडा
५० माला मोतीयां री किलंगी जड़ा
वरी दीया साथ लगै घोडे गो
रै नैं सिरपाव दे विदा कीया
बडो रस रहा कुंवर विचत्र घरौ
हरष सुं परणीज अर घरां प
धारीया: राजा साम्हेलो बरातम
साम्हो आय गाजे बाजे सा मदारां
बाजतां बधाय भीतर लीयौ: घरौ
हरष राजा रै पचासां वरसां कुंवर
हुवौ: यौ एका एकी कुंवर फेर कुं
वर सरब राज भार संभालीयौ:
तेसुं घरौ हरख कोड सा रौ
लोक करै: राजरौ मुलक रो कं
काम सरब कुंवर बसु: इव करतां
बरस ४ वितीत हुवा: कुंवर विचित्र
रै कुंवर हुवौ: बडो हरष हुवौ
नानांरौ सेरपुर बधाई गई घो
डो १ मोती सिरपाव कपीया हजा
र दोय रोकड़े विदा कीयौ सु
दसोठरा रौ रूपड़ौ जहरौ रे
मुतसद्दी नुं मेलीयौ: सु बोधुगढ

आय डेरो कीयौ: बोहत जाबतौ
हुवौ सहर मैं घर घर बधाई वा
टैं छै: लख हुय रह्या छै:द
सोटरा हुवौ मुलक सब जीमीयौ
राजा वीर भद्र रौ मुहतौ नाम क
पडौ गहणौ ल्यायौ सौ मु सर
ब राजा कनक रथ री नजर गुद
रायौ: राजा मुहतै नुं घोडो सि
पाव मोती कडा दुग दुणी बग
स विदा कीयौ: कुंवर विचत्र है
मुजरै आया ताहरां कुंवर विचित्र
सिरपेच बगसी यौ: बडी मनुहारां
कर विदा कीयौ बाद कुंवर मोहलां
पाछा गयौ: ओलगुवां नुं हुक
म हुवौ करोरनै च्यार पहर रात
ओलगीया: लाख १ परभात इनाम हु
वौ: वडे लाज मैं कारखाना मुं रहै:
हेक दिन हरदांन बोली यौ भाई
गोगदाण बीजी तौ बात छै जि
कुं भाने ज्युं पाखसां परा आ
मोतीतांरी रेठी छै सु आपां मुं
न रहै: तेसुं आ कंठी आपां
कुंवरजी नुं सांपा: हेक दिन ह
दांन कुंवरजी सुं अरज कीवी रेठी
खोल रुमाल मैं मेल नजर कीवी:
ताहरां विचत्र कुंवर कह्यौ आ कडुं
ताहरां हरदांन अरज करी उण वखत

म्हां लायक नहीं आप रखावौ ना
जावां लायक छौ: नाहरां कुंवर
विचीत कह्यौ हूं लेवाल नहीं देवाल
हुं: अब आ कंठी थे बेचस्यौ
तौ छानां ना रै नावं दानं नी कांई
खबर पडली: नाहरां हरदांन फेर
अरज कीवी म्हारी फही कोठार
राखजे: नेर म्हे डूंगर चढो काढलेसां
आंग पीय जप रहस्यां तो गुमान
देवां काहरां टूट जावै तौ गम
जावै बूर राखां तौ मोती जली
मैं जल जावै: तेहुं आप हस्तु
कोठार राखजे तेहुं कुंवर कह्यौ
कही साहूकार रै राखौ नाहरां फेर
हरदांन अरज कीवी: साहूकार कोई
मोती बदाय लेवै तौ पछै लड़
ना भूंडो लागां: फेर म्हांरी हूंमी
वाल बजै तैमुं कोठार राखजे नाह
रां कुंवर कंठी लीवी: भीतर मो
हल पधारीया तै वखत छयै रै
तैपर मैं घात जतन सुं ढोली
मै पै पधारौ आलो थौ तेमैं
फल थी तै फल मैं राखी: पु
कुंवर विचत्र आंरौ बीजो भिरा
ही तुं खबर नहीं इव राज
करै रइयत सारी राजी: राज
रौ काम सरन विचत्र कुंवर करै:

राजा कनक रुप मोहलां मैं बैठां ओरवा कहै: पोतरै सुं बहुत प्रीत सनेह रात दिन हजूर मैं रा खै विलाते नांव कुंवर रौ देपाल दे काढीयौ सु देपालदे नरा दोय सै हुवौ: राजा कनकरुप री हजूर मैं रहै: इन करतां विराजा रो स नाला खो आयौ तिण रै सवालाख वा लद हजार रे वरकम दार वडा बे रा पोचसव असवार नगारो मुहै सुं आगै: बाजै पोच रुप दोय सु खमाल: दोय हाथी सु इसै ला जमैं सु नायक सवालाखो आयौ: सवालाखे रै एक बेटौ सु तैरो नाम सुजांरग: सु निपट सपूत लांडै रौ सूत: सरब नायक सुजांरा रै हाथ: सु नायकरै साथै हाथी १ दरीमाई चौमुखौ तैरी खबर विचीत्र कुंवर नुं हुई: सु वडौ हाथी छै औरावत री औलाद छै: ताहरां विचित्र कुंवर कहौ रे राजारौ म्हाराज रै मुजरै आसी: ताहरां पूछतां दूजै दिन नायक सवा लाखो सुजांरा पालकी बैठ राजा कनकरुप रै मुजरै आया: सातां लाखां नाफा २ कस्तूरी रौ पूडी १ मूंगीयां रौ वरनार १ असील कती

वात तो अनोखो दूजो मेवो कपड़े भांत भांत रो निजर कर बैना बतलावंता कर नै पान रा बीडा दीया विदा कीया: कुंवर विचित्र नुं मुजरो करंता गया कुंवर बड़ो आदर दीयो: कुंवर री नजर मेवो कप ड़ो कीयो: ताहरां कुंवर रै मन मैं तो ~~बात~~ हाथी री बात थी जु कुंवरजी फुरमायो औ वात मेवो तो म्हारे ही थराटी छै: थे परदेस परखंडा रा फिरता हार च्यो काई अ पुरब बस्त ल्यावतारी थी. ताहरां नायक सवालाखे सुजांणा बैरे साम्हों जोयो: ताहरां सुजाणा उठ डेरे जाय तरडे १ सवासेर री: सुमरणी १ इकतुरंगी: लुदरी आंणा नजर कीवी: कुंवर बहुत राजी हुवो पानां रा बीडा बगसीया: विदा दीवी नायक सवालाखो सुजांणा डेरे आया: कुंवर जी दोनै वसतां उठै हीज मोहल मैं कलगैं राखीया परभात कुंवर सुनारे ही सेवा पूजा कर थाली आरोग पोसाख कर: म्हाराज रै मुजरै गयो: काम काजरी सारी अरज नै नती कीवी: फेर राजा फुरमायो सु जीवमें आवीयो: कुंवर उठ हाथ जोड अरज कीनी जु म्हाराज नायक

रै हाथी १ छै दरीयाई छै चौमुखो
छै बोहत आछो हाथी छै जो हुकम
हुवै तौ मोल लीजै: तारां राजा
हुकम कीयौ भली बात छै थारे मन
छै तौ सताब ल्यौ: कुंवर मुजरो कर
डेरे आयौ: घडी दार १ चंदणा जोवे
महरवाणगी रौ चाकर: पो बहुत त
मबादौ छी तेनैं फुरमायौ जाय
सुजांणा नायक नुं बोलाय ल्याव चंद
रा पकडीदार दौडतौ ही गयौ जाय
नायक नुं कह्यौ: कुंवरजी बोलावै
छै: सु जांणा सताब कुंवरजी रै
हजूर आयौ बातां कीवी: कुंवरजी
फुरमायौ हाथी एक दरियाई छै: सु
म्हांनुं मोल देवौ: तद सुजांणा
नायक अरज कीवी: हाथी सवा
लाख नै नायक नें पातिसाह फुरमायौ
नौ तै ल्याया घणां सु कुंवरजी
रै चुप छै तो आप उठै पधा
रौ ज्यु नायक नुं दबाय हाथी ले
वां: वात कुंवर मांनी मिठाई मं
गाई अतर मंगायौ सु ओसारी
मुनहार कीवी: पान बगसीया खंजर
एक बोहत बेस विचत्र कुंवर नाय
सुजांणा नुं बगसीयौ: डेरे नें सी
ख दीवी: दूसरे दिन परभात सेवा
पूजा कर थाल आरोग राजा रै

मुजरो कर असवारी करी नायक स
वालाख रै डेरै पधारीया नायक
बाप बेटे दोनुं साम्हां आया: पावां
लागा डेरे भीतर पधार विराजीया: मि
जमांनी री नायक जाबतौ करायौ कुं
वर विचित्र वार्ता कीयां देस मुलकां
री बातां कीनी: इसै बीच सुजांणा
नायक सुं कह्यौ महाराज कुंवर
हाथी दीलीया फुरमावै छै: ताहरां
नायक हाथी मंगाय नजर कीयौ: ता
हरां कुंवरजी फुरमायौ हाथी रौ मोल
कहौ नायक कह्यौ मोल कोई लेऊं
नहीं: रव गाढ हुवौ पछै रुपीया
हजार ४० बेर लागा था सु भर
लीया: कुंवरजी री नजर किलेगी १ हमा
ऊं जानावर रै परां री: आनखांणा
१ गरम पोत रौ संदल १ दरवरा ऊ
पंगो १ भारड पंरवरी नली रो जैरी अ
ध अध हाथ रो गरदस बज काई
पडै इसा भांत री प्यार वस्त नजर
कीनी: बडो प्यार हुवौ सुजांणा नायक
सुं कुंवरजी पाच कीवी: भाईपो हूवो
मास १ रह्या जगात पोहरी हुकी ना
पछै चालंणा री तैयारी हुई ताहरां
सुजांणा कुंवरजी रै मुजरै आय वातां
कर डबी १ जुहार री लाख ४ री सांपी
जो आप कनै राखौ फिरतो लेतो

जाईल नायक सुं घणौ छै रोजीनो गा
र संभालसौ तैसुं आप पास राखौ
साहरां कुंवर फुरमायौ म्हारै कांहरै खरच
पड जासी तैसूं कही साहूकार मैं
राखौ: तद मुजारा नायक अरज कीवी
जो खरच पडसी घर चै भली हुई
साहूकार सुं म्हारौ मन परचै नहीं तद
रां कुंवर निचत करसौ डबी खोल
कीमत कराय सांप साहरां डबी खो
ली जुहरी नुं बोलाय कीमत करा
ई: रुपीया लाख ४ री डबी हुई:
उवा डबी ही उवै कल रै आलै मैं
राखी: दूजै दिन नायक दरबार विदा
मांगरा नुं आया: राजा कनकसेन
रौ मुजरौ करायौ कुंवर म्हाराज सुं
अरज कीवी: नायक जगात आपी
भरी भली भली बसतां ल्याया: हुक
म हुवै तौ सिरपाव दीजै राजा
फुरमायौ आछी बात छै: साहरां
दोनांही नायकां नैं सिरपाव कड़ा
मोती बगसीया: वडी दिलासा की
वी फेर भार ले सताब आव
ज्या: राजारौ मुजरौ कर कुंवर
आपरै डेरै ले गया: वडी वातां
कीवी सिरपाव दीया सिरपेच १ मुजा
नायक नैं दीयौ: वडी प्रीत बधाई
साहरां नायक सवाल रवे, हाथ जोड

कुंवरजी सुं बेनती कीनी: काई वस्त
फुरमावौ ज्युं परदेसां सुं ल्यावां. वाहरां
कुंवर फुरमायो घोड़ो १ औराकी: अबल
स ल्यावज्या: जोडी १ मोतीयां री नर
मादी री ल्याव ज्या: और ही काई
खूपदार वस्त देखौ तौ ल्यावज्या
इतरी कहि विदा कीया: नायक तवा
लाखो तो डेरै गयौ: सुजांणा नाय
क कुंवर विचीत्र री जोडी गयौ वजार
वरा सुं भीतर गुजरो मालम करायौ
अरज कराई वस्त दिखावणरां री हुकम
हुवै सु फुरमावौ: ताहरां भीतर सुं
कुंवर री तंबाली मोहरां १०० एक सन
मुहार री मेल्ही वस्तां नौ रुको:
उतार मेल्हीयौ सु ले सुजांणा ना
यक डेरे आयौ: कूच कर वहीर
हुवा वांसे कुंवर मुलक गीरी नुं
असवार हुवौ मुलक भोमीयां सा
वा रस कीया: मुलक दोय तीन
दुजा नवा दाबीया: पातसां नमाया
बरस दोय तीन मुलक गीरी कर
घरां पधारीया: दीवानं सुंदर दास
ऊपर काम रो मुदो साह सुंदरदा
स. रो बेटौ बेणीदास सु कुंवर
जी री हजूर रेहे बडा स्याम धरमी
पीढी बंध रा कामदार बड़ा मुत
सदी सदी: छोटा मोटा सात सब बीजा

कांमदार सु सुखी रहै आप आप रै
हीलै मैं निपट खबरदार: सु राजा
ही बीच कुंवर राज भारी चातीयौ ब
डी दौलत बधारी: लोक बहुत सुखी
कीया नवां मुलक परगना दाबीया: इव
करतां कुंवरजी एक दिन तलाब पधा
रीया: गोठ करनाई सारो साथ लार
छै: हजुरी सारा साथ छै आप आ
प रा हवाला लीया: खडा छै
अमल पांणी कीजै छै: मिठाई रौ
जाबतौ बैराती दास स्पाट करावै छै:
मिठाई वंटी छै कुंवर खासां हजुरी
यां साथ तलाब मै झूलै छै: वडो
तलाब छै जल सिरांते मांहे कुंवर
डुबी मारी थी सु नीसरीयौ नहीं
सारा जोवरा लागा पीरा हाथ ना
आयौ: जितरै देही तिर ऊपर आय
गई: सारा देखवरा लागा हा हा कार
शब्द हुवौ: सास कुंकरा ने लाग
गया: राजा कनकरथ नुं खबर हुई:
सु बहुत विकल हुय गयौ जीव अल
गयौ: राज लोक सारो ही शूक
भेलो हुय गयौ: दीवांण मुं धडास
दीठी कुंवर री तौ आगल हुइ
गई: अंर राजारी देह छूटै छै
तो राज सारि छै वाहरां कुंवर रै
पालदे में उठाय: राजारी
चाली कुं

लागा यौ नाक आंच लाबचेत कीयौ: राजा कालेलो पडवा लागो तारहां लास मुं रदास अरज कीनी: ज्युं कुंवरजी रै भविख यौ त्युं हुवौ: देपालदे रै वी राठ दिलगीर छै कुका रोले सुं कोदरीज गयौ छै: तिरा सुं म्हारा जा दिलासा करौ इरा ऊपर जीव टेको: इसी आंतरी घरगी परचावं सारी कर राजानें धीरज देधाय जनानी डोढी गयौ जनानें सारै ही नुं धीरज दीनी कुंवर री मां अर मोहल दोने हठ कर बैठी तारहां कुंवर री मां ने तौ आ कही जु थे सुग्यान इतरा सासत्र सुरगीया कथा सुरगी तेमें कहेली इसौ हठ करयौ छै: फेर अवतार भगवांन समांन छै ने यै वात सु सीदीकी हंसती इव कठि बांरगी री हठ छोडायौ: फेर कुंवर री वहू नुं समझाई जु राज रौ काम सुरग हलासी म्हाराज तौ वृद्ध हुवा कुंवरजी री पुं देपालदे बालक छै जो राज रौ यौ छै आप विराजो: परमेस्वर जी नीमित्त धरम पुन्य करौ: सह जमत करसौ तौ अरगासनको रौ काम छै: हठ छै अर वोसे रह कारज करौ: धरम करो कुंवर देपालदे

BITS PILANI (RAJ) BITS

ने पाल मोटो कर राज काज सुधा
वो इसी वात कहि बे कुंवर री रांणी
री पिरा रह सुडायो: सारो लोक उग
राज भेलो हुय जाय उवे देह रो का
रज कीयौ दाग कर सिनांनां कर
पाछा आया तीजे दिन तोइयो कर
फूल काले ड़ो घी गंगा जी बुं नहीर
कीयौ: किरीया कराय द्वादसे रै
दिन ब्राह्मण भोजन कीयौ कुंवर
रैपाल दे बुं राजा कनकरुप खोलै
मैं लेय पाघ बंधाई तिलक कर
सिंघासण ऊपर बैसाण राजा सुहारकी
सारां भायां अमरावां मुतसदीयां कहां
मुजरो नजर कराई: कुंवर विचत्र रा
हजूरी खवास पालेवांरा मुहतो वे
रीदास चंदरण चडीदार सारा ही बेराजा
कनक रुप स्युं था तिकोहीज रवीज
मतां सिरखडा राख कुंवर री ओलखरा
दीन्हीं: ओलग्र दिन बाहरै रौ सवहे
ओलगीया तेरवें दिन राजा कनक
रुप तखत रै वरवत बुलाया: ताहरां
कोई आया नहीं दुजे फेरे फेरबो
लाया ताहरां दरदांव गौ सिर में
राख घात नहीर हुवौ गोगदांव
सिवदांव तीहसै कूकतां रोवतां ने हजूर
पीव ल्याया: केर सारै राजलोक साह
रौ में मयो रोज हुवो सार सुंदरदास

सारां ने चीरज फेर बंधाई नोबत त्वां
नो सरू करायौ: अर कुंवर री जीव
नीसरीयौ सु देवीदासरी खोड ठाकुर
द्वारै मैं पडी थी जेनैं जाय कडीयौ
खोड उठे ऊभी हुई देवी दास प्रणाम
कीयौ तद भीतर सुं आवाज हुई चलक
दरियाव रौ नगारो दीठौ हां म्हाराज
दीठौ आपरी कृपा सुं दीठो फेरआ
वाज भगवांन री हुई जो आ बात
कही ने कही तौ तै घडी घारी
देट धूरसी: सु बराबर दार रहै दोप
हवे देवीदास घरो आयौ आगै
देवीदास री मां भीमरा लीयो बैठी
थी कह्यौ बेरा मोडो आयौ भीमरा
हंडो हुवौ ताहरां देवी दास कह्यौ
ताल तौ काई लागाई नहीं जावंरा
आवंरा कीयौ तिडकी लपी थी तेसुं
पडी देय ठाकुर द्वारे मैं लिडकी रा
ली सताब भीमरा जीम पांणी री
गंगाजली चाकर रै हाथ देय चोहटै
हाटे गयौ: आगै साट अजैपाल
कह्यौ साबास भलो वेगो आयौ
आज हाटे काम थौ ताहरां देवीदास
कह्यौ ताल तौ काई लागी नहीं जावंरा
आवंरा ही कीयौ इतरी कहि देवीदास
काम लाग गयौ: नावां ~~के~~ ठावौ मांडै
छै बाजार रौ देतो लेरायौ ना वौ

लेखो सरब देवी दास नै साथः अर
ओलन्द्र हरदांन रामदांन दोनुं अतीत
हुय तीरथा नुं नहीर हुवा सु श्री मथरा
जी परस श्री हरद्वार गया आगै श्री
केदार नाथ जी परस श्री बदरी नाथ जी
परस नहोर धारा परस कासी पर
स प्रागजी आया। मकर रौ महीनो
नाहंदा कर फेर पाछा गया जी गया
ऊठै पिंड भर श्री बैजनाथ जी परस श्री
जगनाथ जी परसीया श्री मारकंडे कुंड
तरपरा श्री केस कड पिंडारा कुंड
रा भरीया बोंदरी कुंड तरपरा
कीयौ मलेाद्ध स्नांन कर काड खंडै
मारग हुय दखरा रो तीर्थो क्या
गया विश्रा कोची शिव कांची परस
सेत बंध रामेसर परस श्री त्रपती जी
परस श्री लखमरा जी रौ दरस
राकर श्री पेन्च तीरथी परस श्री
द्वारका जी परसी तठै अतीतां दस
बीस रौ साजो हुवौ: ताहरां कह्यौ
आपां गिरनार रौ तमासो देख पछै
पछे जासां आगै श्री हींगलाज जी
पास पछैमरा तीरथ करसां ताहरां
गिरनार आया गिरनार सुं वटे
जावतां बीच पाटरा आय डेरो
कीयौ प्रभात बाजार री सैर नें अतीत
फिरता था जितरै अजै पाल साहरीः

हार साम्हो ओयो त्युं हरदान बोली
यौ रे रामदोन तमासो देखाऊ ऊ
जोय कुंवरजी सागी बैठा ताहरां रा
मदोन देख कह्यौ सागी छै अठै
बादसाहरे री हार बैठा नाठो क्युं माडे
ताहरां हरदोन बोलीयौ रे भाई ऊ
तौ पिंड आपां दाबे कुंकीयौ पण
इणाहारो तौ सागी छै: पडी १ ऊभां
ऊभां ओयो आछा पाछा हुय रह्या
इतरे देवीदास बोलीयौ अतीतां क्युं
खजा कांइं देखौ ओरवले मारगा
लागौ ताहरां रामदोन कह्यौ हरदोन
सागी कुंवरजी छै सागी बोली छै
फेर कन्हे से रबील आगा ऊभा रह्या
ताहरां देवीदास कह्यौ कांइं देखौ क्यु
चाहौ तु कहौ ताहरो रामदोन फेर
कह्यौ रे भाई सागी छै: कुजरो
कहौ ताहरां नीराठ कन्है आय ऊभा
रह्या देखै तौ कांइं सागीबीज
छै रुमाला आदमी सारा दूर हुवा ता
हरां रामदोन कह्यौ हुं तौ बतलाई
स: बिना बोलायौ कोई रहुं नहीं:
जितरै देवीदास वही नीची मेलर नाडो
खोलेरा ने उठीयौ ताहरां इहो क
हिता तु इहो कहिजो साम्हों जो
य कुंचीयौ तौ सागी छै: ताहरां
हरदोन इलौ कह्यौ:॥ बिन्चित्र कुंवर

बरवांरणी पों: च्यारूं वरणा चकार: . . . .
कनक मुत: दीपे जगदातार: औ इहो
हरदांन कल्लौ ताहरो देवी दास इहो जुगा
पुधीमां सामीजी औ इहौ कैरो कल्लौ
थां कहै भी लीखीयौ नह हरदांन कल्लौ
कुंवरजी साहब म्हांको कल्लौ छै: ताहरां
देवीदास कल्लौ औ तौ इहौ हरदांन
ओलख रौ कल्लौ छै: इतरी मुराद
जुदाई नहीं आई जद जद कंठ हुइ सलां
म करता लागा फौस पडीया देवी
दास पिता जमो देख देख अर
ओलखीया बीजो तौ देहरा विदेह
हुय गया पता नाकरी दीसी आं
वगां मुं अर बोली मुं उलखीया ता
हरां देवीदास कल्लौ आ क्राद्दे दसा
देहरा विदेह हुय जाया ओलखणी
ही आगा नहीं ताहरां हरदांन
आखलुटि सलांम कर अरज कीवी
हां म्हाराजः कुवांर जिकां रा चरणां
छोड आवै तिकां चाकरां रौ ओहीज
हवाल हुवै: अर मांहरौ क्राद्दे अर
वांसै राज छै मु सरब इयै हवाल
छै: इतरी सुरा कपीयो एक १) गुजे
मतां काटि. हरदांन नुं दीयौ जीमरा
री चाकरी तिमां स्याम आया वातां
करसां थान। रल्ला सुभराज मतां
करज्यां राम रांम करज्या। जु कोइ लखै

नहीं इतरी कहि सीख दीवी आप
फेर हार रौ काम काज कर निमा
स्यांग हुई ताहरां बेही पानां लेभाय
कोथलो गुमास्ते रै हाथ दीयौ हाटरा
ताला सखचार च्यारां नै उहीयौ इसै
वखत मैं हरदांन रामदांन आय जै सी
रांम कीयौ: आपही राम राम कर सा
थै ले बहीर हूवौ: अतीत घर रै
बारणौ बैठा आप भीतर जाय जीम
चूठ बाहर आयौ साह अजेपाल नुं
कह्यौ बाबाजी आज म्हारे आवस
छै तैहुं नोहरै जाय डील दबा
के छुं कह्यौ भली बात इतरी
कहि नोहरे आय जायां भैसां
वैहलीयां रौ जाबतो कराय चाकर
नुं कह्यौ देवला ढोलीयौ परसाले
ऊपर घात रे देवलै साल ऊपर
ढोलीयो बिछाय दीयौ तै ऊपर
~~[illegible]~~ देवीदास आय बैठो हरदांन रामदांन
मुजरो कर मुंहडै आगै जाय बैठा
सारी वातां पुछी पूछली सारी हकी
कत कही सुरता सुणा काहरे राजी
हुवै छै काहरे दिलगीर हुवै छै
फेर कह्यौ थांहरी केडी पड़ी छै
अर डबी १ सुजांरा नायक री छै:
सु थे उठै जावौ थांरी केडी लेवौ
नाकरी डबी नायक आवै ताहरां नायक

नुं देरावज्या: हरउ १ उमराव १ इकमुखी लुहराव री छै सु हरडे तौ कारखा नैं रावज्या सुभरा देपालदे नुं दे ज्या म्हारे मोहल मैं दोलीयै है पगां तीयै आलो छै तेमें फल छै तेमे छै सु जाय लेवौ। म्हारो नोंव मतो ले ज्या: ताहरो हरदांन कह्यौ ~~न~~ कह्यौ म्हाराज कुमार विना नोव लीयां वस्तो कुंवर मांजी जाहिं ताहरां देवीदास कहीयौ वे मुं कहिज्या मेह ओहवा रीया जाया था उठे मिलीया था ताहरां उवै वस्तां वतायां सु जाय गा मोनाजी वस्तां लाभै तौ साच छै ताहरां हरदांन कह्यौ इसी तौ ~~वस्त~~ वात म्हांसु हमै कही न आवै: म्हां तौ परतष देखता कीयौ सु इसी वात क्युंकर कहां भली तौ आ छै आप उठै पधारो राज सारो दुखी छै अठै वासीयै दे घरे कांइ करसो उठे तो एके घरमें सीज उआलो छै: हजार हजार कोसरे फेरौ सारो मुलक दुखी छै: मांन तो घरो डीयां वरस ५ घट हुवी पंता दिन ४० तांई आपरासि लीव मंहा उहा सुर इगत लोक सारा ही ते देषा मा था छकीयां बैठा विलुररा करै था अर बारह दिन सहर मैं नका जितरै

तो सारे लोकरे होंडी नेला वखत कहीं रे चटी
नहीं थी: सु उठै तौ इतरौ अँधार छै
सु आप पधारौ तौ सूरज उगो थोमीया आ
प दाबीया घा सु आप आसौहीज छौ:
उसा जोरावर मांगास आपहीज छौ:
तिको पिता चौकस सिर उठायौ हुतौ: गो
राज नें धरती नें दुखलील हुती: कही
अनेक बातां कहि परचायौ घणौ ही
पिता देवीदास आहीज कही जौ चे
जावौ म्हारो नाम टरागीज मतां लेया
आ बात मुंहीज हुवेणहार थी: टरदान
कह्यौ वात तौ हां दीनी सु कहि
सां दूजी मांसु नराय काई कही
जावै नहीं: इत कहि मुजरौ कर
टालवा लागा कमीया २०) खरचै रा
दीया: अर देवीदास कह्यौ आवै री
कूंची सत्ज बरदार मोहरा कन्है छै
सु मांगलेज्या मोहरा इतबारी छै:
कला जोर कन्मां कुंवर देवीदास जाय
जप रह्यौ अर इयां ती उठै
बोलाहीज बांधुगढ री मारग लीयौ:
सु रात दिन कालौर खेपीयै री
तरह चालतां बडे सुं दिनां ३१ मां
आप बांधु पहुंचा: परभात रौ सो
हर छै राजा कनकरथ दरबार बैठा
छै कुंवर देपालौ पाचोले मांहे छै
हवाली मवाली उमराव सरब मुंदड़ै आयौ

छै: बिकाजारो मवालखो सुजांरा परा
आया खबर तौ लहर बउगा नै कीज
हुई थी: डेरो कर तुरत दरबार गया:
तद दरबार गया सुजांवा बड़ो अनोह
कीयौ राजा पंरा सुजांरा नैं देख घ
णौ अनोह कीयौ: राजा परा सुजांरा
नैं देख घणौ अनोह कीयौ डोढ़ी
सुजांरा जाय मुजरो गुदरायो भीतर
रांणी कुंवर री सुजांरा रौ नांव सुं
णा फीस पड़ी अचेत हुइ गई
नीठ नीठ सावचेत कीवी: इसी हली
ही दसा सुजांरा नायकनी हुई: सु
नायक नैं पंरा चाकरां सावचेत कीयौ
- - - - - - - दिना नायक सुजांरा नायक
पाघ १ घोड़ो १ कुंवर जी मेगायौ
थौ: - - - - - - - दरबार गयौ जाय
पाघ देपाल नैं बंधाई घोड़ो टीकै
कीयौ मोती नर मादा ले आया
था सु राजा रै नजर कीया क
पड़ौ रांणी मगायौ थौ सु मेल्ही
यौ रांणी री नजर कीयौ रांणी
कल्यौ इमें कपड़ो म्हारे कांई काम
नहीं तांहरां नायक सुजांरा अरज
कराई कुंवर देपाल नैं परणालौ जद
काम आसी: चूड़ो १ चलो दौ बहुत
बेस आलील ल्यायौ थौ सु नजर
सुज गुदरायौ: तारी बस रो लेखो

कर नांणो दरायौ मोती नर गाडी
ल्याया हुता तिकै रा रूपीया हजार ४०
बेठ लागा हुता सु लीया वधता था
सु पाछा दीया इव चटापटी कर ना
यक मुजरो कर सिदारी मांगी: नायक
वहीर हुवौ पछै दूसरै दिन हरदांन
रामदांन दरबार आया: मुजरौ कर
~~बधाई~~ कह्यौ म्हाराज बधाई दीजै
म्हाराज कुमर जन्मै छै ताहरां राजा
कह्यौ जै कुण छै कह्यौ: तरै दर
बारी पुछायौ अतीतां थे कुण छौ
कांसु कहौ छौ ताहरां रयां कह्यौ
म्हे हरदांन रामदांन ओलग छां कंवर
जी सुं मिल आया छां ताहरां राजा
~~राजा~~ गद गद कंठ हुय कह्यौ जै
बापड़ा गहला हुय गया छै उवेही
महरबानजी रा चाकर था: पेटीयौ दे
लावौ दिलासा करा ताहरां हरदांन
कह्यौ म्हाराज म्हे गहला कोइ हुवा
न छां बात चोखवा छै: म्हे मिल
वातां कर तावा समाचार ल्याया छां
सहनांणा ल्याया छां ताहरां साह
सुंदर दास अरज कीवी: म्हाराज जै
बोलै तौ सावचेत छै: ऊंचा बोला
य रूपऔ दिलासा कर ताहरां ~~राजा~~
राजा कह्यौ वो नांणौ ताहरां ऊंचा
बोलाया: ताहरां हरदांन कह्यौ पाटरा लैहर

छै: खिवाजारो सवालखारो सुजांरा परा
आया खबर तौ सहर बडा नै कीज
हुई थी: डेरो कर तुरत दरबार गया:
तद दरबार गया सुजांरा बड़ो अनोह
कीयौ राजा पंरा सुजांरा नै देख घ
णौ अनोह कीयौ: राजा परा सुजांरा
नै देख घणौ अनोह कीयौ डोढी
सुजांरा जाय मुजरो गुदरायो भीतर
रांणी कुंवर री सुजांरा रौ नांव सु
णा कीस पड़ी अचेत हुई जई
नीठ नीठ सावधांन कीवी: रई इती
ही दसा सुजांरा नायकनी हुई: सु
नायक नैं परंरा चाकरां सावचेत कीयौ
. . . . दिना नायक सुजांरा नायक
पाघ १ घोड़ो १ कुंवर जी मंगायौ
थौ: . . . . दरबार गयौ जाय
पाघ देपाल नैं बंधाई घोडो टीकै
कीयौ मोती नर मादा ले आया
था सु राजा रै नजर कीया क
पड़ौ रांणी मगायौ थौ सु मेल्ही
यौ रांणी री नजर कीयौ रांणी
कह्यौ हमें कपड़ो म्हारे कांई काम
नहीं चाकरां नायक सुजांरा अरज
कराई कुंवर देपाल नैं परणासौ जद
काम आसी: चूडो १ चले तौ बहुत
वेस आतील ल्यायौ थौ सु नजर
सुम गुदरायौ: सारी बात रो लेखो

कर नांखो दरायौ मोती नर गादी
ल्याया हुता तिके रा रूपीया हजार ४०
केर लागा हुता सु लीया वधता था
सु पाछा दीया इव चटापटी कर ना
यक मुजरो कर सिदारी मांगी: नायक
वहीर हुवौ पछै दूसरै दिन हरदांन
रामदांन दरबार आया: मुजरौ कर
~~वधाई~~ कह्यौ म्हाराज वधाई दीजै
म्हाराज कुमर जाम्यौ छै तारहां राजा
कह्यौ औ कुरा छै कह्यौ: तर दर
वारी सुखीयौ अतीतां थे कुवा छौ
कासुं कहौ छौ तारहां स्यां कह्यौ
म्हे हरदांन रामदांन ओलख्या छां कंवर
जी सुं मिल आया छां तारहां राजा
~~[illegible]~~ गद गद कंठ हुय कह्यौ औ
बापड़ा गहला हुय गया छै उवैरी
मलखानजी रा चाकर था: पेटीयौ दे
लानौ दिलासा करा तारहां हरदांन
कह्यौ म्हाराज म्हे गहला कोइ हुवा
न छां वात जौरव छै: म्हे मिल
वातां कर हावा समाचार ल्याया छां
सहनांणा ल्याया छां तारहां साह
सुंदर दास अरज कीवी: म्हाराज औ
बोलै तौ सावचेत छै: ऊंचा बोला
य रुपजै दिलासा कर तारहां ~~[illegible]~~
राजा कह्यौ के जांवां तारहां ऊंचा
बोलाया: तारहां हरदांन कह्यौ पाटरा तैर

छै: बिराजासो मवालखाने सुजांरा परा
आया खबर तौ सहर बडा नै बीज
हुई थी: डेरो कर तुरत दरबार गया:
तद दरबार गया सुजांरा बड़ो अमोह
कीयौ राजा परा सुजांरा नैं देख घ
णौ अमोह कीयौ: राजा परा सुजांरा
नैं देख घणौ अमोह कीयौ डोढी
सुजांरा जाय मुजरौ गुदरायो भीतर
रांणी कुंवर री सुजांरा सौं नेह सु
रा फोस पड़ी अचेत हुय गई
नीठ नीठ सावधांन कीवी: इसी हली
ही दसा सुजांरा नायकरी हुई: सु
नायक नैं परा चाकरां सावचेत कीयौ
. . . . दिना नायक सुजांरा नायक
पाघ १ घोड़ो १ कुंवर री मंगायौ
थौ: . . . . दरबार गयौ जाय
पाघ देपाल नैं बंधाई घोडो टीकै
कीयौ मोती नर मादा ले आया
था सु राजा रै नजर कीया क
पड़ौ रांणी मंगायौ थौ सु मेली
यौ रांणी री नजर कीयौ रांणी
कह्यौ हमें कपड़ो म्हारे कांई काम
नहीं वाहरां नायक सुजांरा अरज
कराई कुंवर देपाल नैं परणासौं जद
काम आसी: चूडो १ घलो सौ बहुत
बेस आतील ल्यायौ थौ सु नजर
सुज गुदरायौ: सारी बात रो लेखो

कर नांखो दरायौ मोती नर गादी
ल्याया हुता तिकै रा रुपीया हजार 80
बेट लागा हुता सु लीया वधता था
सु पाछा दीया इव चटापटी कर ना
यक मुजरो कर बिदारी मांगी: नायक
बहीर हुवौ पछै दूसरै दिन हरदांन
रामदांन दरबार आया: मुजरौ कर
~~बधाई~~ कह्यौ महाराज बधाई दीजै
महाराज कुमर आयौ छै ताहरां राजा
कह्यौ औ कुरा छै पूछ्यौ: तद दर
बारी पुछायौ अती तो थे कुवा छौ
कासुं कहौ छौ ताहरां रयां कह्यौ
म्हे हरदांन रामदांन ओलगू छां कंवर
जी सुं मील आया छां ताहरां राजा
~~राजा~~ गद गद कंठ हुय कह्यौ औ
बापड़ा गहला हुय गया छै उवैनी
मलकबानजी रा चाकर था: पेटीयौ दे
लावौ दिलासा करा ताहरां हरदांन
कह्यौ महाराज म्हे गहला कोइ हुवा
न छां बात चौखर छै: म्हे मिल
वातां कर हावा समाचार ल्याया छां
सहनांणा ल्याया छां ताहरां साह
सुंदर दास अरज कीवी: महाराज औ
बोलै तौ सावचेत छै: ऊंचा बोला
य रूपजै दिलासा कर ताहरां ~~[illegible]~~
राजा कह्यौ वो नांखौ ताहरां ऊंचा
बोलाया: ताहरां हरदांन कह्यौ पातसा तैर

छै साह अभैपाल रे घरे छै हार
मैं बैठा नांवो मांडता था: म्हो दीठा
पछै आपके म्हानें बतलाया रुपीयौ एक
जीमवा री देय कह्यौ: थानें सै रात
आवज्या ताहरां म्हो जीमवा कर तुरत
गया थारे लेजाय एकंत बैस साही
बातां पुछी फुरमायौ केठी १ थांहरी
डबी १ नायकरी: हरडे एक सवासेर री सु
मरराी १ इकतुरवी लुदरा छै: इती
बात म्हारै मोहल मैं आलो छै:
ढोलीयै रै पगांतीयै तिकै आलै मैं
कल छै: उवै मैं छै अर आलै री
कुंची मोहरा सेकबरदार कन्है छै: ताहरां
मोहरा पता राजर खड़ौ थौ कह्यौ
म्हाराज बात चौरस कुंची तौ म्हारै
कन्है छै: ताहरां राजा कह्यौ क
तौ महल उवै दिन जड़ीयौ छौ
सु सु फेर खोलीयौ न छै: साह
पे जावौ मोहल खोल आलो
संभलो ताहरां मोहरा सेकबरदार
नैं साथै लेय कुंवर देपाल दे नैं
साथै लेय साह सुंदर दास मोहरा
दास महल मैं गया जाय आलो
खोलीयौ कल दूर कीवी: बसत चारूं
नीसरी सु हजूर राजा री ले
आया। राजा बातां देख बहुत खु
स्याल हुवौ: ताहरां राजा हरदांन

नैं पुछीयौ कान्हूं कलौ छै बलांरौ
ताहरौ हरदांन अरज कीवी फुरमायौ छै
बिणजारै री डबी तौ बिणजारै नुं
देज्या: थांरी ढंढी थे लेज्या हाडे
कारखाणे रावळ ज्या सुमररा देपालदे
नुं देज्या ताहरां कंढी तौ हरदांन नुं
दीवी बिणजारै नुं असवार दोय मे
लीया: सुजांणा नायक नैं ततांब नै
आवौ असवार चढ दौडीया: सु कोसां
२० बीसां नायक नैं जाय पोहेता कह्यौ
सुजोणा नायक ततांब राजा जी
बोलावै छै: जरूरो काम छै सुजांणा
चढ साथै हुवौ: अठै राजा हर
दांन री खिजमतां कराय सिरपाव दे
डेरै नुं हीरण दीवी डोढी बुलाय
पुछीयौ ताहरां ही सारी हकीकत मालम
कीवी: ताहरौ राजलोक अरज कराय
गुड वंराय जे नोबत खान्नो सक
कीजै: इयां ने सिरपाव बधाई देा
इजै ताहरौ राजा कहै साह सुंदर
दास थांहरी रासुं सलाह आवै
छै: ताहरां साह हाथ जोड़ अरज
कीनी जु आ बात तरे दार छै:
कारज तौ आपां आपतौं हाथ
कीयौ थौ सु औ सागी देख आथा
सु परा बात तौ चौकस सहनोतम
पवा मिलीमा परा डूंगी वात छै

च्यार ठावा मोरास मेल्हौ जिकै वव
बर ले आवै पछै काई बात राजा
बात मांन हरदोन नैं सीख दीबी डेरै
गया दूसरै दिन राजा फेर दरबार
आय बैठा साह कुंदन दास सारा
उमराव हजूरी दरबार आया हरदांन
रामदांन नैं हजूर बोलाया भीतर राज
लोक मुं कुंवर विचित्र री मां ताकीद
करी छै: मसलत कर रख्या छै जा
दमी मेलंवा उवालोरी गराीं तरह कर
रख्या छै: जितरै नायक सुजांणा पि
रा आय पागड़ो काढीयौ राजा रौ
मुजरौ कीयौ राजा बात हुती हरदांन
कही हुती सु सरब कही: डबी हुती
सु मंगाय हाथ दीबी ताहरां सुजां
णा डबी देख कह्यौ बात साची
छै: डबी रो तौ नाम बिना कुंवर
जी वै किराडी दूजौ नुं न थी:
फेर सुजांणा डोढी गयौ ताहरां भी
तर मुं कहायौ सु वे महाराज मुं
अरज करौ जो कुंवर ने ल्याव
णौ छै तौ आप पधारौ नहीं
तौ कोई आवै नहीं अर जो आ
पणी गमा साहूकार नुं लखाव हुवौ
तौ कहे दिसावर नुं काढ देवां: पछै
क्युं ही वहली नहीं इतरी बात सुणा
+ सुजांणा दरबार आयौ ताहरां राजा

फ़ुरमायौ लाल सुंदर दासजी आदमी तैया
र करौ: खरची दराय बिदा करौ ना
हरा लाल नायकनें कह्यौ: क्युं कुजांता
इली री तजबीज करां छां मांहरी स
लाल कांई आवै नारां. कुजोरा कह्यौ
वातां तौ मैं हरदान नैं भांत भांत
कर पुछी: सु वात तौ चौकस छै
कूड तौ मतां जांणौ अर भीतर ड्योढी
मनें बुलायौ छौ सु आ फ़ुरमाई
छै म्हाराज पधारणा री अरज करै
छै: नाहरां साह सुंदर दास कह्यौ त्या
रेवा वैं तौ म्हाराज पधारसी पंरां
मारगात बीजा च्यार हावा जाप चौकस
करौ ता पछै पधारसै दूजी बात
छै कदाच कुंही हुवै तौ पारकली
रा सिरीक जोर हंसली: अर कुंवरजी
री देह तौ आपां आपरां हाथां हुं
री छै: सारीरै उरा हारे मुलक भरी
यौ छै: तै रतरौ गोतो खपजै
छै नाहरां नायक कह्यौ नाहरी एक
अरज म्हारी छै म्हाराज री तैयारी
करौ: स्री द्वारकाजी री आज्ञा रो
मजकूर करौ पाछा जाय उतरसां
जो मन परचसां तौ कुंवरजी नुं
ले आसां नहीं तो आच्छा बीरच
परल आसां वात कहे आछर मतो
करौ नाहरो लाल सुंदर दास कही

कह्यौ आ बात बहुत आच्छी रही
ताहरां म्हाराज सुं पिरा सुंदरदास
आहीज अरज कर तैयारी कराई राज
लोक सुं पंरा अरज कराई ताहरां कुंवर
री मां अर मोहल कुंवर री दोने
तैयार कीया: सुंदर दास नुं देस
मुलक रौ काम सांपीयौ: ताहरां साह
अरज कीवी कुंवर देपाल दे नुं अठै
राखौ ज्युं जाबतौ हुवै मुलक रौ
ताहरां राजा फुरमायौ कुंवर बिना तौ
घडी १ रहूं तौ म्हारा प्राण नीसर
जावै: वासली मरम सारी पारें ल
या छै: ताहरां राजा तैयारी कर
असवार पांच सव सु बहीर हुवौ साथै
कामेरै पजवांन मालदास नुं लीयौ
चंदरा चोपदार: मोहता सेक बरदार
और ही कुंवर रा हजूरी सारा साथै
लीया: ओलगर हरदांन रामदांन गो
जदांन सिवदांन च्यारे भाई साथै
हुवा: ताहरां राजा सुओरा नायक
नै कह्यौ थे पंरा साथै हालौ
ताहरां नायक कही बोहत भलां ता
हरां नायक साथै आदमी था तिकां
नुं कह्यौ थे जाय बालद भेला
हूवौ सवालाख्वे नायक सुं सुम रो
कहिज्या मनें म्हाराज एके काम में
लीयौ छै सु मास एक लागसी

थे चिंता मत करज्या बल बातों लाब
चेती जुं बेचज्या। इतरी ही बीजें आ
पणीयां नुं लोख दीवी: आदमी दस एक
साथै शालीया खरच खजानो साथे लेय
राजा रुनकरण कूच कीयौ सु महीने डेढ
नें पाटण आया: सेहर रै नेडाल वडो
तलाब छै: तै ऊपर वडो बाग छै:
ते बागमें डेरो कर अर हरदोन राम
दोनां रामदोन नै बोलाय कह्यौ जावौ
खबर ल्यावौ। कहे छै ताहरां हरदां
न अरज कीवी सु आदमी दोय सात
बर साथै देवौ: ताहरां राजा बैणी
दास नें चोपदार चंदवा नै बोलाय
फुरमायौ के कुंवर खोल हरदोन
साथै जाय कुंवर नैं देख बात
कर आवौ ताहरां बेणीदास चंदवा
चोपदार हरदोन रामदोन ओलखू बो
नुं साथै ले बजारमें गया जाइ
हाट रै ओसरौ आच्छा पका खडा
राख देखालीया बेणीदास देखत सु
बों कहो छै तो [illegible] इवा ही है
चोरस बतलायां खबर जितरै ऊ
हाट रै नजीक जाय ऊभा ताहरां
देवीदास साम्हों दीठो देखत सुवो इलो
मुजरो कीयौ ताहरां साट अजैपाल
पुछीयौ के कुण छौ: ताहरां बैणी
दास कह्यौ बोपारी छां लेणो लैंणा

जामां घणां जितरै देवीदास कह्यौ काणुं
लेसो ताहरां देवीदास कह्यौ म्युं कपड़ो
म्युं दांत लेसां ताहरां देवीदास कह्यौ
बापजी जु हुकम करौ तौ पैली लायो
कपड़ो छै दांत छै सु देखालौ ताहरां
अजैपाल कह्यौ जावौ नत्त देखालौ
अर साह हरदत्त रै हुंडी रा रुपीया
रहै छै सु मांग लेआवज्यो। इव कहि
देवीदास उठीयौ: अै परा च्यारुं लायौ
हुवा इसरी हाटमैं जाय ऊभा रह्या:
ताहरां देवीदास साम्हों जोय मुलकीयौ:
कह्यौ देवीदास थे क्युं आया ताहरां
देवीदास जमीं हाथ लगाय सिलाम
कर नै पगां मैं सिर दीयौ: आप
ऊंचो उठाय छाती सुं भिड़ मिली
यौ: चंदरा चोपदार तसलीम करतौ
करतौ पगां मैं जाय माथौ दीयौ:
आप पूठ थापल ऊंचो कीयौ ओल
युवां मुजरो कीयौ ताहरां कह्यौ हर
दांन तनै इतरौ बरजीयो थौ परा
बरजीयो तौ लागौ नहीं जाय रह्यौ:
ताहरां हरदांन अरज कीवी म्हाराज
कुंवार इसी बात दीठां पछै कुंकर रहौ
आवै: अर फेरनी म्हेतो हदे थांहरै बी
दमरा चाकर घणां थां बिना होती
दसा हुई थी सु आप दीठी ही
थी सु म्हां देखोरी रासुं ताज सारै

ही री उसी दसा री मु हे जाय
कह्यौ ताहरां क्युं हेर दसा फिरी री:
हमें दसरा करसे ताहरां सारां रो रंग
फिरसी: इतरी वात हरदोन मुं कर पछै
बैरागीदास नुं बतलायौ ये आया बै
रागीदास रह्यौ न गयौ ताहरां बैरागीदा
स हाथ जोड अरज कीवी जो म्हाराज
कुंवर इसी खुस्याली री बात सुरागां
पछै क्युंकर रह्यौ जावै: आप मोटा
छौ विचार देखौ इतरी सुरग फेर दुखी
पौ छै: सारै साथ कुसल खेम छौ:
ताहरां इसी अरज कीवी आपरो आज
दसरा हुवौ आज सारा कुसल खेम
हुवा: आज मे बहुत ताजा हूवा
ताहरां फेर फुरमायौ म्हाराज राज
लोक साह सुंदर दास जी सारा ही
चाकर ~~सु~~ कुसल खेम छै ताहरां बै
रागीदास अरज कीवी आज आप
मिलीयां सारा री खुस्याल हुसे
ताहरां कुंवर फुरमायौ आज सुख
मिलसी: म्हाराज बांधुगढ बिराजे हुं
ओठै बैठौ ताहरां चंदरा चोप
दार अरज कीवी: जैसी बात सुना
छै म्हाराज पीछे बेसर रहै: या
बात तुम जांणी म्हाराज नें मजी
साहब देपालदे बहूजी साहब सख
ह्ररी खवास नामक सुजांसा सबही

हलां आये हैं: एक साहजी कुं नौकरी
देसके जावते है बगा उठां रख आ
ये हैं और तुम्हरा नौकर औसा बुरा
कंबरवत छै जो औसी बात जरा पा
छै बैठेगा इतरी चंदरा हकी तालवां क
लौ म्हाराज ही पधारीया छै: बैराणी
दास कलो आया छै आप कलौ
आच्छी नहीं बिचारी बोलत बे बिचारी
यौ काम कीयौ करे उतरीया छै
तालवां अवग हवेली मरवर रै नैकाल
तलाब छै तै पर बाग छै उबै
बाग माय खड़ा छ पा डेरा री
तजबीज करे पा: म्हानें तौ फरमा
यौ वो हरदान माथे जाय चौकस
कर आवौ: जमुं आया जावां तालवां
कुंवर हेलीयै कहो पोते हरदान रो
अपरखो नीपडीयौ तौ हुम छै त्रि
आरागां कुडी ही गप मारी कुसी
मु हरदान इसौ छै कूड बोलै हर
दान सिरखो साच पूजै हूं कही
भलौ मारास है न देखूं छुं परा
वे सताब जावौ: म्हाराज तुं मुजो
मालुम करज्या: अर डेरे बैठ्या बि
राज ज्या हमें हलीनें उले पाले नें
मतां आवजा देज्या घडी २ रात गयां
हुं आपके उठे आऊं छुं वो काह
ल मतां करज्या: इतरी काहि सीख

दीन्हीं आप पाछो होरे आमौ: अजैपाल
साह पुछीगौ कपडे धांत सौ सोदो बे
सीसौ: इसा कह्यौ क्युं मर तौ मेगा
प गया छै: कल इतरी कहि घरां
नैं उठीया बवानीदास हरदांन चंदरा राम
दान च्यार ही महाराज कन्है गया डेरै
भीतर बिराजै था तठवां इयां जाय
मुजरो कर बधाई दीवी राजा बोहत
हरख वंत हूवौ: राजा री रांणी
कुंवर री रांणी दोनेही कनात हे
कन्है आय बैठी: मुजांरा नायक
आयौ और सरब लोक बहुडायौ:
राजा साची हकीकत कही पूछी राम
दान हरदांन बवानीदास चंदरा म्हारा
मजकूर कीया: अर मालम की या सु
आ अरज कीवी छै: हमें कोई
आदमी इराजी ने मतां आवरा
देज्या: रात घडी २ गयां हुं आपै
औघ आऊं छुं: सु बातां सुंरा राजा
अर राज लोक सरब राजी हुवा छै:
खांवरौ धांवरौ रौ सारै साथ रौ इंतजा
म बवानीदास कीयौ छै: लोक
सारो हरखवंत खुस्याल हुवा फिरै
छै: साह अजैपाल देवीदास घरां जाय
जीमरा सीकीया: देवीदास सो नोहरे
जाय बैठौ: मनमें चिंता कर स्री
परमेस्वर री जी रो ध्यान करवा लागौ

ओटोत दीनताई कर अरज करणा लागौ
जो नारायण प्रतंग्या राखौ हमैं बाहर करौ
मौ: हुसी: भगवांन बांहरी राखी प्रतंग्या
हसी: बोहोत आजीज करणा दीनी: इतै
निमां स्याम हुई ताहरां नोहरै सुं
उठि घरमैं गयौ: मोहल मैं जाय
ली नुं कह्यौ प्रभात रौ हारां री
काम रहै अर लोकां सुं लेखो चौ
खो छै सु फरणा मेला नहीं
तेसुं दिन पांच सात रात री किसत
करणी लेखो पाडणौ काम अलूक
कह्यौ छै ताहरां वहू कह्यौ भली
वात छै: ताहरां देवीदास कह्यौ
ऊपरलै आलै मैं वही छै: लाल
गेतरी सु उतार देवौ: वही वहू उतार
हाथ दीवी वही आप लेय वहू
नै कह्यौ जावतो राखज्यो इतरो
कहि आप खिड़की रै मारग हुय
बाजार माहै कर नेकाल सहर सुं हुय
तलाव रौ मारग लीयौ: आगै राजा
रौ साथ फिरणा मारग साम्हों जो
य रह्यौ छै जितरै नजर आवतौ
पडीयौ महाराज सुं मालम चंदरा री
वी पधारै छै सारो लोक दरवाजै
बाज रै आय खडौ रहीयौ छै: नै
वीदास चंदणा दौड साम्हां आया:
आप मुजरो कीयौ बैरागी दास रै हाथ

ऊपर हाथ राखीयो दरवाजै आयो जस
नाई साम्हो आई तारां मुजरो कीयो
खमा खमा हुय रही छै: जितरै मुजां
रा तापक कुंवर देपालदे नें लेय पाट
लगायो: मुजांरा सुं बाथां घाल मिली
यो बडी बतलावेण कीवी: भीतर पधा
रीया महाराज नजरां पडीया: जठे सुं
कुंवर तसलीमां करतो करतो आजम
नै चोहडै गयो तारां राजा उठ
साम्हो आयो: कुंवर आय पगां में
सिर दीयो: राजा हाथ सुं उठाय
काठो छाती सुं लगायो: गद गद
कंठ हुय गयो कुंवर पिण गद गद
कंठ हुवो: बोलतो दोनांमेली कोई न
जीयो नही' हाथ खांच राजा गादी
रै कहै बैसाणीयो: मुंहडै ऊपर हाथ
फेरीयो रुमाल सुं आंख्या पुंछी: पछै
राजा आपरी आंख्यां पुंछी पछै रा
जा बैराग दास नें कह्यो मोहरां
हजार १ ल्यावो: सताब बैरागीदास मोह
रां ल्यायो राजा रुमालमें लेय कुंवर
ऊपर निछरावल कीवी: फेर बैरागीदास
पचास मोहरां रुमाल में घात नजर
कीवी: दस मोहरां निछरावल की री
मुजांरा नायक सिरपेच १ पगें रो कुंवर
जी री पाघ ऊपर ~~हाथ~~ बांधीयो मो
हरां १० निछरावल कीवी: पछै तारां

लोक जथा परत निजर निछरावल कीवी:
निछरावल रौ बजो ढिग मोहरां रौ हूवौ:
रुपीयां रौ हुवौ: ताहरां कुंवर फुरमायौ
बैरागीदास जो ऊंचा रखावो । ताहरां राजा
फुरमायौ निछरावल छै हरदांन नामदान नुं
दखावौ ताहरां हरदान मुजरो कर सरब
गेली कर कोली मांड लीवी गांठ बां
धी: इव वात करतां नाजर हरीराम
आय कुंवर जी सुं मुजरौ कीयौ क
दीमी शुरो नाजर पौ कुंवर उठि गी
लीयौ: बडो अदब दीयौ इतै मैं
नाजर हरीराम कह्यौ लोक सरब वो
हुऔ! ताहरां सारा ही उठि ऊभा हुवा:
मसालची पीलचोलां जगाय: दुमारवां री
पथा हर नेसरीया इतरै कुंवर री
मां आई कुंवर उठ सिलांम करनौ
करतौ नां रे पगे आय लागौ मां
ऊंचो उठाय कुंवर रौ माथो छाती
सौं ले काढो चिपायौ मुंहडै ऊपर
हाथ फेरीयौ: दोनै गद गद कंठ हुवा
इमा नजर आवै आंसौ काठ री पुत
ली खडी छै: खडा हीज रह्या
ताहरां राजा उठि हाथ झाल उरा
खांच गादी ननौं आंसा बैसाणी
या: कुंवर री आंख्यां रोसाी जी
लुटी मुंहडै ऊपर हाथ फेरै छै:
वडारणा लाम्हौं जोयो ताहरां वडारण

मोहरां री थेली हाथ दीवी कुंवर रै
सीर ऊपर निछरावल कर न नाजर
हरीराम रै हाथ दीवी पछै बडारणां
खवासां घाम तारां री निछरावल
कीवी सु पिरा निछरावल सु हरीराम
लेजाय डोढी हरदांन नैं बोलाय दीयां
वार्ता कर रांणी जी थाय सामहैं री
हो: थाय खने मेवैरी रकेबी थी सु
ओंरा म्हाराज रै कुंवरजी आगै मेल्ही
म्हाराज फुरमायौ पांडे नें कहौ थाल ल्या
वै: जितरै पांडे थाल ले डोढी आय
दसत कीवी: भीतर सुं बडारंरा जाय
थाल ले आई बाजोट आगै मेल्ह
थाल मेलहीयौ झारी ल्याय हाथ ऊ
जला कराया म्हाराज फुरमायौ: निचत
हूं ही आव जीम लाटरां कुंवर अरज
कीवी म्हाराज हूं तौ जीमीयौ छुं
आवै सुं नहीं ताहरां राजा जी कह्यौ
जिकुं भावै सु जीम पछा आजतौ
जीमीयां म्हारौ जीव सोरहौ हुवौ:
कुंवर पिरा हाथ ऊजलो कर थाल कर
नहै जाय बैठौ: देपाल दे पिरा बै
ठौ तीन्हे जणां जीमै छै: बातां हुवै
छै रांणी जी देख देख फुषकारा
नाखै छै: लूंरा मंगाय बडारंरा
सुं कह्यौ सिगलां ही सरदारां ऊपर
लूंरा कर बडारणा लूंरा कीयौ कुंवर

राजाजी नैं देखतां परस्यां बातां छ्वछै
छै: जीम चलू कीयौ मेवौ थौ रकेबी मैं
सु सारां अरोगी थी: पान अरोगीया
अतर री खसबोय लगाई: जितरै रां
णीजी बोलीया श्री ठाकुरजी म्हाराज कुं
वरनैं कुसले खेमैं ले घरां जावां
तारां २० हजार ब्राह्मणां नैं मोहन भोग
भोजन करावां: हजार १ गऊवां दान करां
तारां राजा कनकरथ फुरमायौ कुसले
घरां जाय हजार ५० ब्राह्मणां नैं भो
जन करावां गायां हजार २ करा क
पीयो ४) दरखतां करां इतरै कहतां
थाय नजारैरा सगलां ही आपरै तक
त सारु ब्राह्मण भोजन जावां
रौ संकल्प भरीयौ राज लोक बौ
हडीयौ फेर हजूरी बैरागी दास मुजांरा
दरबार आया तारां कनकरथ फुर
मायौ बैरागीदास ५० हजार ब्राह्मणां रो सं
कलप भरीयौ छै: सु याद राखे
तारां पूछीयौ किसे कारज तारां
राजा कह्यौ कुंवर नैं ले कुसले घरां
जावां तौ: तारां बैरागीदास मुजां
रा नायक और ही सारां ही आप
आपरी सक्त सं साक ~~आप आप~~
ब्राह्मणां रौ संकल्प भरीयौ: श्री जी
रै फेर हरीरांम नाजर आयौ कह्यौ
कुंवरजी भीतर पधारौ नाजी तुम्हारी बोलात

ताहरां राजाजी फुरमायौ जावौ भीतर
जावौ ताहरां कुंवर उठीया: कव्हे गयौ
घडी १ आडी ऊभी: सु वातां कीवी
इतरै मां कह्यौ जावौ सुय रहौ ताहरां
कुंवर मुजरौ कर आपरी जनांनी
डोढी गयौ: डोढी भीतर बडतां सु
दांसी मुजरौ करती आई कुंवर आगै
सदामद हाथ झाल बतलावता थुं बत
लाई ताथ झाल ढोलीयै ऊपर जाय
बैठा ढोलीयै नीचीयां जुं बोली १ मो
हरां री काढ निछरावल कीवी: मुज
रो कर हेठे बैठा जितरै कुंवर कह्यौ
स्रीराम म्हाराज री हजूर जाय अरज
कीवी छेकरसौं भीतर देपालदे नैं बोला
वै छै: ताहरां देपालदे नैं राजा
हुकम कीयौ जावौ भीतर ताहरां दे
पालदे भीतर गयौ ताहरां कुंवर कउरहो
ले गुंटडै ऊपर हाथ फेर बडारणा नैं
कह्यौ म्हारै पाघ ऊपर सिरपेच है
सु खोलाय आपरै हाथ सुं देपा
लदे रै सिर बाध्यौ वतलायौ अर
विदा दीवी बडारणा नैं कह्यौ: कुंवरा
नरमादी मोती मंगाया था सु ल्याया
ताहरां नायक कह्यौ मोती ओतो म्हा
राज नैं दीया था: म्हाराज भीतर
थांटरे मोहल नैं दीया छै सु मोती
भीतर छै ताहरां बडारणा हाथ ओड

भीतर पुगायौ: भीतर सुं कहायौ मोती
ताजर छै अर साचौ छै पेई में छै
परभात हाजर करीस: ताहरां नायक नें
कह्यौ थे डेरै जावौ प्रेमीदास नुं
कह्यौ परभात अर मोती लेय भीतर
आप क्वाप देज्या: इतरी कहि सीख
दीवी आप भीतर आया: ढोली थे
विराज वडारेशा चोकरी सारां ही
दिलासा कीधी: वातां पुछी जितरै
हरदोन ओलखर च्यारे भाई साज वाज
लेय आय मुजरौ कीयौ: ख्याल दोय
च्यार गाया कुंवर राजी हुवौ: निपट
राकल रांगी कीवी थी सु वडारंणा रै
हाथ देय हरदोन नुं दिराई सीख
दीवी: बंणारशां नें सीख दीवी खि
जमत गार दोय खडी रही कुव
रांगी री हाथ झाल ऊंचा ढोली
थे लीया कुंवर री मुजरौ कर
ढोलीयै बैठी: ढोलीया कनलावंशा कर
पौढ रह्या घडी २ रौ आंतरको रह्यौ
ताहरां उठीयौ कुंवर बाग में आयौ बैठी
दास नें बुलाय कह्यौ म्हाराज नें मु
जरो मालम करज्या सुवारे देर उने
वखत आऊं छुं इमें में दिसी
आंरो आदमी कोई मतां आवज्या: अर
कागद ताह लेंहर दाल सामों च्यार
पांच अमरावां रा नांव लीया और ही

एवालीयां रा नांव लीया इतरा साम्हां कागद
लिख राखज्या कासीद बरागाय जोडी करज्या:
ज्युं आवंत जुना बतीर करां: इतरा कहे
बहीर हुवा बागरै बारठां नाई बैणीदास
चंदरा साथै हुवा: ऊठै ऊभा खास
कुंवर बैणीदास नुं फरमायौ मोती चौत
छै लीयांरी नाच सताब करावज्या: अर
चूडो १ सताब ले पहिरावज्या इतरी कही
ताहरां बेणीदास अरज कीनी नाच री
तौ रात नायकजी कह्यौ थे ताकीद
कर बणाईस: ~~क~~ जुरा बहीर हुवा
घरां आयौ: लोटो लेय दिसा
जाय हाथ पग ऊजला कर: दांतण
कर संपाड़ो कर नीत करम कर कपड़ा
पहिर श्री ठाकुर द्वारै गयौ पहिलो
एक भेट कर श्री ठाकुरां री बहुत
अस्तुत कीवी: दीन हुय करुणा कर
गद गद कंठ हुय कह्यौ: महाराजाधिराज
प्रतिग्यां आपरी राखी रहिसी: थे दीना
नाथ छौ हूं दीन छुं थां गज री
प्रतंग्या राखी राजा अंब री राखी
प्रतंग्या राखी ध्रुव री प्रतंग्या राखी
प्रल्हाद री प्रतंग्या राखी द्रोपदी री
प्रतंग्या राखी सुग्रीव री सहाय करी
बारंबार प्रथी री सहाय करी और
ही अनेक भक्तां री सहाय उध्धार की
यौ: ज्युं चाकर बहुत सांकडै में छै

आपसुं सलाय हुई इसी भांत अरज
कर घरां जाय जीमरा जीम बाजार गयो.
काम कीयौ फेर संध्या पड़ी ताहरां घरां
आय जीमरा जीमीयो. मोहल में गयौ
तो बैठी थी तैसुं बतळावरा कर
घड़ी पलक बैस कह्यौ गढी छै सु
देवौ वली बगलमें लेय खिड़की रै
मारग उतर फेर तलाब रै मारग व
हीर हुवौ तलाव जाय पहुंतौ सामें
आदमी कसनाई थुजवो सारां दीयौ
बाजारी हस्कर डेरै में स्याय बैठौ. कांम
काज करवा लागौ बैसीदास नुं उथीयौ
कागदां दिलीयो करि गयौ थौ. तिके
कागद लिखीया ताहरां बैसीदास कह्यौ तै
पार छै: जोजदांन मंगाय कागद काढ
हाजर कीया! बाचीया फेर बैसीदास
नुं कुरमायौ साहजी नुं इव लिख
मुलकरौ जाबतौ करज्या थांरां वीघ
वाी मजबूती राखज्या बीजा ही समाचार
सारा लिखावरा लागा ताहरां राजा
कह्यौ बेटा कागदां किसी गरज सर
सी बे तमें घरां तालो काम सारो
बिगड़ै छै: कुंवर कह्यौ बेगा ही
हालसां जेतरै कासीदां रो जोड़ी मंगाय
कागद लिखाय बतीर खिया राजा आ
पने दासकते • सास कुंदनदास साम्हो
परवांनौ लिख्यो थौ: तैमें कुंवर सुं मिली

मां री खुस्याली लीखी: कासीद वहीर
कीयौ जितरै बैरागीदास अरज कीवी म्हारा
ज सलांमत आप मोती अर रंगील पोसाख
जे दिन बखारी ~~खी~~ की सु हमें पोसा
ख कीजै श्री ठाकुरजी महाराज रै सराम
हुवां राजा अरज मांनी सताब मोती
पलिरीया: रंगील पोसाख पेहरी जितरै पां
डे थाल ले आयौ तीने सरदार भेला
आरोगीया चलू कर पान अरोगीया: अतर
लगायौ उठि मां रै मुजरै गयौ आगै
जाय बैठौ मां वेवो आपरै हाथ सुं
खुवायौ: घडी १ बैठौ जितरै मां कह्यौ
जावो पौढ़ रहौ ताहरां मुजरो कर आप
रै राज लोक गयौ रांणी उठ सु
जरौ कीयौ: अमल पांणी हाजर कर
मुनहार कीवी: ताहरां कुंवर कह्यौ उठै
खबरां जासां ताहरां करसां हरां पार को
देस छै इतरी कहि नाथ दीनी चूडो
धीयौ वातां कीवी ओलगुवां मुजरो की
यौ: आधीरात गई ताहरां ओलगुवां सुं
सीख दीवी पौढ़ रह्या कांकरखो घडी
२ रौ रह्यौ ताहरां उठि आपरै डेरै सुं
वहीर हुवौ: सदामद नीतकरम करतौ
सु कर श्री ठाकुर द्वारै गयौ: भेट
कर असतुत करी दरसण करी सहस
नाम रौ पाठ सनमुख ठाकुरजी रै
कीयौ: पाठ कर बोहत डंडोत परणाम कीयौ:

भीतर पुचायौ: भीतर सुं कहायौ मोती
ताजर छै अर साचौ छै पेई में छै
परभात हाजर करीस: तारवां नायक नें
कह्यौ थे डेरै जावौ बेरागीदास नुं
कहौ परभात औ मोती लेय भीतर
आप हुवाय देज्या: बतरी करि सीख
दीवी आप भीतर आया: ढोली पै
विराज वडारंणा चोकरी सारां ही
दिलासा दीधी: वातां पूछी जिनरै
हरदोत ओलगर च्यारे भाई साज वाज
लेय आय मुजरौ कीयौ: ख्याल दोय
च्यार गाया कुंवर राजी हुवौ: निध
रावल रांणी कीवी थी पु वडारंणा रै
हाथ देय हरदोल नुं दिराई सीख
दीवी: बंधारणां वें सीख दीनी खि
जमत गार कोय खडी रही कुंव
रांराणी री हाथ झाल जेर्चा ढोली
पै लीया कुंवराणी मुजरौ कर
ढोलीपै बैठी: ढोलीया बतलावंणा कर
पौढ रह्या घडी २ री झांकर को रह्यौ
तारो ऊगीयौ कुंवर बाग में आयौ बैरागी
दास नें बुलाय कह्यौ महाराज नें मु
जरो मालम करज्या सुवारे डेरा ऊपरे
बखत आऊं छुं इमें में दिली
वांरो आदमी कोई मतां आवज्या: अर
कागद साह सुंदर दास सामो च्या
पांच अमरावां रा नांव लीया और ही

हमालीयां रा नांव लीया इतरा साम्हां आय
लिख वारवज्या कासीद बरागाय जोडी करज्या:
ज्युं आवंत सुना वलीद वरां: इतरा कहि
बहीर हुवा बागरै बारसौ गई बैरागीदास
चेंदरा सार्यो हुवा: उठै ऊभा रावल
कुंवर बैरागीदास नुं फरमायौ मोती नीर
दौ लीयां री नाथ सताबा करावज्या: अर
चूडो १ सताब ले पहिरावज्या इतरी कही
ताहरां बैरागीदास अरज कीनी नाथ री
नौ रात नाथजी कह्यौ पर्यो नाबीद
कर बगाईला: कर सुगा वलीद हुवा
घरां आयौ: लाटो लोग दिसा
जाय हाथ पग ऊजला कर: दांतण
कर संपाड़ो कर नीत करम कर कपड़ा
पहिर श्री ठाकुर द्वारै गयौ पईलो
एक भेट कर श्री ठाकुरां री बहुत
अस्तुत कीवी: दीन हुय करुणा कर
गद गद कंठ हुय कह्यौ: महाराजाधिराज
प्रतिग्यां आपरी राखी रहिसी: थे दीना
नाथ छौ हूं दीन छुं थां गज री
प्रतंग्या राखी राजा अंब री खरी
प्रतंग्या राखी ध्रुव री प्रतंग्या राखी
प्रहलाद री प्रतंग्या राखी द्रोपदी री
प्रतंग्या राखी सुग्रीव री सहाय करी
बारंबार प्रथी री सहाय करी और
ही अनेक भक्तां री सहाय उधार की
धौ: ज्युं चाकर बहुत सांकडै में छै

आई ताहवां भड़का लड़का करणा लागी
साह्व नुं बुलावणा लागी केरा घर
केरा चाकर केरा आदमी हेलो मेल
रा लीमोड़ा घों: म्हारी कैली गिणात
छै ताहवां साह्व बुधीमो आग वहू
तूं इव स्युं करै: ताहवां वहू कह्यौ
आज आठदिन हुवा घांहवै बेटै नुं
मालो लेरनो लोकां सुं करतै नें पर
भात तौ चोटै मैं पचै अर रात
च्यार पहर लेरनो लोकासुं पाड़ै सु
तौ भली हुई पर यौ तलूकाउो करै
छै: परा इतरा चाकर गुमास्ता छै
तिराभाहां एक आदमी साथै दीया

परदरसरा दे घरां आयौ ज[illegible]दरा जीम
बाजार गयौ काम काज कीयौ: गांवो
लेखो लेणों देणों सब संभावण ला
गौ निमास्यांम घरां आयौ केर उणा
हीज तरह उठै गयौ कांकारके घरां
आवै इबा भांत दिन सात हूवा: ताहरां
सातवैं च्यारे ही भी तिका पुष्कीयौ जां
चो लेखो कीयौ खिनां ताहरां देवी
दास कह्यौ दिन पांचसात केर लागसी:
इब काहे उठौ बहीर हूवौ ताहरां ही
दीठौ औ एकलोठी जावै छै कना को
ई चाकर गुमास्तो सायौ छै: कनोरवै
बैस दीठौ: तौ एकलोहीज गयौ रात
सै तौ आ सोय रही परभात घरसें

करौ: औ हेकलो च्यार पोहर रात
पचे फिरै पचे नेट तौ धांटरौ बे
टौ छै कोई औगरा हुवी तौ घेटीज
दुख पासौ: जितरै लाट अजै पाल
सायौ ताहरां न्हं साहरी बहू कल्यौ
मालजी पोटरै री बडी भोलप अंधे
र छै: देवीदास रातरौ लेखौ करता
हेकलौ जावै लारै आदमी री कोई
नहीं: जु कितराटेक बेटा छै इतरी
भोलप राखौ: ताहरां माल अजै
पाल कल्यौ म्हारै तौ कहीसुं लेखो
नहीं अलूकाड दांम एक री नहीं
ताम्हों श्री ठाकुरजी रै परताप कर
सवै पचास लोकों रनवें लैरा छै:
जु पुमासतां हलते छै नांवो पर
आते आय देवीदास रखवैं मेजावै छै:
बीजो कोई लेखो नहीं ये बहू नुं
कह्यौ थारै घर री चरागी छै आठे
कर राख: म्हारे लेखो चोखो कोई
छै नहीं इतरी सुणात जुवां देवी
दास री बहू नुं घरारौ री चुरा
चुरा लागी: फेर संझ्या पडी ताहरां
देवीदास री बहू बिचारी जो आज
बरसीस तौ म्हारै हाथ पग न आ
ती आज जोंवरा देजे अर माचै
आदमी एक चागें तै लगाइ देई त
देखवां कहै जावै छै पको पग लेय

पछै कहीस: जितरै देवीदास मोहलमें
आयो आडी ऊभी ही सुं बतलावंणा
कर पछी ले खिड़की खोल बाहर
नीसरीयो: ताहरां सालरै बैठै री बहु
चोकरी आपरी हुती तीयै नुं बुलाई:
कह्यौ हे हरमाला एक काम कर तनें
परभात घोडो पहराइस: छानी खबर
ल्याईस तौ: ताहरां हरमाला कह्यौ
बाईजी हुंतौ थांहरी हीज चाकर छुं:
जीतरी थे फुरमासौ तितरी चाकरी
करीस: कह्यौ तौ कुंवरजी हमां बाहर
नीसरीया खबर कर कठै जावै छै: केसुं
प्यार छै पानी रहे खराब गलां
करे: चोकस खबर ले आये ताहरां
हरमाला वांसै हुई आगै देवीदास
चालीयो जावै छै वांसे हरमाला
जावै छै: सहर लोप नीकाल हुवा
कुंवर तलाव री पाल जाय चढीयां:
आगै साम्हौं हजूरी पासवांरा गला
लगी आया मुजरौ कीयौ कुंवरजी
कुंवरजी करवा लागा: कठै वागौरा
चाक संभाया केहीरे लाप ऊपर
हाथ दीयो बाग भीतर पधारीया
हरमाला हेकर ली तौ ऊभी जितै भीतर
कुंवर बोलीयौ घोडो नुं घास नीरौ
पंताली देवौ ~~न~~ दूरखां पगां मैं
~~नी~~ लीद ज्युं री पड़ी आदमी को कला

जनांवर छौ ताहरां हरमाला जाणीयौ
छै तौ माणी मानवी बीजौ तौ फैल
कोई नहीं: ताहरां आघी गई सु बाग
रै दरवाजै तौ आदमी बैठा सु बड
लगै नहीं सु बागरै पारवती बड १
पौ तै बड ऊपर हरमाला चढी उठो
एक बडरौ बागरै भीतर जाय कुंडीया
छौ तै डालै ऊपर जाय बैठी देखै
छै कुंवर राजा रै मुंहडै आगै बैठो
छै: देसरी वातां करै छै खरची
तजवीज करै छै: बतावै छै जिनरै
राजा कुरमायौ बेटा सताबी करौ घरां
हालो हालो वांसे राज काज बिगडै
छै: ताहरां कुंवर कह्यौ हालसां जि
तरै पांडे पाल ले आयौ: तीन्हें सिर
दार भेला कीया चलू कीयौ पाव
अरोगीया: अतर लगायौ जितरै नाजर
हरीराम आय मुजरौ कीयौ: कुंवरजी
भीतर माजी बोलावै छै कुंवर उठीयौ
मां कन्है गयौ मुजरौ कीयौ: मां उवा
रणां लीयां घाय बडाररणां उवाररणां
लीयां: मां कह्यौ बेटा म्हाराज उतावं
ल करै छै सताबी करौ हालौ: घरां
नैं ताहरां कुंवर कह्यौ वेगाही हालसां
आडी ऊभी वातां कर उठीयौ आपरै
जनानै गयौ ओलगुवां आंरा मुजरौ
कीयौ: राग रंग हूवौ हेलीया खेलीया

पछै कहीस: जितरै देवीदास मोहलमें
आयौ आडी ऊभी ही सुं बतलावणा
कर वही ले खिड़की खोल बाहर
नीसरीयौ: ताहरां साहरै बेटै री बहू
छोकरी आपरी हुती तीयै नुं बुलाई:
कह्यौ हे हरमाला एक काम कर तनै
परभात चूड़ो पहरा देस: छानी खबर
ल्याईस तौ: ताहरां हरमाला कह्यौ
बाई जी हुंतौ थांहरी तीज चाकर छुं:
जीतरी थे फुरमासौ तिणमांह चाकरी
करीस: कह्यौ तौ कुंवरजी हणां बार
नीसरीया खबर कर कठै जावै छै: कैसे
प्यार छै छानी रहै खराब मता
करे: नीकल खबर ले आये ताहरां
हरमाला वांसै हुई आगै देवीदास
चालीयौ जावै छै वांसे हरमाला
जावै छै: सहर लोप नीकल हुवा
कुंवर तलाव री पाल जाय चढीया:
आगै साम्हौ हजूरी पासवांरा मता
लची आया मुजरौ कीयौ कुंवरजी
कुंवरजी करवा लागा: कही बागरा
चाक संभाया केही रे ताण ऊपर
हाथ दीयो बाग भीतर पधारीया
हरमाल देकरली तौ ऊभी जितै भीतर
कुंवर बोलीयौ घोड़ो नुं घास नीरो
पंताली देवौ ~~न~~ दूर खवां पगो मैं
~~री~~ लीद ज्युं री पड़ी आदमी को कना

जनांवर छौ तारां हरमाला जाणीयौ
छै तौ मानी मानवी बीजौ तौ फैल
कोई नहीं: तारां आघी गई सु बाग
रै दरवाजै तौ आदमी बैठा सु बड
लगै नहीं सु बागरै पारवती बड १
यौ तै बड ऊपर हरमाला चढी डलो
एक बडरौ बागरै भीतर जाय कुंडीयौ
छौ तै डाले ऊपर जाय बैठी देखै
छै कुंवर राजा रै मुंहडै आडौ बैठो
छै: देहरी वातां करै छै खरची
तजवीज करै छै: बतावै छै जिनरै
राजा फुरमायौ बेटा ललाबो करौ घरां
हालो हालो वांसे राज काज बिगडै
छै: तारवां कुंवर कह्यौ हाललां जि
तरै बांडे थाल ले आयौ: तीबहै पिर
दार भेला जीमीया चलू कीयौ पाव
अरोगीया: अतर लगायौ जितरै नाजर
हरीराम आय मुजरौ कीयौ: कुंवरजी
भीतर मांजी बोलावै छै कुंवर उठीयौ
मां कन्है गयौ मुजरौ कीयौ: मां उवा
रवां लीयां धाय बडारणां उवारणां
लीयां: मां कह्यौ बेटा म्हाराज उतावल
न करै छै ललाबो करौ हालौ: घरां
नें तारवां कुंवर कह्यौ बेगाही हालसां
आडी ऊभी वातां कर उठीयौ आपरै
जनानै गयौ ओलगुवां आंगा मुजरौ
कीयौ: राग रंग हुवौ हेलीया खेलीया

पछै कहीस: जितरै देवीदास मोहलमें
आयो आडी ऊभी ही सुं बतलावंता
कर गही ले खिड़की खोल बाहर
नीसरीयो: ताहरां साहरै बेटै री बहू
चोकरी आपरी हुती तीयै नुं बुलाई:
कह्यौ हे हरमाला एक काम कर तनैं
परभात चूडो पहरा ईस: छानी खबर
लाईस तौ: ताहरां हरमाला कह्यौ
बाईजी हुंतो थांहरी टीज चाकर छुं:
जीतरी थे फुरमासौ तिता मांहे चाकरी
करीस: कह्यौ तौ कुंवरजी हरां बाहर
नीसरीया खबर कर कठै जावै छै: केसे
प्यार छै थानी रहे तरवाव गता
करे: नोकर खबर ले आये ताहरां
हरमाला वांसै हुई आगै देवीदास
चालीयो जावै छै वांसे हरमाला
जावै छै: सहर लोप नेकल हुवा
कुंवर तलाव री पाल जाय चढीयाँ:
आगै साम्हो हजूरी पासवांरा गता
लाची आया मुजरो कीयौ कुंवरजी
कुंवरजी करवा लागा: कही बागँरा
चाक संभाया केही रे ताला ऊपर
हाथ दीयो बाग भीतर पधारीया
हरमाला देकरही तौ ऊबी जितै भीतर
कुंवर बोलीयो घोड़ो नुं घास नीरो
पंताली देवौ ~~म~~ दूरखां पगां मैं
~~री~~ लीद ज्युं री पड़ी आदमी को क्ना

जनांवर छौ ताहरां हरमाला जाणीयौ
छै तौ गाभी मानवी बीजौ तौ फैल
कोई नहीं: ताहरां आघी गई सु बाग
रै दरवाजै तौ आदमी बैठा सु वड
लगै नहीं सु बागरै पारवती बड १
यौ तै बड ऊपर हरमाला चढी उलो
एक बडरौ बागरै भीतर जाय झुकीयौ
छौ तै डालै ऊपर जाय बैठी देखै
छै कुंवर राजा रै मुंहडै आगै बैठो
छै: देलरी वातां करै छै खरचरी
तजवीज करै छै: बतावै छै जिनरै
राजा फुरमायौ बेटा ततावी करौ थारां
लालरै हालो वांसे राज काज बिगडै
छै: ताहरां कुंवर कह्यौ हालसां जि
तरै पांडे चाल ले आयौ: तीन्है तिर
दार भेला कीया चलू कीयौ पाव
अरोगीया: अतर लगायौ जितरै नाजर
हरीराम आय मुजरौ कीयौ: कुंवरजी
भीतर माजी बोलावै छै कुंवर उठीयौ
मां कन्है गयौ मुजरौ कीयौ: मां उवा
रणां लीयां थाय बडाररां उवाररणां
लीयां: मां कह्यौ बेटा म्हाराज उतावल
न करै छै ततावी करौ हालौ: थारां
नै ताहरां कुंवर कह्यौ वेगाही हालसां
आडी ऊभी बातां कर उठीयौ आपरै
जनांनै गयौ ओलगुवां आंरा मुजरौ
कीयौ: राग रंग हूवौ हेलीया खेलीया

पौढीया: हरमाला सादा नमासा
दीठा ओंकार कै कुंवर उठीयौ जिसे हर
माला पराा बड सुं उतर मारग
पड़ी कुंवर पिराा दरवाजै सुं निकल
घरां आय जोरी ले दिसा डायौ
हरमाला मोहलमें आय हकीकत सरब
दीठी थी सु बहु नुं कही: बहु सुणा
कल्यौ बात मांहे नहीं लुगाई तौ
दूजी मत हुली पवरा मां बाप बीजा
कना सुं करसी: खराय खराय पुछो
तारवां हरमाला कल्यौ पे जावौ देखौ उन
राचे वासै बाग है वड छै ते
वड चढ देखज्या डालो एक बाग
में जाय ऊकीयौ छै: उवै डाहलै
चढज्या सरब दीसषी: ताहरां बहू
कल्यौ तूं हरमाल देख आव बाग
में डेरो ज्युं रो ज्युं है कना: कोई
दल छिद्र न छै ताहरां हरमाला
कलस लेय तलाब गई जाय
वरे तजबीज सरब दीठी: देख
पाछी आय कल्यो बाई जी छै
तौ मानवी बडौ डेरौ छै: घोड़ा
छै रथ छै कहू तौ राज छै:
सोने रूपे रा चडोदार छै इसी बात
सुणा बहू पेट में राखी: जे निजाती
आंखयां देख न छै हकीस नेट
गोली री बात छै: देवीदास बाजार

वौ काम काज कर घरां संझ्यां आय
जीमणा जीम मोहल गयौ घडी पलक
बतना वेरा कर बही ले वहीर हुवौ
वांसै बहू पिरा गहणौ कपड़ौ उतार
सादो वेस पहर वांसै चाली: कुंवर
नै तौ सदाम द लोक साम्हें आय मु
जरौ कर भीतर लेता ज्युं लेगया:
आ ~~जाय~~ जाय वड ऊपर चढी बै
डाहलौ ऊपर बैठी: सारी वातां सु
णी तमासो दीठौ जांहरां डोढी कुंवर
आपरी भीतर गयौ रांणी साम्हीं आ
य मुजरौ कीयौ: सु जिके दिन रां
णी पोसाख सरब आसावरी कीधी
थी: औहोठी परमेसर रौ दीयौ
रुप थौ: इसौ ही पोसाखां रौ
चांदणौ थौ सु एक जोत हुय गई:
कुंवर रांणी रै हाथ ऊपर हाथ
दीयां भीतर पधारीयौ: सु आ बड
रै डाहलै ऊपर बैठी थी ज्युं री ज्युं
विह्वल हुय गई: कुंवर तौ पौढ
रह्यौ आ बड सुं उतर घरे गई
खिड़की खोल मोहल में जाय सुती
सु नींद तौ काई पड़ी नहीं कांकरडो
हुवौ तारै बेटैरी बहू घरमें आय
काम काज करण लागी: जितरै देवीदास
पीरा घरमें आयौ लोटी ले लोय
दिसा नुं गयौ साह अजैपाल घरमें

आयौ तालवां देवीदास री बहू साहब
नुं कहण लागी इसौ सो टेर उप
परो रूप्रांन छै देख आई थी सु वात
सरब कही साहबी बहू साहब नुं सरब
कह्यौ: साहब सुण फेर अखराम पुछीयौ
ताहरां देवीदास री बहू कह्यौ वात चौक
सी छै: थासुं जतन हुवै सु सताब
करौ ताहरां साहब कह्यौ थे बहू हुं
[illegible] बरजज्या कहा जाहर मतां करौ,
आज हूं जाय देख ठीक कर आऊं:
जितरै सताव मतां करौ इम कहि
साहब अजै पहल दिसा नैं गयौ: देवी
दास [illegible] दांतण कर सांपड़ो कर नी
तकरम कर श्री ठाकुर द्वारे गयौ
दरसण कर भेट कीनी: परदख्यणां
देय डंडोत कर सहस्र नांम श्री
जुगल किशोर रौ पाठ कर करुणा
कर अरज करण लागौ: खांनां जाद
थी [illegible] सतंगमां आपरी राखी रहि
सी: इसी भांत सुं बहुत आजीजी
कर दूहौ कह्यौ: ॥ तुम हो दीना नाथ
मैं अनाथ कब होरदु: ग्रहीयौ मेरौ
हाथ हाथी वारे हाथ सुं ॥१॥ इसी
करुणा कर गद गद कंठ हुवौ ताहनां
श्री भागोत रौ श्लोक थौ सु कह्यौ।
॥श्लोक॥ ग्राहीमां देव देवे सगयातो सरणां
गता: दावतंदुख दैतेन तोमेदेवं गदाराजं॥१॥

इसा भांत फळसरा कर घरां आय रो
दी नीम बाजार रौ काम काज करवा
लागौ: बाप पिंडरा जिम्मेदारी नजर मैं
राखवा लागौ: देखां कोई हमारकी आवै
मिलै सु लार लार लांगो फिरीयां पण
बाजार मैं तौ नजर कोई आयौ नहीं
सेंझ्या पड़ी घरां गया अलीया रात
घड़ी २ गई मोहल मैं जाय घड़ी पलक
बातां कर. बठी लेय बहीर हुवौ: सु
बाग गयौ सार ही पूछै लागौ
जगौ कुंवर नैं तौ सदामद साम्हां
आय लेजावता सुं लेगया: साहबड
ऊपर चाढ उनै डाहलै ऊपर जाय
बैठौ: तमासो देखै छै कुंवर राजा
रै मुजरै जाय बैठौ: सारा हवाली
मुवाली मुजरौ कर कर बैसे छै:
सारां नैं आप आपरै हवालै रौ
जाब पूछै छै: ख्वस्न रौ मारग
पूछै छै जितरै नायक सुजांरा आ
यौ: मुजरौ कीयौ कुंवर हाथ काल
रवनै ले बैठौ: जितरै सुजांरा अरज
कीनी कुंवरजी म्हाराज उमरीद करै
छै घरां पधारी वांहीं काम की
जड़ै छै: इतरै म्हाराज पिंडरा करवा
यौ बेरा अठै काळं: रांम तौ सरब
हेके घावे पिंड ऊपर पौ र वोसांसौ
हुय अठै आयौ ना पछै कूड साच

आयौ तालवां देवीदास री बहू सासू
नुं कहरा लागी इसौ सो टेर उप
परो रूप्रांन छै देख आई थी सु वात
सख कही साहरी बहू सात नुं सख
कह्यौ: सात सुरा फेर अखराम पुछीयौ
ताहरां देवीदास री बहू कह्यौ वात चौक
स छै: थासुं जतन हुवै सु सलाह
करौ ताहरां सात कह्यौ थे बहू नुं
—— बरजज्या कठा जातर मतां करौ,
आज हूं जाय देख ठीक कर आऊं:
जितरै सलवाय मतां करौ हुव कलि
सात अजै पहल दिसा नै गयौ: देवी
दास ~~थ~~ दांतण कर सांपड़ो कर नी
तकरम कर श्री ठाकुर द्वारे गयौ
दरसण कर भेट कीनी: परदख णां
देय डंडोत कर सहस नांम श्री
जुगल किशोर रौ पाठ कर करुणा
कर अरज करण लागौ: खांनां जाद
री ~~सत~~ सतेग्यां आपरी राखी रहि
सी: इसी भांत सुं बहुत आजीजी
कर दूहौ कह्यौ: ॥ तुम हो दीना नाथ
मैं अनाथ कब कोरडु: ग्रहीयौ मेरो
हाथ छाडी वोरे हाथ सुं ।१। इसी
करणा कर गद गद कंठ हुवौ ताहरां
श्री भागोत रौ श्लोक थौ सु कह्यौ।
॥श्लोक॥ त्राहीमां देव देवे सभयातो सरणां
गता: पावतं दुष्ट दैतेन तोमेदेवं गदाग्रजं ॥१॥

इरा भांत कलराग कर घरां आय रो
टी जीम बाजार रौ काम काज करणा
लागौ: बाप पिरा जिम्मेदारी नजर मैं
राखणा लागौ: देखां कोई हमारखी आवै
मिलै सु लार लार लोगो फिरीयां पण
बाजार मैं तौ नजर कोई आयौ नहीं
सेझ्या पडी घरां गया जीमीया रात
घडी २ गई मोहल मैं जाय घडी पलक
बातां कर बती लेय बहीर हुवौ: सु
बाग गयौ सार ही पूछै लागौ
जणौ कुंवर नैं तौ सदा मह सामहां
आस लेजावता सुं लेगया: साह बड
ऊपर चाढ उनै डाहलै ऊपर जाय
बैठा: तमासो देखै छै कुंवर ताजा
पै मुजरै जाय बैठौ: सारा हवाली
मुवाली मुजरौ कर कर बैसे छै:
सारां नैं आप आपरै हवालै रो
जाब पूछै छै: खबर रौ मारग
पूछै छै जितरै नायक सुजांणा आ
यौ: मुजरौ कीयौ कुंवर हाथ झाल
राखने ले बैठो: जितरै सुजांणा अरज
कीनी कुंवरजी महाराज उ गारीद करै
छै घरां पधारौ वांहौ काम बी
जडै छै: इतरै महाराज पिंरा करमा
यौ बेरा औठै काले: रांम तौ सरब
हेके घावे पिंड ऊपर घौ रू बोसांगौ
हुय औठै आयौ ता पछै कूड ताच

आयौ तातवां देवीदास री बहू सासू
नुं कहरा लागी इसौ सो टेर उप
परो रूपांन छै देख आई थी सु वात
सरब कही ताहरी बहू सास नुं सरब
कह्यौ: सास सुरा फेर अरसराम पुछीयौ
ताहरां देवीदास री बहू कह्यौ वात चौक
स छै: थासुं जतन हुवै सु सलाव
करौ ताहरां सास कह्यौ पे बहू नुं
[illegible] बरजज्या कहा जातर मतां करौ,
आज हूं जाय देख ठीक कर आऊं:
जितरै सलवाव मतां करौ इव कलि
साह अजैपाल दिसा नैं गयौ: देवी
दास ~~थ~~ दांतरा कर सांपड़ो कर नी
तकरम कर श्री ठाकुर द्वारे गयौ
दरसरा कर भेट कीनी: परदख रा
देय डंडोत कर सहस नांम श्री
जुगल किशोर रौ पाठ कर करुरा
कर अरज करसा लागौ: खांनां जाद
री ~~[illegible]~~ सतेंग्मां आपरी राखी रहि
सी: इसी भांत सुं बहुत आजीजी
कर दूहौ कह्यौ: ॥ तुम हो दीना नाथ
मैं अनाथ कब छोरहु: ग्रहीयौ मेरौ
हाथ हाजी वारे हाथ सुं ।।१।। इसी
करसा कर गद गद कंठ हुवौ ताहरां
श्री भागोत रौ श्लोक थौ सु कह्यौ।
॥श्लोक॥ ग्राहीमां देव देवे सभयार्तो सरसां
गता: दावतंदुष्ट दैतेन तोमेदेवं गदायजं ॥१॥

इणा भांत कळपणा कर घरां आय ने
री नीम बाजार रौ काम काज करणा
लागौ: बाप पिता जिम्मेदारी नजर मैं
राखणा लागौ: देखां कोई हमारड़ी आवै
मिलै सु लार लार लांजो फिरीयां पण
बाजारमैं तौ नजर कोई आयौ नहीं
सेत्र्या पड़ी घरां गया अमीमा रात
घड़ी २ गई मोहल मैं जाय घड़ी पलक
बातां कर बठी लेय बटीर डूबौ: सु
बाग गयौ साट ही पूछै लागौ
जमौ कुंवर नैं तौ सदामद साम्हां
आय लेजावता त्युं लेगया: साट वड
ऊपर चाढ उनै डाहलै ऊपर जाय
बैठौ: तमासो देखै छै कुंवर राजा
रै मुजरै जाय बैठौ: सारा हवाली
मुवाली मुजरौ कर कर बैसे छै:
सारां नैं आप आपरै हवालै री
जाब पूछै छै: खस्व रौ मारग
पूछै छै जितरै नायक सुजांणा आ
यौ: मुजरौ कीयौ कुंवर हाथ झाल
राखै ले बैठौ: जितरै सुजांणा अरज
कीनी कुंवरजी म्हाराज उमरौद करै
छै घरां पधारौ वांहै काम बी
जाड़ै छै: इतरै म्हाराज पिंरा करणा
यौ बेरा अर कांजे: कांम तौ सरब
हेके घाटे पिंड ऊपर घौ रू वोसांणौ
हुय और आयौ ना पछै कुड साच

कर दीन काढीया: हमार तैयारी करौ
लोक पिरा सारो खाचो छै: नायकरो
तांडो परा पडीयौ छै खरच लागै
छै: नेर वोपारी मांगास छै माल
खराब हुवै छै बालदरो काम ही
बेरा थे जासौं छौ: हेके दुजांरा
पै पिंड ऊपर छै तैहुं नायक रौ
जीव छै तैमें साचै ले आया छां
तयारी करावां च्यां जीतरा जीम चढां
तासां कुंवर अरज कीवी हालसां जितरै
थाल आयौ थाल अरोगीया चलू
कीयौ: खसबोय लगाय कुंवर री मां
रो बोलावो आयौ: उठै जाया तहरां
मां पिरा आलीज करी हालरा रो
सारो लोक आतर छै: म्हाराज निपट
काटल करै छै: थारो मुलाहजौ
कर दबाय न रहै छै: तैहुं सुवारै
तौ चालीयां सरली उठै ही कुंवर आ
ही करी हालसां इतरी कहि मुजरो कर
उठीयौ आपरी डोढी गयौ सदानन्द
नाम्हौं आवतां सहेली ज्युं ताम्हां
आय मुजरो कर भीतर लेगया: उठैटी
इवाहीज भांत मजकूर हुवो मु साह
अजैपाल आपरा कानो मु सुनीयौ:
साह मनमें बिचारै छै जु आज परभात
कुसले छाप आवै तौ फेर च्यारुं बाहर
कोइ निसरणा देऊं नहीं फेर मनमें आ

तिवारै छै जु हवांलीज बडसुं उतर
हल भाल घरे ले जाऊं फेर आ नै
वारै छै जो कदाच मैं जाय हाथ
भालीयौ तौ हमाकं तौ हुंतौ एकलौ
चुं औ घरां छै मनें मार रमै नै
ले परा जातौ: तां बारतीयां बुध
कर हेरतां तौ चुपकर जावणौं परभात
कुसले घरां आवै तौ वात कैई देव
दुरा मंनाय इछनायां रपक्त बड छे
ऊतर डेरे नुं नचीर हुवौ: पना
साहरा पग घरां नें वहे नहीं ताह
रा सत खोला हुय गया घरां आय
सूतौ परा नींद काई पड़ी नहीं तड़का
तोतुलां निठ परभात कीयौ जितरै
देवीदास ही आयौ: जोसी लोरी खि
लपाई ताहरां साह कह्यौ ऊभोरहि
हूं परा सायै आईस वातां करणी
छै: दोनें साथे दिसा गया पाछे घरां
आय दांतण कर सांपड़ो कर श्री
ठाकुर द्वारै जुं तैयार हुवौ: ताहरां
साह कह्यौ हूं परा सायै हालीस
दरसण कीयां घरां दिन हुवा छै:
ताहरां दोनां भेला हुय ठाकुर द्वारे
गया: दरसण कीयौ भेटकी परदखणा
दे देवीदास पाठ कीयौ सहस्र नांम
रौ पाठ कर बहुत ककरण कीवी:
गरीबी प्रणांम डंडोत कर घरां नें

वहीर हुवौ: सोरी जीम बाजार जमा
साह हाटमैं जाय बैठा: देवीदास नैं
भीतर बैसारीयौ अजैपाल हाट रै बार
रौ बैठौ: नावौ मंडायौ छै अर उठै
बागमैं राजा कह्यौ नेर कुंवर आवै
आपां इन्हें जाहरां आपां वठां सु इव
तौ कुंवर हालै नहीं आपां टालो
ज्युं जाय ले आवां: ताहरां राजा
कनकरथ घोडे असवार हुय आदमी २० टेक
साथे लेय नेरणीदास चंदणा चोपदार
नैं साथे लेय बाजार आया साह
री हाट रै बारणौ आंगणा खडा रह्या:
राजा कुंवर साम्हों दीठौ कुंवर राजा सां
म्हों देरप मुजरौ कीयौ ताहरां राजा
कह्यौ बेरा उठे घरां हालौ साथ सारो
तैयार हुवौ छै कुच री तैयारी क
राय आयां छां: ताहरां साह अजै
पाल बोलीयौ कैह्यौ बेटौ कैवौ
दूं बाप कैनें कहै छै: ईसा चोचा
क्युं करै छै ताहरां राजा कह्यौ
छै: साहजी पारका बेय बेटा रहै नहीं
मेहुं रिसाणौ होय बार च्यार दीन
थांरै घरे आयौ तौ गुन्हौ कोई पडी
यौ नहीं बे भला मोरगास घा तौ च्यार
दिन राखीयौ: हमैं राजी माईत पहुंता
म्युंकर छोडसी: बे घणी करसौ तौ
बांधी ल्याय लेसौ: पराइ बेटौ तौ

आवै नहीं तांहरां साह कह्यौ: बेटो म्हारो
. . . . इयै री दाई छै
चाय छै म्हारै कबीलै रा सारा जांणौ
छै: वेला लीवी जिको बांभरा जांणौ
छै: सगाई कीवी परणाय। सु सासरला सारा
जांणौ छै: छोटै सुं मोटो हुवौ सु
सारा लोक जांणौ छै: तांहरां राजा क
ह्यौ इतरा लोक सरब म्हांरै ही छै: जिकेपण
सारा जांणौ छै: म्हारै साथै पण इण
री नां चाय रमावण वाली चोकरी
सारा छै ~~साह~~ साहजी ये जोर मतां करौ:
पारको बेटो सुंदर राहिली तांहरां साहु
कार कूकीयौ: उतावलौ बोलीयौ खोटै
छै बोलीयौ ओच तौ राजा राज छै
म्हारै बेटै रा धणी हुवै छै: तांहरां
बाजार रौ लोक भेलो हुवौ इतरै
कोटवाल आय खडौ र्हौ: और पंण
राजा रा मोंसाहब सैहरमैं बाजार आ
या था जिके पंण ओण भेला हु
वा वातां सुणी सु तांहरां बेटो सा
हांही दीनौ थौ नानैं सुं मोटो
हुयौ अर तजारसुं कह्यौ ठाकुरां थें
नै तौ म्हे भली तरै जाणां छां
म्हारै हाथां मैं नानै सुं मोटो हुवो
तांहरां राजा कह्यौ थांहरै सहर री
छै थे क्रियां न जाणौ: पण म्हारै
सहर म्हो ले हालौ जो छतीस पोण

ओलखवे कनां नहीं म्हारै पीरा हाथां
मैं औ नानेसुं मोटो हुवौ छै: फेर
इयै कंवर नैं ही पूछ्यौ आपके ठीक
पड़ली ताहरां कोटवाल पुछीयौ क्युं हो
मोटीयार औ ठाकुर कासुं कहै छै:
ताहरां कंवर कह्यौ औ साचा छै बे
हो इलांरोहीज छुं जितरै साह कह्यौ
कपूत कासुं कहै छै कैरो बेटो छै:
ताहरां फेर कह्यौ बेटो थांहरौ छुं:
ताहरां कोटवाल कह्यौ मोटयार इं
इयुं बिचलीयौ क्युं बोलै छै: तैं
काईं भांग पीवी कन बावलौ हुवौ:
ताहरां देवीदास कह्यौ न तौ भांग
पीवी न हुं गहलौ हुवौ: वात छै
ज्युं छै थानें मांहित नहीं म्हारा
दोनुं बाप छै: ताहरां कोटवाल चौं
कीयौ औ नपावस म्हासुं न हुवै
राजा जी कन्है जावौ तब तपावस ही
कांहरौ बेटौ म्हारो बे सारा ही
जाणौ: फेर झगड़ै मैं ल्यातौ छौ
फेर राजा कह्यौ: हो पंचा पे पंच
कहावौ छौ लोकायतमैं कहै छै पंचा
मैं परमेसर छै तेहुं पे इसी वात
क्युं कहौ छौ बेटो म्हारौ छै: बारी
पा इसकेल कहै छै ताहरां साह
अजैपाल कह्यौ हाल राजा कन्है तद
राजा जी कह्यौ हालौ प्रिथी रौ राजा

छै: परमेसर रौ अंस छै तपावस देख क
रती: तारखां पांचेकी कुंवर नैं ताचले राजा
जी री हजूर सुं हालीया: सहर रौ
लोक सारौ साथै छै: कोटवाल रौ
इतरी कैम राजाजी री हजूरमें गयौ:
जाय राजा सुं मालम कीवी इयै तरै
रौ बाजार मैं एक कजीयौ छै: ताहरां
राजा कह्यौ इयां मैं साचो कूडो कुण
ताहरां कोटवाल कह्यौ बेटौ तौ सह
रौ छै रोजीनां म्हे बाजारमैं देखता
रजपूत कहै म्हारौ ताहरां मैं साटरै बे
टै नुं पुछीयौ मु उकटै म्हारा दोनुं
बाप छै पछै गम नहीं कैरो बेटौ
छै हुंतौ इतरी छोडर हजूर आयौ:
नेठ हजूर हीज आसी जितरै आवतान
जर पडीया उबै आवै। राजा नै
परा चींत्या ऊपनी जितरै राजा को
कोटवाल नुं पुछीयौ रजपूत कुण छै
कठै रौ छै कुण जातीयौ छै: काहे नौं
व छै ताहरां कोटवाल ~~अज~~ अरजकीवी
रतरौ तौ पुछीयौ कोई नहीं परा छै
तौ कोई मोटौ बडौ सिरदार छै:
ताहरै तौ राजा दीसै छै पछै फेर
म्हाराज ही देखसोहीज जितरै दोढी आ
याहीज दरबारी मालम कीनी साह अजै
पाल अर रजपूत आपसमें झगड
ं दोढी आया छै: राजा फुरमायौ

दोदी आयरा यौ पूछ्यौ रजपूत कुणा छै;
कासुं जात छौ कठै रहौ छौ: ताहरां
दरबारी पूछीयौ ठाकुरां थे कठै रहौ: कासुं
थांहरी जात छै: ताहरां राजा कनक
रथ कह्यौ कासुं पूछ छतीस रजपूत
छां परदेसी छां हमार तौ अगडाक
छां थांहरै राजा नै क्रम सारौ तपा
नस कर ताहरां दरबारी कह्यौ थे आगा
ऊं आया छौ रयावस तौ करसोलीज
पंरा हुं हवालदार छुं थांरौ नांव जात
अ गांव रौ नाम लेरे मालम करो
करूं ताहरां राजा कह्यौ जातरौ रजपूत
छुं कनकरथ म्हारो नाम छै बांध्यु रहुं
छुं ताहरां दरबारी कह्यौ बांधवगढ रहौ
छौ कन दूजो कोई बांध्यु गांव छै
ताहरां कह्यौ बांधवगढ रहो छां ताहरां
दरबारी कह्यौ कनकरथ तौ बांधवगढ रौ
राजा छै थांरै मुलकमैं राजारै नांम
उमरावां रौ ही नाम हुवै छै ताहरां
राजा कह्यौ राजा तौ राजा री जायगा
हुसी हुं तौ अगडाऊं छुं इतरै चंदन
चोपदार कह्यौ दरबारी जी तुम भी दरबार
के चाकर हौ मोरा राज सेवते हौ
इतनी ही जाम न पड़ी छै राजा कनक
रथ बांधवगढ का धणी है: दरबारी
तसलीम कर दुरतहीज दौड़ीयौ कह्यौ
महाराज बांधवगढ रौ धणी राजा कनकरथ

छै: इतरी सुणात पौरण वारणा रो राजा
ब्रहदभांरा सोलंखी उठीयौ पोळी मैं सामां
आयौ राजा कनकरथ पिणा चोडै सु
उतर मिलीयौ: भीतर पधारीया गादी ऊपर
हाथ झाल बैसाणरा लागा ताहरां राजा
कनक रथ कहीं पेह विराजौ म्हे आगा
हू घां म्हारौ झगड़ौ चुकावौ ना पछै
म्हे बैठसां राजा ब्रहद भांरा बडी मनुहारां
कीयां पणा राजा कनकरथ तौ साहरै
कनै रतड़ौ रह्यौ: राजा दोनुंवां री
हकीकत पुछी: सु आगौ झगड़ता था त्युं
हीज झगड़ीया! तीश काई पड़ै नहीं: ताहरां
राजा ब्रहद बांरा राजा कनकरथ नें कह्यौ
म्हाराजा रौ बेटौ रिसाणौ हुवै जिको कठीं
परदेस जाय कमाय खावै बारणीयै बौ बेटौ
कोई हुवै नहीं' म्हाराजा जी सोच हुवै
ज्युं सोच कहौ: तपावस हुसी देवीदास रै
तौ एकबीज बात दोनवां नैं बाप कहै:
राजा ब्रदभांरा जुरा विचारीयौ जो कहै
राजा पंरा झूठौ नहीं' बारणीयै रै बेटनुं
बेटौ कोइ कवै नहीं' चाकर नै तौ चाकर
कहै: का कोई बीजो ठहराव कर परा कोई
टेक तौ करणा छै इतरी विचार राजा कन
करथ नें फेर पुछीयौ एकांत लेय जो सा
च कहौ जेट सोच करणा तपावस हु
सी: ताहरां राजा कनकरथ कह्यौ महाराज जी
पै हारै मोरो कीयौ परणामौ राज काज

संभलायो सोलै बरसां रौ हुवौ: मुलक सब
जाणै छै सेरपुर रै राजा वीरभद्र रै परणा
यौ उवां रै मुलक रा सारा ओलखै छै:
कंवर रै बेरौ आयौ रा पछै नोरा अ
भागलारा तलाव खुलरा गोठ करणा बगा
गयौ छो: उठै तलाब मैं बडीयौ छो
सु डूब गयौ बाहर कोई नीसरीयौ नहीं
पण छै औ चोकस पाछला अैनांरा
सैनांरा सरब करला राजा मुंना इच्छय
लाग रह्यौ: राजा फेर साह नैं कह्यौ
थारै किसी तरह साच कह तद साह
कह्यौ म्हाराज इयै नैं तो सारो सहर
जाणै छै: दाई धाय भराणवरा वालो
सुव सासरौ सारा अठै छै: कदे एक
कोसही बाहर काढीयौ नहीं नां कदे इयै
म्हारो हुकम नाखवीयौ: एक पलक ही
मैंसुं आघौ न रह्यौ: हेक दिन घड़ी
२ मैंसुं आघो रह्यौ छौ ठाकुर द्वारै
गयौ थौ म्हारो कहणौ पण लोपा
यौ थौ: दूजो कदे मैंसु आघो रह्यौ
नहीं: कदे अ कह्यौ कीयौ नहीं तहरां
राजा कह्यौ रे मोरीयार ए दोनें आदे
कहै छै: तहरां देवीदास कहै म्हाराज
दोनें साच्या छै! बात छै ज्युं छै राजा
बदमोसरा ऊंचो लीयौ नीचो लीयौ: सारां
ही नें पण बात हेकलीज कहै तहरां रा
जा बटद — भांवरा कह्यौ देवीदास औ

तपावस म्हांसुं न हुवै: तैसुं दुखी हैदुं
गम छै: ज्युं छै त्युं हीज कल तनैं घारै
कुल री आंरा छै: का स्री लखमी नारायण
राजी री दुहाई छै: ताहरां देवीदास कह्यौ
मनैं ठाकुर दुहाई मतां देवौ हूं कोई कहूं
नहीं ताहरां राजा कहै तूं क्युं न कहैता
हवां इयै कह्यौ हूं कहीस ताहरां म्हारी
देह छूटसी: ताहरां औ दोनें ही दुखी हु
वा: हूं पैंसारा जाईस ताहरां राजा कह्यौ
जो थारी देह छूटसी तौ थै वातै हुंई देह
छाडीस: कारी लेय सोंस घातीयौ ब्रहदभंवरा
सोंस घातीयौ ताहरां राजा कमकरथ पण
सोंस घातीयौ ताह अजैपाल सोंस घा
तीयौ मु आदमी पांच सब मरसा दौ
नेम घातीयौ ताहरां साहदै बैठै कह्यौ
तौ महाराज गंगाजी ऊपर चालौ:
उठै हीज कहीस ताहरां साहा उठ वही
हूवा: मु जाय पहुंता गंगा सिनांन सौ
साजे कहै छै: रातै मैं स्री भगवान
लखमी जी नें फुरमायौ लखमीजी देखौ पल
क दरियाव रौ तमासो नखिउं छै ताहरां
लखमी जी अरज कीवी सारो घांहरो तमा
सो छै: पण एक बडो इचरज आवै छै
जो थे तौ हेके कीडी ही रै बदलै चांनणौ
छौ अर औ तौ पांच सौ मोनस सौ नि
मित तीयार हुवा छै तंब्रलख मर्यौ छै
आ देह ठाकुरजी प्रत छै अर इयां रै वांसै

भले आपरी चारसव बीजा भरती ब्राह्मणां
~~[illegible]~~ गउंवां रौ भाणौ संकलप भरी
यौ छै सु परा कोई देवै नहीं तैरो परा
प्रायचीत थानें लागसी आगै तौ इसौ
प्रतंग्या ~~कर~~ कहे प्यालीयौ नहीं: गवै
कै तौ टल तौ दीसै न छै थां करता
सरब आसांरां छै: कृपा करी छौ थांहरौ
भक्त थौ तैरी स्याय न करसौ तौ भक्त
वत्सल पणौ रौ थांहरौ विरद छै सु
~~लाज~~ लाजसी अर बे फुरमावौ छौ आ
जो मनें सोच प्यारौ छै सु औ
दोनें साचा कगडे छै साच ऊपर भली
ताहरां साच पियारौ कहै रह्यौ इसी भांत
श्री लक्ष्मी री भांत भांत श्री भगवान सुं अरज
करै छै अर अठै राजा ब्रह्दभांरा हजार
दोय ब्राह्मणां गायां हजार दोय हाथी घोडां
रो संकलप भर्यौ: आपरी देह रौ संकलप
भरीयौ राजा कनकरथ ब्राह्मणां हजार २०००
दो गायां हजार ४००० चार सो चउती घोडा
हाथी अन कपडै रौ आपरी देह रौ सं
कलप भरीयौ इसै मैं देवीदास आपरी देह
रौ संकलप भरणा लागौ ताहरां राजा
ब्रह्दभांरा कह्यौ सुं ही तौ तुंही पुन्य
कर ताहरां देवीदास कह्यौ किसै घर रौ
पुन्य करुं सार तौ निराजी हुवै राजारै घर
रौ पुन्य करुं तौ राजा बिराजी हुवै कैरौ
पुन्य करा कवावै भगवान निमित ही पुन्य

भगवांन करावै: उवांरी इछ्यां छै सु तुसों हमारो
इछ्या सुं कासुं हुवै: जो रसौ विणट करायौ
सु आतीज इछ्या सो हमैं देवीदास कनराम रा
वचन कहै श्री ठाकुरजी रौ उतीररा चांदरा
लगायौ श्री तुलसी दल माथै मेल्हीयौ: वात
पलक दरियावरी वांसै हुई सु तरब रही:
अर कह्यौ हमैं श्री भगवांन करै सु सही जही
कटप अबोलो रह्यौ जितरै ऊपर सुं आवा
ज हुई सुदरसण चक्र ऊपर सुं पडीयौ:
देवीदास ऊपर तातरो दोय हुय गया अेक
सारखा दीसै तातवां राजा अलदभोरा भगवांन
नैं निमस्कार कर टेक तौ राजा कनकरथ
रै हाथ दीयौ: रक साह रै हाथ
दीयौ: वडो हरब हुवौ राजा कनकरथ
नैं राजा अलदभोरा कह्यौ कंवर ने म्हारी
कंवरी दीन्ही छै सु विहाकर चालज्यौ: सु
सुलधीयां नैं कह डेरै जाबतो करायौ:
राजा आपरै डेरै आयौ साह आपरे
घरे आयौ बेरायत करी: राजा कनक
रथ बालारा सलदा सरब जीमाया: मोहर
9 जौदान री दीन्ही: राजा लगन जोय
अहद भांडा आपरी बेटी कुंवर नुं परणाई:
भगत पांच तबा सात कर दीया: दायजो
घणौं राजावां जोग दे विदा कीया: सु
पछै राजा कनकरथ कूच कर पहलै डेरै
सु बधाईदार मेल्हीया फेर डेरां डेरां सुं
कासीद मेल्हीया: बांधवगढ जाय बधाई

दीवी नगर सारो हरखवंत हुवौ: राजा कन
फरण बांधव गढ सुं कोस च्यार ऊपरां
वाग छो ऊठै वाग जाय उतरीया:
सारो देस अमराव साहूकार सामां आ
या मिजर निछरावल हुई: वडो हरख हु
वौ सायदारां बाजतां राजा असवार
हुवौ आगौ सहर रां सारां बाजार पर
सारा ही सिरागारीया: गुवाड गुवाड ऊपर
घर घर ऊपर लुगायां मंगल गावै वधा
वा गावै छै हाथी ऊपर रुपीयां मोहरां री
थेली छै: सु मुठी भर भर उछालै छै
घणौ हरख सुं मोहलां दाखल हुवा छै:
परभात साह कुंवर दास नुं फुरमायौ जित
रा ब्राह्मण छै देस में तिकां नैं भो
जन करावौ: अर दखणां देवौ ब्राह्मण
जीमै छै: गउवां दखणां दीजै छै रंग
रली कीजै छै: स्त्री अैसा भगवांन
पलक दरिआव छै:॥ इति स्री पलक
दरिआवरी वात संपूर्ण ॥ शुभं भवतु:॥ स्री
र स्तु: ॥ कल्याणमस्तु: ॥